रूस में इस्लाम और राज्य: चेचन्या के विशेष संदर्भ में, 1991-2015

मास्टर ऑफ़ फिलासफी

की उपाधि के लिए

लघु शोध-प्रबन्ध जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में प्रस्तुत

प्रस्तुतकर्ता

राज कुमार मौर्य

निरीक्षणकर्ता

प्रो. फूल बदन

रुसी एवं मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली - 110067

2016

JAWAHARL JEHRU UNIVERSITY
Centre for Ru... and Central Asian Studies
School of International Studies
New Delhi-110067

Tel.: (O) +91-11-2670 4365
Fax: (+91) - 11-2674 1586, 2586
Email: crcasjnu@gmail.com

Date- 26/07/2016

DECLARATION

I declare that the dissertation entitled "रूस में इस्लाम और राज्य: चेचन्या के विशेष संदर्भ में, 1991-2015" submitted by me for the award of the degree of **Master of Philosophy** of Jawaharlal Nehru University is my own work. The dissertation has not been submitted for any other degree of this University or any other university.

Rajkumarmaurya
RAJ KUMAR MAURYA

CERTIFICATE

We recommend that this dissertation be placed before the examiners for evaluation.

skp
PROF. SANJAY KUMAR PANDAY
Chairperson, CRCAS/SIS

Bada
PROF. PHOOL BADAN
Supervisor

समर्पण

पूज्य माता-पिता के चरणों में सादर समर्पित

आभार

इस लघु शोध प्रबन्ध के पूर्ण होने पर मै, मेरे सुपरवाइजर प्रो. फूल बदन का कृतज्ञतापूर्ण आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके दिशा निर्देशन में यह लघु शोध प्रबन्ध लिखा गया, तथा सम्पूर्ण कार्यावधि में जिनका लगातार प्रोत्साहन मुझे प्राप्त होता रहा | आपके बहुमूल्य सुझावों, निर्देशन से यह कठिन कार्य आसानी से पूरा कर सका, आपका बहुत-बहुत आभार |

रुसी एवं मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र, जे. न. यू. के प्रो. संजय कुमार पाण्डेय, प्रो. अजय पटनायक, प्रो. अर्चना उपाध्याय, प्रो. अनुराधा चिनाय, प्रो. अरुण मोहंती, डॉ. नलिनी महापात्रा, डॉ. ताहिर असगर, डॉ. के. बी. उषा, डॉ. राजन कुमार, डॉ. प्रीती दास, डॉ. अमिताभ सिंह, डॉ. राज यादव के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ |

मै, मेरे सहपाठियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अनवरत साथ और सहयोग की वजह से मेरा यह कार्य बहुत आसान हो गया और मै यह कार्य पूरा कर सका |

जे. न. यू. केंद्रीय लाइब्रेरी तथा इन्डियन काउन्सिल ऑफ़ वर्ल्ड अफेयर्स लाइब्रेरी के स्टाफ का आभार, जिनका इस दौरान सतत सहयोग मिलता रहा |

जे. न. यू. में मेरे सभी मित्रों का, विशेषकर अमितेश कुमार वर्मा और विजय सिंह का आभार इस दौरान जिनका अमूल्य सहयोग प्राप्त हो सका |

राज कुमार मौर्य

विषय-सूची

भूमिका v

CHAPTER – 1 1-31

प्रस्तावना: सिद्धांत का ढ़ाचा और साहित्य समीक्षा

CHAPTER – 2 32-55

जार और सोवियत शासनकाल में राज्य और इस्लाम

CHAPTER – 3 56-80

1991 के पश्चात् रूस की इस्लाम के प्रति नीति

CHAPTER – 4 81-111

1991 के उपरान्त चेचन्या में इस्लाम

CHAPTER – 5 112-122

निष्कर्ष

भूमिका

रुसी राज्य के साथ इस्लाम का सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन रहा है | उत्तरी काकेशस में इस्लाम का प्रवेश दागिस्तान के रास्ते हुआ और शीघ्र ही इस्लाम उत्तरी काकेशस में प्रचलित हो गया | वर्तमान समय में रूस के चेचन्या प्रान्त में इस्लामिक चरमपंथ और आतंकवाद रूस की स्थिरता और अखंडता के लिए खतरा बना हुआ है और इस समस्या के समाधान के लिए रूस द्वारा किये गए अब तक के प्रयास उपयुक्त साबित नहीं हुए है | इसी कारण से चेचन्या में इस्लाम अध्ययन का एक प्रमुख विषय बना हुआ है |

रूस के जार शासकों के द्वारा चेचन्या को अपने नियंत्रण में किया गया | रूस के जारशाही शासकों के द्वारा चेचन्या को अपने अधीन बनाये रखने के लिए इस्लाम का कभी दमन किया गया और कभी इस्लाम के प्रति नरमी बरती गई | चेचन्या के धार्मिक वर्ग ने इस क्षेत्र को रूस से आजाद कराने के लिए इस्लाम के आधार पर चेचेन लोगों को संगठित करने का प्रयास किया | जिससे चेचन्या में इस्लाम रुसी अधिपत्य के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में उभरा |

सोवियत शासन के द्वारा नास्तिकता की नीति को अपनाया गया और अन्य धर्मों के साथ-साथ इस्लाम का भी दमन किया | स्टालिन के द्वारा धर्मविरोधी अभियान की शुरुवात की गई | द्वीतीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजी जर्मनी की सहायता के आरोप में चेचेनों का बड़े पैमाने पर स्थानान्तरण किया गया | ख्रुश्चेव के द्वारा चेचनों को वापस अपने घरों को लौटकर आने की इजाजत दे दी गई और धार्मिक सहिष्णुता का बर्ताव किया गया, किन्तु वास्तविकता में इस्लाम के साथ अब भी भेदभाव किया जाता रहा |

सोवियत संघ के विखंडन के उपरांत चेचन्या भी रूस से अपनी आजादी चाहता था किन्तु रूस के द्वारा ऐसा नहीं किया गया | इसकी प्रतिक्रियास्वरूप चेचन्या के लोगों ने दुदायेव के नेतृत्व में चेचन्या को रूस से अलग घोषित कर दिया | प्रथम रूस-चेचेन युद्ध के दौरान ही बाहरी शक्तियाँ चेचन्या में सक्रिय होने लगी जिनमें वहाबी-सलाफी प्रमुख थे | दुसरे रूस-चेचेन युद्ध के दौरान पुतिन रूस के राष्ट्रपति थे इन्होंने चेचेन अलगावादियों के प्रति सख्त नीतियों को अपनाया |

वर्त्तमान समय में चेचन्या में परम्परागत सूफीवाद और वहाबवाद के बीच संघर्ष की स्थिति चल रही है | इसके अतरिक्त चेचन्या अल-कायदा और इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकवादी संगठनों के लिए आकर्षण का विषय बना हुआ है | रूस के द्वारा वर्तमान समय में चेचन्या में इस्लाम के प्रति सहयोग और प्रतिरोध दोनों ही नीतियों का पालन किया जा रहा है |

CHAPTER - 1

सिद्धांत का ढ़ाचा और साहित्य समीक्षा

विश्वास, सांस्कृतिक व्यवस्था और विश्व नजरिये के संग्रह को ही धर्म कहा जाता है | जिसमें लोग नैतिकता, मूल्य, ईश्वर की पूजा, धार्मिक संस्थानों, धार्मिक नियमों का पालन करते हैं | धर्म के सम्बन्ध में एक सर्वमान्य प्रचलित अवधारणा यह है, कि धर्म एक विश्वास है | जैसे अलौकिक शक्तियों के अस्तित्व पर विश्वास करना | यदि विश्वास को व्यापक रूप से परिभाषित किया जाये तो इसका तात्पर्य "नैतिक विश्वास" होता है और यदि इसका सीमित अर्थ लिया जाये तो यह आधिकारिक पवित्र ग्रंथो तथा मत और व्यवहार के पुराने सूत्रीकरण से सम्बंधित है | कुछ नास्तिक विचारकों के अनुसार धर्म प्राथमिक रूप से झूठे विश्वास से सम्बंधित विषयवस्तु है जो कि वैज्ञानिक प्रमाणों के सम्मुख नहीं टिक पाता है | धर्म के द्वारा समुदाय-निर्माण का कार्य भी किया जाता है, धर्म के द्वारा सामाजिक बंधन का निर्माण किया जाता है तथा उसे सुरक्षित किया जाता है (Sullivan, 2007) |

धर्म विश्वास की संस्कृति है, विज्ञान संदेह की संस्कृति है | विश्वास, सांस्कृतिक व्यवस्था और विश्व नजरिये के संग्रह को ही धर्म कहा जाता है, जिसमें लोग नैतिकता, मूल्य, ईश्वर की पूजा, धार्मिक संस्थानों तथा धार्मिक नियमों का पालन करते हैं | यदि ब्रह्माण्डविज्ञान के आधार पर धर्म की व्याख्या की जाए तो धर्म; मानव, पृथ्वी और जीवन के उत्पति व्याख्या करता है | धर्म में लोगों के सामूहीकरण करने की क्षमता होती है | वह लोगों को संघर्ष या शांति के लिए प्रेरित कर सकती है | धर्म का व्यक्ति के ऊपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होता है | धर्म उपासना की एक पद्धति है | धर्म वे नियम

है जो मानव जीवन को नियंत्रित करते है | कुछ लोगों का मानना है धर्म केवल मात्र उपासना का एक तरीका है | धर्म को व्यक्ति के जीवन के उस दृष्टिकोण के रूप में देखा जा सकता है जिसके द्वारा वह अपने अध्यात्मिक जीवन को अभिव्यक्त करता है (Hillsdale, 2003) |

फ्रायड के अनुसार धर्म ने मानव सभ्यता के आरंभ में मानव के हिंसक स्वभाव को रोकने में सहायता पहुचाया और वर्त्तमान समय में धर्म कारण और विज्ञान का समर्थन करता है | फ्रायड ने "द फ्यूचर ऑफ़ ऐन इलूसन" में तर्क दिया कि धार्मिक विश्वास मनोवैज्ञानिक सान्त्वना देने का कार्य करता है | धार्मिक विश्वास भय से व्यक्ति की रक्षा करने का काम करता है | फ्रायड का मानना था कि धार्मिक विश्वास की व्याख्या समाज में इसके द्वारा किये जा रहे इसके कार्य से की जा सकती है न कि सत्य के साथ इसके संबंध से | फ्रायड धार्मिक विश्वास को भ्रमजाल मानते है | उन्होंने धर्म को सामाजिक और व्यक्तिगत, सार्वजनिक और निजी, जीवन और मृत्यु के बीच मध्यस्त के रूप में देखा (Hillsdale, 2003) |

"द एलिमेंटरी फॉर्म्स ऑफ़ रिलीजीयस लाइफ: रिलिजन एंड एपिस्टोमिलॉजी" में दुर्खीम ने लिखा है कि किसी भी धर्म का सार समाज है | जैसा समाज होगा, वैसे ही उसके देवी-देवता होंगे | धर्म समाज की मान्यताओं का रूपांतरण मात्र है | यदि समाज वैज्ञानिक और विवेकशील है तो धर्म भी वैज्ञानिक और विवेकशील बन जाएगा | दुर्खीम ने धर्म की व्याख्या करते हुए दो अवधारणाओं को साथ रखा है: पवित्र और पार्थिव | धर्म सर्वप्रथम 'पवित्र' को मानकर चलता है | इसके बाद पवित्र से जुड़े हुए विश्वासों का समूह में संगठन करता है और अंत में यह धार्मिक समूह कर्मकाण्डों को लगभग वैज्ञानिक ढंग से व्यवहार में लाता है | पार्थिव वस्तुएं पवित्र वस्तुओं की प्रतिपाद है | वे वस्तुएं जो पवित्र

नहीं है, पार्थिव है | दुर्खीम के अनुसार पार्थिव वस्तुएं प्रमुख रूप से आर्थिक और उपयोगी हैं | पार्थिव वस्तुओं में उपयोगितावादी विशेषता निहित है | इसी कारण लोग इसे आर्थिक लाभ और हानि की दृष्टि से देखते है | इन वस्तुओं को कभी भी धार्मिक शक्ति के साथ नहीं जोड़ा जाता | इस प्रकार धर्म के साथ विश्वास अपने प्रारंभिक रूप से ही जुड़ा हुआ है | इसी पर धार्मिक सिद्धांत बने हैं | इन विश्वासों को मूर्त रूप देने के लिए कर्मकाण्ड किये जाते है | धर्म विश्वास और धार्मिक क्रियाओं का एकीकृत रूप है | सामाजिक इतिहास वास्तव में धर्म और सामाजिक-सांस्कृतिक समूहों के निर्माण तथा अपने आप को बनाये रखने की क्षमता और धर्म के बीच सम्बन्ध स्थापित करने को उत्सुक रहता है (McLeod, 2007) |

धर्म को सामाजिक सम्बन्धों के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है; जैसे यह एक धर्म के लोगों के बीच में सम्बन्ध बढ़ाने में सहायक होता है | धर्म शक्ति के प्रतीक के रूप में भी देखा जा सकता है शक्ति धर्म के ह्रदय में पड़ा रहता है, ये शक्ति अपने अनुयाइयों तथा समाज के द्वारा प्राप्त करता है | "द प्रोटोस्टेंट एथनिक एंड द स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज्म" में मैक्स वेबर ने यह व्याख्या की है कि धर्म ने आधुनिक पूंजीवाद के उदय में सहायता की है | वेबर के अनुसार धर्म लोगों को पीड़ा से मुक्ति दिलाता है, जिस प्रकार लोग समृद्धि की तलाश करते है ठीक उसी तरह से मुक्ति की भी खोज करते है इस प्रकार यह मानव प्रेरणा का अंग बन जाता है | धर्म प्रेरणा की व्याख्या करने में सहायता करता है, इसलिए वेबर विश्वास करते है धर्म विशेषकर मुक्ति ने आधुनिक पूंजीवाद के उदय में सहायता दी है (Weber and Kalberg, 2010) |

इ.बी.त्यलोर के अनुसार धर्म एक ऐसी व्यवस्था है जिसके विश्वास और व्यवहार किसी सर्वशक्तिमान सत्ता के प्रति आस्था रखते है | कुछ प्रकृतिवादियों का मानना है कि प्रकृति

अपने आप में पवित्र है और वह प्रकृति और मानव के बीच कुछ सम्बन्ध को दर्शाती है | क्योकि मानव की सारी क्रियाएँ कहीं न कहीं किसी सर्वशक्तिमान सत्ता और प्रकृति के बीच सम्बन्ध की ओर इशारा करती है, इसी सबन्ध को इ.बी.त्यलोर ने अपनी "एक्वेटिक नेचर रिलिजन" में दिखाया है (Taylor, 2007) |

धर्म और संस्कृति कई मायनों में एक दूसरे से अलग होते है और कई बार एक दूसरे पर इनका प्रभाव पड़ता है एक व्यक्ति जो किसी विशेष संस्कृति में रहता है वह व्यापक रूप से अपने समाज के धर्म से प्रभावित होता है | इसी तरह व्यक्ति जिस धर्म का पालन करता है वह उसके सांस्कृतिक सन्दर्भ से प्रभावित रहता है | एक ही धर्म को मानने वाले अपनी संस्कृति की वजह से विभिन्न प्रकार की जीवनशैली को अपनाते है जैसे यदि हम इसाई धर्म को देखे तो अमेरिका, लैटिन अमेरिका, पोलैंड, भारत में इसाई धर्म का अलग सांस्कृतिक रूप है इसी प्रकार इस्लाम को देखे तो हमें मलेशिया, नाइजीरिया, स्काटलैंड, अरब देशों में अलग अनुभव प्राप्त होते हैं |

धर्म और शक्ति एक दुसरे से पृथक नहीं है बल्कि मजबूती से एक दुसरे के साथ जुड़े हुए हैं | कार्ल मार्क्स के सामाजिक विभाजन और भैतिक संसार के बीच संबंधो के अध्ययन में धर्म की भूमिका को देखा जा सकता है | मार्क्स का वर्ग और राजनीतिक भिन्नता धर्म और शक्ति के ऊपर हुए बहस में महत्वपूर्ण योगदान देता है | मार्क्स दमन और शोषण की प्रक्रिया में धर्म की एक विशेष भूमिका को देखते है | मार्क्स का तर्क है कि धर्म अपने आप में कोई खराब वस्तु नहीं थी लेकिन इसने शोषण की प्रक्रिया में सहायता प्रदान की | यह जीवन की खराब आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को ढकने का काम और उन्हें चमकदार आवरण प्रदान करने का कार्य करती है | वर्तमान समय में धर्म

सामाजिक सम्बन्धों को न केवल प्राकृतिक बल्कि उन्हें दैवीय आदेश बताता है (Marx and Engels, 2012) |

धर्म प्रायः विचारधारात्मक रास्ते से संचालित किया जाता है | यह विचारधारा तब बनती है जब यह असमानता को छिपाने और उसे वैधता प्रदान करने का कार्य करती है | यह शक्ति-सम्बन्धों को वैधता प्रदान करने का कार्य करती है | यह एक समूह द्वारा दूसरे समूह पर शासन को प्राकृतिक और प्रश्नरहित बताता है | धर्म अफीम है | इस सन्दर्भ में मार्क्स ने खराब सामाजिक और आर्थिक स्थिति के लिए धर्म को वास्तविक कारण नहीं माना है, बल्कि यह उस खराब सामाजिक व्यवस्था के प्रति सहानभूति रखता है जिसका प्रयोग कामगार वर्ग करते है (Marx and Engels, 2012) |

अल्थूजर के अनुसार शासक वर्ग दो साधनों के द्वारा जनसँख्या पर अपने शक्तियों को आरोपित करता हैं | पहला दबावकारी राज्य के साधन जैसे सेना, पुलिस, कारावास, अदालत और स्वंय सरकार और दूसरा विचारधारात्मक राज्य के साधन जैसे स्कूल, परिवार, कला, साहित्य और चर्च या धर्म | इस प्रकार अल्थूजर के अनुसार धार्मिक संगठन भी नियंत्रण का एक माध्यम है | धर्म को आतंरिक विषयवस्तु माना जाता है जबकि इसका प्रभाव और भी है | ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो यूरोप में कई राज्यों द्वारा चर्च को स्थापित किया गया है जैसे ग्रेट ब्रिटेन में जहाँ चर्च राज्य के प्रशासन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है | इस प्रकार कई ऐसे माध्यम हैं धर्म और राजनीति शक्ति-सम्बन्धों में आते हैं जिसे प्रायः विचारधारा के सिद्धांत द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है |

धर्म के अन्दर वैधता प्रदान करने की भी शक्ति होती है | यदि हम पश्चिमी सभ्यता को देखे तो कई विचारकों ने सुझाव दिया है कि धार्मिक वैधता सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक है | जान लॉक और रूसो जैसे विचारकों ने सुझाव दिया है कि लोग तब तक नैतिक नहीं हो सकते जब तक कि वे नर्क में विश्वास न रखें | इसके कारण लॉक और रूसो ने अपने राजनीतिक लेख में सुझाव दिया है कि नास्तिकता अवैध होनी चाहिए क्योकि नास्तिक कानून के प्रति आज्ञाकारी नहीं होते क्योकि उन्हें जीवन के बाद का कोई डर नहीं होता | जब लोग कुछ सामाजिक व्यवस्थाओं पर प्रश्नचिन्ह उठाने लगते है तो धार्मिक वैधता उन्हें न्यायसंगत ठहरा सकती है | "ईश्वर ने ऐसा कहा" "ईश्वर तुम्हें दण्डित करेगें यदि तुमने ऐसा नहीं किया" ये धार्मिक वैधता के कुछ उदाहरण है | सामाजिक व्यवस्था या वैधता के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है यह तत्कालीन परिस्थितियों पर निर्भर करता है | लगभग 200 साल पहले अमेरिका में गोरे लोगों का विचार था कि काले लोगों को खरीदना और बेचना उचित है, दक्षिणी अमेरिका में इसे राजनीतिक वैधता प्रदान की गई | उनका कहना था कि ईश्वर जातियों का निर्माण करते हैं और बाइबिल दासता को न्यायसंगत मानती है | हालाँकि ये निश्चित रूप से उत्पीडात्मक वैधता थी (Botham, 2009) | वैधता और धार्मिक वैधता में क्या अंतर है ? वैधता तब धार्मिक हो जाती है जब उसमें अतिमानवीय, अतिप्राकृतिक तत्व शामिल हो जाते है (Berger, 1967) |

धर्म के पास प्राधिकार भी होता है | धर्म के पास तीन तरह के प्राधिकार होते है | पहले प्राधिकार के अंतर्गत पवित्र धर्मग्रन्थ, कर्मकांड इत्यादि आते है; जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में अमेरिकी संविधान के पास स्पष्ट रूप से प्राधिकार है उसी प्रकार ईसाइयों के लिए बाइबिल आधिकारिक ग्रन्थ है | जाजेन एक प्रकार का ध्यान है और यह जेन

बुद्धिस्ट के लिए आधिकारिक अभ्यास है | दूसरे तरह का प्राधिकार धार्मिक व्यक्तित्व के रूप में देखा जा सकता है जो सामाजिक पदसोपन का निर्माण करता है जैसे तिब्बती बुद्धिस्ट में दलाई लामा एक प्राधिकारी व्यक्तित्व है | कैथोलिक इसाई में पोप एक प्राधिकारी व्यक्तित्व है | इस तरह के प्राधिकार के पीछे एक परम्परा होती है जो इन्हें पवित्र तथा प्राधिकार वाली स्थिति प्रदान करती है | तीसरे प्रकार का प्राधिकार वह है जिनके बारे में तर्क नहीं किया जा सकता जैसे ईश्वर, संत, बोधिसत्व, मृत व्यक्तित्व इत्यादि अलग तरह के प्राधिकारी व्यक्तित्व है | यदि किसी के पास उचित संपर्क साधन हो तो वह पोप या दलाई लामा से मिल सकता है किन्तु जीसस से मिलने का कोई स्पष्ट माध्यम नहीं है (Malory, 2008) |

धर्म केवल ऐसे विचारों का समूह नहीं है जिसे केवल मस्तिष्क में धारण किया जाए बल्कि इसके लिए कुछ किया जाता है | धर्म को कर्मकाण्डों के द्वारा संपन्न किया जाता है | धर्म पूरी तरह से कर्मकांड ही नही है बल्कि कर्मकांड धर्म का एक हिस्सा है | सभी कर्मकांड धर्म के लिए आवश्यक नही होते बल्कि कुछ ही कर्मकाण्ड धर्म के लिए आवश्यक है | यदि हम धर्म का अध्ययन बेहतर ढंग से करना चाहते है तो उसके लिए हमें कर्मकाण्डों का भी अध्ययन करना पड़ेगा (Bloom, 1985) |

धर्म सामाजिक पूँजी से भी सम्बंधित है | धर्म से सम्बंधित संगठन सामाजिक पूँजी के निर्माण में भी मदद करते है | संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रोटेस्टेंट चर्च जैसे मेथोडिस्ट, प्रेसीबिटेरियन इत्यादि स्थानीय समुदायों के जीवन में एक अहम् भूमिका निभाते है | उनका विश्वास है कि वो लोगों को एक ऐसी जगह मुहैया कराते है जहाँ वे अपने सामाजिक सम्बन्ध बढ़ा सके, अपने नेतृत्व क्षमता में वृद्धि कर सकें (धार्मिक संगठनों और चर्च की समिति में) | वे लोगों को सार्वजनिक मामलों से अवगत कराते हैं,

जनकल्याणकारी सेवाओं को प्रदान करते है, विभिन्न समाजों और नृजातीय समूहों को साथ लाते है, शिक्षा प्रदान करते है, युवा विकास और मानव सेवा कार्यक्रम जैसे रोटरी क्लब उपलब्ध करवाते है (Norris and Inglehort 2004) |

“क्लैश ऑफ़ सिविलाइजेसन एंड द रिमेकिंग ऑफ़ वर्ल्ड आर्डर” में हटिंगटन ने कहा है कि चर्च और राज्य का विभाजन पाश्चात्य सभ्यता की विशेषता है, जिसके कारण पाश्चात्य देश लोकतंत्र की तरफ जा रहे है, जबकि अन्य सभ्यताओं में लोकतंत्र मुश्किल से ही प्राप्त होता है (Huntington, 1996) |

सुमेर विश्व की एक प्राचीन सभ्यता थी जो दक्षिणी मेसोपोटामिया में स्थित थी | यह एक ऐसी सभ्यता थी जिसने लिखने का अविष्कार किया इसलिए यह पहला राज्य बना जिसके ऐतिहासिक रिकॉर्ड है (Mueller, 2009) | यहाँ राज्य और धर्म आपस में मिले हुए थे और राज्य पूर्णतः निरंकुश था | राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था | पुजारियों के पढ़े-लिखे होने के कारण वे राज्य की नौकरशाही में मदद करने लगे | सुमेरियन नगर-राज्य में धार्मिक विचारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके कारण सुमेरिया के लोगों ने मेसोपोटामिया के व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Finer, 1997) |

धर्म और राज्य के सामंजस्य की इस प्रणाली में पहला महत्वपूर्ण अलगाव एथेंस में हुआ | एथेंस में लोकतंत्र के उदय के साथ सभी महत्वपूर्ण निर्णय नागरिकों की समिति के द्वारा लिए जाते थे | महत्वपूर्ण अवसरों जैसे युद्ध के समय सेना का नेतृत्व करने के लिए लोगों की व्यक्तिगत क्षमता ध्यान में रखी जाती थी न कि अन्य धार्मिक कारण

नेतृत्व के लिए उत्तरदायी थे | इस तरह प्राचीन एथेंस को पहला धर्मनिरपेक्ष राज्य कहा जा सकता है, जिसमें धर्म और राज्य पृथक थे |

प्राचीन यूनानी और रोमन विचारकों ने सांसारिक और अध्यात्मिक जीवन को अलग-अलग न मानते हुए दोनों को मानव-जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना | चर्च के संस्थापकों ने भी दो प्रकार के संगठनों की आवश्यकता महसूस की एक सांसारिक जीवन के लिए नागरिक शासन जिसको शासको द्वारा शासित किया जाता था और दूसरा अध्यात्मिक शासन जिसको कि चर्च द्वारा पूरा किया जाता था | चर्च और राज्य दोनों के बीच परस्पर सहायता का भाव रहना चाहिए किन्तु दोनों को एक दुसरे के कर्तव्य-क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए |

इस सिद्धांत को "दो तलवारों का सिद्धांत" कहा जाता है तथा इस सिद्धांत का प्रतिपादन पाँचवी शताब्दी के अंत में पोप गिलेशियन प्रथम ने किया था | पोप गिलेशियन का मानना था कि धर्मिक मामलों के विषय में चर्च की इच्छा सर्वोपरि होगी तथा सांसारिक मामले सम्राट के अधीन होगें | रोमन साम्राज्य का उदय फ्रैकिंस राजतन्त्र (481 ईसवी) से हुआ जिसकी स्थापना क्लोविस ने की | क्लोविस के द्वारा इसाई धर्म को अपनाया गया | इटली पर लोमबार्ड जाति के आक्रमण होने पर पोप ग्रेगरी प्रथम के आग्रह पर मर्टन और पेपिन ने लोमबार्ड को पराजित कर यहाँ का शासन पोप को दे दिया | इसके फलस्वरूप पोप ने पेपिन को फ्रैंक का वैध शासक स्वीकार किया | पेपिन के बाद उसका पुत्र शार्लीनमैंन फ्रैंक का शासक बना | पोप लियो तृतीय ने क्रिसमस के अवसर पर शार्लीनमैंन के सिर पर सम्राट का मुकुट रखा और यही से पवित्र रोमन साम्राज्य की परम्परा का आरम्भ हुआ | जर्मन सम्राट ओटो प्रथम ने इटली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया और पोप जॉन बारहवें ने उसका पवित्र रोमन सम्राट के रूप

में राज्याभिषेक किया | अब पोप ने यह परम्परा स्थापित कर दी कि कोई व्यक्ति उनसे राज्याभिषेक कराए बिना राजा नहीं बन सकता | दोनों ही अपने कार्यक्षेत्र में एक दूसरे से स्वतंत्र थे और एक दूसरे को अपने लिए सहयोगी मानते थे लेकिन यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं चल सकी | चर्च में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए सम्राट को आगे आना पड़ा | आटो प्रथम के ही समय से जर्मन सम्राट पोप के अधिकार-क्षेत्र में हस्तक्षेप करने लगे | इस प्रकार लौकिक सत्ता और अध्यात्मिक सत्ता के बीच में संघर्ष होने लगा | 1806 में नेपोलियन बोनापार्ट ने इस पवित्र रोमन साम्राज्य का अंत कर दिया (Sharma, 2006) |

इस व्यवहारिक निष्कर्ष के पीछे जो दार्शनिक सिद्धांत था, वह सन्त आगस्टाइन के सिद्धांतों के अनुरूप था | सन्त आगस्टाइन के अनुसार सांसारिक सत्ता और अध्यात्मिक सत्ता का भेद इसाई धर्म का एक आवश्यक सिद्धांत है तथा इसाई धर्म का अनुसरण करने वाले प्रत्येक शासक के लिए यह एक अनिवार्य नियम है | सांसारिक और धार्मिक सत्ता का एक ही हाथ में समिश्रण इसाई धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध है | ईसा के पूर्व तो यह मान्य हो सकता था, लेकिन अब यह निश्चित रूप से शैतान का कार्य है | ईसा मसीह ने स्वयं राजकीय और अध्यात्मिक शक्ति का एक साथ प्रयोग नहीं किया था | ईसा ने व्यक्ति की बुराइयों को दूर करने के लिए दोनों शक्तियों को अलग-अलग कर दिया था | इसाई धर्म के अनुसार एक व्यक्ति का एक ही समय में राजा और पोप होना विधिसम्मत नहीं है, बल्कि दोनों सत्ताओं को एक दुसरे की आवश्यकता जरुर है (Sabine, 1937) |

मध्य युग में एक लम्बे समय तक दो तलवारों का यह सिद्धांत मान्य रहा तथा राज्य और चर्च के बीच सामंजस्य बना रहा लेकिन एक ही राज्य में दो सत्ताओं की उपस्थिति के कारण धीरे-धीरे विवाद उत्पन्न होने लगा |

इसाई धर्म के प्रसार में सबसे महत्वपूर्ण योगदान सन्त पाल ने किया | उन्होंने रोमन साम्राज्य के सभी भागों में इसाई धर्म का प्रसार किया और अनेक चर्च स्थापित किये | चौथी शताब्दी में बहुत बड़ी संख्या में रोमन सैनिकों ने इसाई धर्म को अंगीकार कर लिया और रोमन सम्राट कांस्टेटाइन की आज्ञा को मानने से इंकार कर दिया | इससे विवश होकर सम्राट कांस्टेटाइन ने भी इसाई धर्म को स्वीकार कर लिया | कांस्टेटाइन के पश्चात् रोमन सम्राट थियोडोसिस ने इसाई धर्म को राजकीय धर्म घोषित कर दिया | इसाई धर्म की सफलता के मुख्य कारण थे इसाई प्रचारकों का उत्साह, चर्च का व्यापक संगठन और अनुशासन (Gibbon, 1906) |

संत अम्ब्रोज ने अध्यात्मिक मामलों के सम्बन्ध में चर्च की स्वायत्ता पर जोर दिया, उनका मानना था कि धार्मिक मामलों में जिस तरह चर्च का सभी इसाईयों के ऊपर अधिकार है, उसी प्रकार सम्राट भी धार्मिक मामलों के विषय में चर्च के अधीन है | अन्य किसी की भांति सम्राट भी चर्च का पुत्र है (Sabine, 1937) | संत अम्ब्रोज सांसारिक सत्ता के सम्बन्ध में शासकों के आदेशों को सर्वोपरि माना | उन्होंने चर्च के अधिकारों की रक्षा के लिए लिए अध्यात्मिक साधनों का समर्थन किया न कि प्रतिरोध का | डनिंग के अनुसार अम्ब्रोज ने धार्मिक क्षेत्र में चर्च की सर्वोच्चता का समर्थन किया लेकिन अभी तक उसका क्षेत्र बड़ा ही सीमित था (Dunning, 1902) |

“द सिटी ऑफ़ गॉड” में सन्त आगस्टाइन ने दो नगरों का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें दो नगरों- सांसारिक नगर और ईश्वरीय नगर का विवरण दिया | उसके अनुसार मानव प्रकृति के दो रूप है- आत्मा और शरीर | इसलिए मनुष्य इस संसार का नागरिक है और ईश्वरीय नगर का भी (Dunning, 1902) |

सांसारिक नगर व्यक्ति की बुरी इच्छाओं पर आधारित है, जबकि ईश्वरीय नगर में ईसा का शासन होता है और यह नगर बाइबिल में उल्लिखित सर्वोच्च नगर है | सेबाइन के अनुसार संत आगस्टाइन ने इस भेद को मानव इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने का साधन मान लिया है | मानव समाज सदैव से ही दो समाजों के संघर्ष द्वारा नियंत्रित होता है | एक ओर संसारिक नगर है | यह मनुष्य की स्वार्थी इच्छाओं के ऊपर आधारित है | दूसरी ओर ईसा का नगर है | यह अध्यात्मिक शान्ति पर आधारित है | पहला नगर बुरी आत्माओं या शैतानों का राज्य है और यह शैतानी राज्य उस समय से प्रारंभ होता है जब से शैतान ने देवदूतों की आज्ञा का उल्लंघन प्रारंभ कर दिया था | इसके मूल तत्व असीरिया और रोम के पैगन साम्राज्यों में विशेष रूप से पाए जाते है | दूसरा साम्राज्य ईसा का है | वह पहले राष्ट्र में और फिर बाद में चर्च में तथा इसाई धर्म को अंगीकृत करने वाले साम्राज्य में निहित रहा है | इतिहास इन दो समाजों के बीच संघर्ष की कथा है | अंत में विजय ईश्वरीय नगर की ही होगी (Sabine, 1937) |

आगस्टाइन के सिद्धांत के अनुसार राज्य मनुष्य के अध्यात्मिक विकास का चरम अवस्था है | इस दर्शन ने इसाई विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया | इन विचारों से न केवल रोमन कैथोलिक ही नहीं बल्कि प्रोटेसटेन्ट भी प्रभावित रहे हैं | आगस्टाइन के विचारों को मध्ययुगीन राजनीतिक चिन्तन में महत्व इसलिए प्राप्त है, कि उसने चर्च को उसके इतिहास के एक घोर संकट में एक सुनिश्चित और व्यवस्थित विचारधारा प्रदान

किया उसके अस्तित्व को अपनापन दिया और उसके उद्देश्यों को आत्म-चेतना मूलक बनाया | जब चर्च ने अपने प्रशासकीय ढांचे को विकसित करके सांसारिक कार्यो की ओर अधिक ध्यान दिया तो उसका शक्ति के उस शिखर पर पहुंचना निश्चित हो गया जिसका प्रतिनिधित्व आगे चलकर पोप ने किया (Gettel, 1924) |

ग्रेगरी महान को मध्युगीन राजनीतिक विचारकों की कोटि में अग्रणी स्थान प्राप्त है | तत्कालीन शासकों की दुर्बलता ने ग्रेगरी को इस बात के लिए विवश किया कि वह राजनीतिक शासकों के कर्तव्यों का निर्वाह करे | ग्रेगरी ने मध्य इटली का शासन अपने हाथों में ले लिया | उसने अपने अधीन पादरियों को आदेश दिया कि वे जनता के लिए कल्याणकारी कार्यों का संपादन करें | ग्रेगरी ने पोप की सत्ता के क्षेत्र को बहुत ही व्यापक और स्वीकार्य बना दिया | ग्रेगरी ने कभी भी शासकों को चर्च के अधीन लाने का प्रयास नहीं किया बल्कि लोगों को राज्य के आदेशों का पालन करने के लिए प्रेरित किया | सेबाइन के अनुसार चर्च के समर्थकों में ग्रेगरी ही एकमात्र ऐसा विचारक है जो राजनीतिक शक्ति के आदेशों का सविनय भाव से पालन करने पर जोर देता है | ग्रेगरी ने अपने “पास्टोरल रुल” नामक पुस्तक में इस बात पर विचार किया है कि बिशप अपने अनुयाइयो को किस प्रकार की शिक्षा दें ? इस पुस्तक में कहा गया है कि जनता को राज्य के आदेशों का पालन करना चाहिए तथा उन्हें अपने शासकों के जीवन की आलोचना नहीं करनी चाहिए (Sabine, 1937) |

पोप ग्रेगरी सप्तम के पश्चात् जॉन ऑफ़ सेलिसबरी चर्च के समर्थकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं | उन्होंने “पालिक्रेटिस” नामक पुस्तक में अपने विचारों का प्रतिपादन किया | सेबाइन के अनुसार अरस्तू के पुनरुद्धार के पहले इस ढंग की यह अकेली पुस्तक थी जिसमें उस प्राचीन परम्परा का संकलन किया गया जो सिसरो, सेनेका, चर्च के

संस्थापकों और रोमन विधिवेत्ताओं के पास से होती हुई 12वीं शताब्दी तक आई थी | इस ग्रन्थ में बड़ी ईमानदारी से उन विश्वासों को प्रकट करने का प्रयत्न किया गया था जिन्हें 12वीं शताब्दी में सब लोग मानते थे | जिस समय जॉन ऑफ़ सेलिसबरी ने इस पुस्तक को लिखा था उस समय समाज में सामंतवादी व्यवस्था प्रचलित थी, लेकिन इस पुस्तक पर सामंतवाद का बहुत ही कम प्रभाव है (Sabine, 1937) |

जॉन ऑफ़ सेलिसबरी के अनुसार धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र अलग-अलग है | लेकिन दोनों ही सत्ताओं से सम्बंधित तलवारें चर्च को दी गई थी | चर्च ने राजनीतिक सत्ता से सम्बंधित तलवार राजा को यह कहते हुए दिया, कि वह इसका प्रयोग चर्च की आदेशानुसार करेगा | इस प्रकार यह तलवार राजा चर्च से प्राप्त करता है | चर्च इसका प्रयोग राजा के हाथ से करता है और सांसारिक मामलों में उसे दण्ड देने का अधिकार देता है जबकि अध्यात्मिक अधिकार अपने पास सुरक्षित रख लेता है | इस प्रकार शासक चर्च का एक कर्मचारी है और वह उन कार्यो को करता है जिसको करना पादरियों के लिए उचित नहीं है (Mcllwain, 1932) |

जॉन ऑफ़ सेलिसबरी ने राज्य की तुलना शरीर के साथ की | उनके अनुसार सेना तथा अधिकारी राज्यरूपी शरीर के हाथ है और किसान और कारीगर पाँव है तथा राजा सिर है | यदि सम्राट आत्मा की आज्ञानुसार कार्य करे तभी राज्य के समस्त अंग सम्राट के अधीन रह सकते है | राज्य में चर्च आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है | जिस प्रकार आत्मा शरीर पर शासन करती है, उसी प्रकार राज्य पर चर्च का शासन है | कानून के समक्ष राजा और प्रजा दोनों सामान हैं | यह कानून शासकों द्वारा निर्मित न होकर शाश्वत दैवीय कानून है | सेलिसबरी के अनुसार शासक यह कह सकते है कि उनकी

इच्छा ही कानून है और उनके ऊपर किसी प्रकार के बंधन नहीं है, लेकिन फिर भी मैं यही कहूँगा कि राजा कानून के अधीन होते हैं (Sabine, 1937) |

जॉन ऑफ़ सेलिसबरी ने अत्याचारी राजा के वध किये जाने का भी समर्थन किया है | उसके अनुसार यदि शासक दैवीय आज्ञाओं का विरोध करता है तो ऐसे शासक का वध करना न केवल वैधानिक है बल्कि उचित और न्यायपूर्ण है (Dunning, 1921) | इस विचार का प्रतिपादन करके कि शासकों को ईश्वरीय कानून के अनुसार ही राजकीय कार्यों का संपादन करना चाहिए, सेलिसबरी ने रोम तथा चर्च की प्राचीन परम्पराओं का ही अनुगमन किया तथा अत्याचारी शासकों के हटाने को उचित ठहराकर संवैधानिक शासन के विकास में भी अमूल्य योगदान दिया (Gettel, 1924) |

सन्त टामस एक्वीनास ने अरस्तू के विचारों को इसाई धर्म का विरोधी न मानकर अरस्तू के विचारों का इसाई धर्म की दृष्टिकोण से व्याख्या की | एक्वीनास अरस्तू के इस विचार से सहमत था कि मानव का अंतिम लक्ष्य अच्छे जीवन की प्राप्ति है, लेकिन वह मानव के इस अंतिम लक्ष्य के लिए चर्च को महत्वपूर्ण मानता था | एक्वीनास के अनुसार चर्च और राज्य आपस में विरोधी नही बल्कि सहयोगी हैं | शासक अपनी शक्ति ईश्वर से प्राप्त करता है | शासन का नैतिक उद्देश्य बहुत ही उच्च है | एक्वीनास ने सांसारिक सत्ता और अध्यात्मिक सत्ता के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है | एक्वीनास ने मनुष्य के जीवन के दो उदेश्य बताये है सांसारिक सुख की प्राप्ति और अध्यात्मिक सुख की प्राप्ति | व्यक्ति नागरिक भी है और इसके साथ ही साथ इसाई भी है | इसलिए यह आवश्यक है कि राज्य और चर्च दोनों ही व्यक्ति के जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए आपस में सहयोग करें (Sharma, 2006) |

दांते एलिजियरी ने अपनी पुस्तक “मोनार्किया” में पोप के दावों के विरुद्ध राजा के अधिकार का समर्थन किया | दांते ने बाइबिल के द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि ईसा मसीह ने सम्पूर्ण मानव जाति के पाप अपने सिर पर लेकर स्वयं दण्डित हुए | रोमन सत्ता के वैध होने का प्रमाण यह है कि वह ईसा को दण्डित कर सकी | क्योंकि कानून की दृष्टि में दण्ड वही दे सकता है जिसे दण्ड देने का अधिकार है | उसने पूर्व के दो उदाहरण कांस्टेटाइन के दान और शर्लिमैन के राज्यारोहण का पुनःपरिक्षण किया | उसके अनुसार कांस्टेटाइन का दानपत्र क़ानूनी नहीं था | क्योंकि राजा को साम्राज्य को हस्तांतरण करने की कोई वैधानिक शक्ति नहीं प्राप्त थी और यदि पोप को क़ानूनी रूप से साम्राज्य की शक्ति नहीं प्राप्त थी तो वह उसे शर्लिनमैंन को भी नहीं दे सकता था | सांसारिक शक्ति को धारण करना चर्च के नियमों के विरुद्ध है क्योंकि चर्च का राज्य इस संसार में नहीं बल्कि परलोक में है (Sabine, 1937) |

जॉन ऑफ़ पेरिस के विचारों पर अरस्तू का प्रभाव स्पष्ट रूप दृष्टिगोचर होता है | उनका मानना था कि चर्च को आध्यात्मिकता की आवश्यकता होती है न कि राजनीतिक सत्ता की | नागरिक समाज प्राकृतिक प्रवृत्ति के कारण पैदा होता है और मनुष्य की रुचियाँ अलग-अलग होती है | स्वाभाविक विभाजन राज्य है | यह जरूरी नहीं है कि इनका प्रधान एक ही हो | वह इस पोप के समर्थकों की इस विचारधारा से सहमत नही है कि राज्य को वैध होने के लिए चर्च की सहमति की आवश्यकता होती है | सांसारिक शक्ति चर्च की तुलना में अधिक प्राचीन है | जॉन का कहना है कि चर्च के पास धार्मिक कार्यों के संपादन के लिए सम्पत्ति होनी आवश्यक है, लेकिन इस पर भी राज्य का नियंत्रण होना चाहिए | पेरिस का मानना था कि यदि पोप का आचरण उसके पद की मर्यादा के

अनुरूप न हो तो उसे कर्तव्यच्युत कर दिया जाना चाहिए | जॉन ऑफ़ पेरिस संवैधानिक राजतन्त्र के पक्ष में थे (Sabine, 1937) |

मर्सिलियो ऑफ़ पेडुआ ने अपने राजनीतिक विचारों का प्रतिपादन "डिफेंसर पेसिस" और "डिफेंसर माइनर" में किया है | मर्सिलियो पहला ऐसा विचारक था जिसने दो तलवारों के सिद्धांत का खण्डन किया | उसके अनुसार चर्च राज्य का एक अंग मात्र है, चर्च का अधिकारक्षेत्र केवल अध्यात्मिक विषयों तक ही सीमित है | मर्सिलियो के अनुसार चर्च के कानून की कोई सत्ता नहीं है, क्योकि यहाँ केवल दो ही तरह के कानून है परलोक में लागू होने वाला ईश्वरीय कानून और इस लोक में लागू होने वाला मानवीय कानून | ईश्वरीय कानून के उल्लंघन का दण्ड ईश्वर द्वारा परलोक में मिलता है, अतः पोप को मनुष्यों को दण्डित करने का अधिकार नहीं है | मर्सिलियो ने धार्मिक शक्ति को वैधानिक शक्ति से अलग करने पर जितना जोर दिया, उतना मध्ययुग के किसी अन्य विचारक ने नहीं दिया है (Sabine, 1937) |

पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन के इतिहास में मैकियावली पहला ऐसा विचारक था जिसने राजनीति को धर्म और नैतिकता से अलग करने का प्रयास किया | मैकियावली के चिंतन और दर्शन पर उसके युग की परिस्थितयों का बहुत प्रभाव पड़ा था इसलिए डनिंग ने उसे अपने युग का शिशु कहा है (Dunning, 1902) | मैकियावली ने अपने राजनीतिक विचारों का प्रतिपादन "द प्रिन्स" और "द डिसकोर्सेस आन लिवी" में किया है | मैकियावेली ने राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए जिन साधनों का सुझाव दिया है वह उनकी नैतिकता पर कोई ध्यान नहीं देता है | उसका उद्देश्य केवल इतना है कि वे राज्य की रक्षा करने में और सफलता प्राप्त करने में सहायक हो | मैकियावेली के शब्दों में " प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि राजा के लिए अपने वचन का पालन करना

कितना प्रशंसनीय है, तथापि हमारी आँखों के सामने जो कुछ घटा है उसमें हम देखते है कि केवल उन्ही राजाओं ने महान कार्य किये है जिन्होंने चालाकी में दूसरों को पीछे छोड़ दिया है और अंत में वे उनसे अधिक सफल हुए जो कि ईमानदारी के आचरण में विश्वास करते थे | इसलिए एक बुद्धिमान शासक अपने वचन का पालन नहीं कर सकता और न ही उसे करना चाहिए, यदि ऐसा करना उसके हित में न हो और जबकि वे कारण समाप्त हो जाए जिनसे विवश होकर उसने यह वचन दिया था | यदि मनुष्य पूर्ण रूप से अच्छे होते, तो ऐसी स्थति न होती | क्योकि वे बुरे है और वे तुम्हारे साथ किये हुए वादे का निर्वाह नहीं करेगे इसलिए तुम भी उनके साथ अपने वचन का निर्वाह करने के लिए बाध्य नहीं हो और किसी भी शासक को कभी भी अपने वचन-भंग पर आवरण डालने के लिए किसी समुचित कारण का अभाव नहीं रहता | इस बात के अनेक उदाहरण दिए जा सकते है कि किस प्रकार राजाओं के विश्वासघात के कारण बहुत सी संधियाँ निष्क्रिय बना दी गई और जो भी चालाकी का प्रयोग करना जानता था, उसे ही सफलता प्राप्त हुई है (Shood, 2011) |

मैकियावेली ने नागरिकों के लिए धर्म और नैतिकता को आवश्यक माना है | मैकियावेली ने रोम में एक राजनीतिक और नैतिक उपकरण के रूप में धर्म की भूमिका पर जोर दिया | रोम के लोगों के लिए धर्म ने एक नैतिक कंपास के रूप में कार्य किया | धर्म ने नागरिकों को आज्ञाकारी बनाया जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला (Coby, 1999) | रोमन नागरिकों को ईश्वर से डरने की आवश्यकता है | जनता शासको के द्वारा दिए जाने वाले दण्ड की तुलना में ईश्वर द्वारा दिए जाने वाले दण्ड से अधिक डरती है (Fischer,1997) | इस डर से लोग स्वभावतः प्राधिकारी की आज्ञा का पालन करने लगेगें | इस प्रकार धर्म के द्वारा अच्छे नागरिकों और अच्छी परम्पराओं का निर्माण

किया जाता है | मैकियावेली ने यह अवश्य ही स्वीकार किया है कि शासक साध्य की प्राप्ति के लिए अनैतिक साधनों का प्रयोग कर सकता है लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि जनता का भ्रष्टाचार अच्छे शासन को असम्भव बना देता है इसलिए शासक को चाहिए कि वह इस तरह से आचरण करे कि लोग उसे विश्वास और धार्मिकता की साकार प्रतिमा मानें (Dunning, 1921) |

मार्टिन लूथर ने दो साम्राज्यों की बजाय दो सरकारों का प्रयोग किया है | उसके अनुसार चर्च के पास संसार को शासित करने की शक्ति नहीं है और न ही शासको के पास आत्मा को मुक्ति दिला पाने की शक्ति है (MacCulloch, 2003) | लूथर ने पोप के ऊपर विलासी जीवन, मठों से प्राप्त होने वाले धन का पोप के नियंत्रण में जाना, स्वर्ग के लिए प्रमाण-पत्रों की बिक्री के आरोप लगाये (Sabine, 1937) | उसने इस धरणा का खण्डन किया कि राज्य के कर्मचारी चर्च के कर्मचारियों से हीन है | लूथर के अनुसार केवल अदृश्य चर्च ही निष्ठा का विषय है न कि दृश्य चर्च | सच्चे अदृश्य चर्च का कोई औपचारिक संगठन नहीं हो सकता इसलिए राज्य के अधिकारियों पर नियंत्रण करने की उनमे क्षमता नहीं है | लूथर चर्च के कर्मचारियों और साधारण प्रजा में कोई अंतर नहीं देखता है | उसके अनुसार दृश्य चर्च पर राज्य का नियंत्रण होना चाहिए (Sood, 2011) | शासकों के अधिकार का समर्थन करते हुए मार्टिन लूथर ने कहा कि हमारे शासकों को समझना चाहिए कि वे भगवान के दण्ड को क्रियान्वित करने वाले अधिकारी है और दैवीय प्रकोप दुष्टों को दण्ड देने की आज्ञा देता है (Bowle, 1961) |

काल्विन ने अपने राजनीतिक विचार "इंस्टिट्यूट ऑफ़ दी क्रिश्चियन रिलीजन" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया | काल्विन के अनुसार चर्च और राज्य दोनों के कार्य अलग-अलग है इसलिए उन्हें स्वतंत्र और पृथक रखना चाहिए | ईश्वर द्वारा मूसा को प्रदान

किये गए कानून के दो भाग थे | पहले भाग में वे नियम आते है जो ईश्वर के प्रति मनुष्य के आचरण को निर्धारित करते है | दूसरे भाग में यह है कि मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए | इन दोनों कानूनों को लागू करवाने के लिए दो अलग-अलग शक्तियाँ है | पहली शक्ति का परिचायक चर्च है और दूसरी शक्ति का प्रतिनिधित्व राज्य करता है इसलिए चर्च को केवल धार्मिक मामलों को ही देखना चाहिए और राज्य के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए (Sharma, 2006) |

मध्यकालीन यूरोप में राजतन्त्र दैवीय अधिकार सिद्धांत के आधार पर शासन करता था | "केसरोपपिस्म" सिद्धांत के आधार पर शासक यह मानते थे कि उन्हें राज्य और चर्च दोनों पर शासन करने का अधिकार है | केसरोपपिस्म सिद्धांत के अंतर्गत शासक को चर्च का भी प्रमुख माना जाता है | इस सिद्धांत में चर्च और राज्य को अलग नहीं माना जाता है | केसरोपपिस्म के सिद्धांत का निर्माण जस्टस हेन्निंग बोहमेर के द्वारा किया गया (Pennington, 2010) | मैक्स वेबर के अनुसार एक धर्मनिरपेक्ष, केसरोपपिस्ट शासक चर्च सम्बन्धी मामलों में अपने सर्वोच्च प्राधिकार का प्रयोग करता था (Weber, 2010) | केसरोपपिस्म सिद्धांत के प्रमुख उदाहरण के रूप में बैजेनटाइन साम्राज्य को देखा जा सकता है जहाँ सम्राट के द्वारा चर्च के प्रधान की नियुक्ति की जाती थी और चर्च के न्यायाधिकार की सीमा तय की जाती थी |

केसरोपपिस्म सिद्धांत को जारशाही रूस में भी देखा जा सकता है जहाँ "इवान द टेरिबल" ने 1547 में सीजर की उपाधि धारण की और रुसी ओर्थोडॉक्स चर्च को राज्य के नियंत्रण में लाया | 1721 में पीटर द ग्रेट ने चर्च को सरकार का एक भाग बना दिया | रुसी साम्राज्य में केसरोपपिस्म का सिद्धांत बैजेनटाइन साम्राज्य से भी अधिक व्यापक था (Billington, 1966) |

जॉन लॉक ने धर्म सम्बन्धी अपने विचार "लेटर्स ऑन टोलिरेसन" नामक रचना में प्रस्तुत की | लॉक के अनुसार धर्म अंतःकरण विषयवस्तु है इसलिए राज्य धार्मिक मामलों में तभी हस्तक्षेप कर सकता है जब उससे राज्य के कार्यों में बाधा पहुचे | सामाजिक समझौता सिद्धांत में लॉक ने कहा कि कुछ बुद्धिमान लोग या कोई सरकार लोगों के ऊपर व्यक्तिगत चेतना को सीमित करने के लिए दबाव नहीं डाल सकते है | लॉक ने इस व्यक्तिगत चेतना को "प्राकृतिक अधिकार" का नाम दिया | लॉक के विचारों का प्रभाव अमेरिकी संविधान पर भी दिखाई पड़ता है (Feldman, 2005) | बार्कर के अनुसार लॉक में व्यक्ति की आत्मा की सर्वोच्च गरिमा स्वीकार करने वाली तथा सुधार चाहने वाली महान भावना थी | उसमें वह प्यूरिटन अनुभूति थी कि आत्मा को परमात्मा के साथ अपने सम्बन्ध निश्चित करने का अधिकार है (Barker, 1960) |

अमेरिकी संविधान में हुए पहले संवैधानिक संशोधन ने किसी भी धर्म को स्थापित करने के लिए कोई भी कानून बनाने पर रोक लगायी, धर्म के पालन की स्वतंत्रता तथा साथ ही साथ विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण सभा का अधिकार इत्यादि प्रदान किया | 1801 में संयुक्त राज्य अमेरिका में धार्मिक जोश दिखाई देता था | कुछ लेखकों द्वारा "इवानजलिज्म" को अमेरिकन जीवन का एक महान हिस्सा बताया गया (Cole, 1966) | इसी समय राष्ट्र के इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता को स्वीकार किया गया और पहले संवैधानिक संशोधन के द्वारा एक राष्ट्रीय चर्च की स्थापना को हमेशा के लिए निषिद्ध कर दिया गया | अभी तक अमेरिका के बहुत से राज्य कुछ मात्रा तक धर्म के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाये हुए थे | यह सम्बन्ध 1833 तक बना रहा जब मैसाचुऐट में आखिरी धर्म राज्य सम्बन्ध ख़त्म हुआ(Pfeffr, 1996) | "दंबुरी बैप्टिस्ट एसोसिएशन" ने राष्ट्रपति जैफरसन से पहले संवैधानिक संशोधन को

स्पष्ट करने को कहा[1] | राष्ट्रपति जैफरसन ने 1802 में "वाल ऑफ़ सेपरेशन बिटविन चर्च एंड स्टेट" पर लेख दंबुरी बैप्टिस्ट एसोसिएशन के लिए लिखा | जैफरसन के अनुसार अपने धर्म पर विश्वास करना व्यक्ति और उसके भगवान के बीच की बात है | किसी व्यक्ति को किसी धर्म पर विश्वास करने और आस्था जताने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता | मेरा विचार है कि पूरी अमेरिकन जनता ने यह घोषित किया है कि उनकी विधायिका किसी को अपने विश्वास के अनुरूप आचरण करने से रोकने के लिए तथा किसी धर्म को स्थापित तथा उसका सम्मान करने के लिए कोई कानून नहीं बना सकती है | इसलिए हमें चर्च और राज्य के बीच अलगाव की एक दीवार का निर्माण करना चाहिए | चेतना के अधिकार के तहत यह राष्ट्र की सर्वोच्च इच्छा है | मैं इसे व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों को संरक्षित करने वाले कार्य के रूप में देखता हूँ[2] | अमेरिकी संविधान में हुए 14वें संवैधानिक संशोधन द्वारा अमेरिकी नागरिकों को धार्मिक नागरिक अधिकार प्रदान किया गया है | 14वें संसोधन की धारा 1 धर्म के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव का प्रतिषेध करता है |

भारत में धर्म को राज्य से अलग किया गया है और भारत को पंथनिरपेक्ष देश घोषित किया गया है | भारतीय नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया है और इसके लिए प्रावधान बनाये गए है | नागरिकों के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन राज्य द्वारा न किया जा सके इसलिए इस विषय को संविधान में मूल अधिकारों के अंतर्गत रखा गया है | संविधान के अनुच्छेद 25 में अंतःकरण की और धर्म

[1] "Letter from Connecticut Danbury Baptist Association to Thomas Jefferson Oct. 7, 1801", Available at : https://jeffersonpapers.princeton.edu/selected-documents/danbury-baptist-association, Accessed on January 12, 2016'

[2] "Letter from Thomas Jefferson to Connecticut Danbury Baptist Association Jan.1, 1801", Available at : https://www.loc.gov/loc/lcib/9806/danpre.html, Accessed on January 12, 2016'

को अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता की बात की गई है | इसके अंतर्गत यह कहा गया है कि लोक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थय तथा इस भाग के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए, सभी व्यक्तियों को अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का सामान हक होगा | इस अनुच्छेद की कोई बात किसी ऐसी विद्मान विधि के प्रवर्तन पर प्रभाव नहीं डालेगी या राज्य को कोई ऐसी विधि बनाने से निवारित नहीं करेगी जो धार्मिक आचरण से सम्बद्ध किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक या अन्य लौकिक क्रियाकलाप का विनियमन करती है | सामाजिक कल्याण और सुधार के लिए या सार्वजनिक प्रकार की हिन्दुओं (इसके अंतर्गत सिक्ख, बौद्ध, जैन भी आते हैं) की धार्मिक संस्थाओं को हिन्दुओं के सभी वर्गों और अनुभागों के लिए खोलने का उपबन्ध करती है |

अनुच्छेद 26 में धार्मिक कार्यों के प्रबन्ध की स्वतंत्रता का उल्लेख है | लोक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य के अधीन रहते हुए प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय या उसके किसी अनुभाग को धार्मिक प्रयोजनों के लिए संस्थाओं की स्थापना और पोषण का, अपने धर्म विषयक कार्यो का प्रबन्ध करने का, विधि के अनुसार सम्पत्ति के अर्जन और स्वामित्व का अधिकार होगा |

अनुच्छेद 27 में किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय करने के बारे में स्वतंत्रता की बात किया गया है | अनुच्छेद 28 में शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता का उल्लेख किया गया है | इस अनुच्छेद में कहा गया है कि राज्य-निधि से पूर्णतया पोषित किसी शिक्षा संस्था में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी | राज्य से मान्यता प्राप्त या राज्य-निधि से सहायता पाने वाली संस्था में उपस्थित होने वाले किसी व्यक्ति को ऐसी संस्था में या उससे

संलग्न स्थान में की जाने वाली धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के लिए तब तक बाध्य नहीं किया जाएगा जब तक कि उस व्यक्ति ने या यदि वह अवयस्क है तो उसके संरक्षक ने इसके लिए अपनी सहमति नहीं दे दी है |[3]

सऊदी अरब में पूर्णतया राजतन्त्र है जो कि इस्लामिक कानूनों के अनुसार शासन करता है | वहाबवाद सऊदी अरब की आधिकारिक विचारधारा है | 1992 में जारी किए गए सऊदी अरब के मूलभूत कानून में कहा गया है कि राजा को शरिया और कुरान को अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए तथा कुरान और सुन्नाह को देश का संविधान घोषित किया गया | न तो यहाँ कोई राजनीतिक दल है और न ही यहाँ कोई राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव होते है | सऊदी अरब में राजा में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका तीनों शक्तियाँ समाहित है | यहाँ उलेमाओं की सरकार में प्रत्यक्ष भूमिका रहती है | उलेमाओं की महत्वपूर्ण सरकारी निर्णयों में प्रभावशाली भूमिका रहती है | शैक्षणिक और न्यायिक व्यवस्था में उलेमाओं की भूमिका काफी प्रभावपूर्ण है (Bligh, 2009) | इस्लाम सऊदी अरब का राजकीय धर्म है और सऊदी अरब के कानूनों के अनुसार यहाँ का नागरिक होने के लिए मुस्लिम होना अनिवार्य है |[4]

रुसी संघ के संविधान के अनुच्छेद 14 में कहा गया है कि राज्य के द्वारा कोई धर्म स्थापित नही किया जायेगा और धार्मिक संगठन राज्य से अलग रहेंगे तथा सभी धर्म कानून के समक्ष समान रहेंगे | 26 सितम्बर 1997 को चेतना की स्वतंत्रता और धार्मिक संघो के ऊपर संघीय कानून बनाया गया जिसे अब तक कई बार संशोधित किया गया है उसके कुछ मुख्य प्रावधान इस प्रकार है | रूसी संघ एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है और इसके

[3] "The Constitution Of India", Available at : http://lawmin.nic.in/coi/coiason29july08.pdf, Accessed on 4 February 4, 2016'

[4] "International Religious Freedom Report 2004", Avilable at : http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2004/, Accessed on Januray 13, 2016'

लिए सभी धर्म समान है | इसाई, इस्लाम, यहूदी और बौद्ध धर्म को देश के ऐतिहासिक विरासत का अभिन्न हिस्सा कहा गया है, लेकिन साथ में यह भी कहा गया है कि देश के इतिहास में आध्यात्मिकता और संस्कृति को स्थापित करने में ऑर्थोडॉक्स इसाईयत का विशेष योगदान रहा है |

यहाँ कानून व्यक्ति को किसी धर्म को अपनाने या ना अपनाने का अधिकार देता है तथा अपने धर्म का प्रचार करने की अनुमति देता है | सरकार इन अधिकारों को तभी प्रतिबंधित करेगी जब संवैधानिक संरचना को खतरा हो, सरकार की सुरक्षा को खतरा हो, नैतिकता, स्वास्थ्य या देश की सुरक्षा को खतरा हो | यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या समूह के धार्मिक कार्यो में बाधा डालता है तो यह कानून का उल्लंघन होगा |

कानून के द्वारा तीन अलग-अलग स्तरों पर तीन तरह के संगठनों को मान्यता दी गई है- समूह, स्थानीय संगठन, केन्द्रीकृत संगठन | इस कानून के द्वारा धार्मिक संघों से कहा गया है कि वे नाबालिगों को बिना उनके माता-पिता की सहमति के धार्मिक शिक्षा नहीं देंगे, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक शिक्षा पाने का अधिकार होगा | किसी भी सरकारी अधिकारी को यह अधिकार नहीं होगा कि वह अपने पद का इस्तेमाल किसी विशेष धर्म को संरक्षण देने में करे[5] |

[5] Federal Law No. 125-Fz Of September 26, 1997 On The Freedom Of Conscience And Religious Associations", Avilable at : http://host.uniroma3.it/progetti/cedir/cedir/Lex-doc/Ru_I_1997.pdf Accessed on: February 1, 2016.

ग्रेट ब्रिटन में चर्च के वरिष्ठ पदों पर नियुक्तियां क्राउन द्वारा की जाती हैं और 26 दिओससन बिशपों के लिए "हाउस ऑफ़ लार्ड" में स्थान सुरक्षित होते है | इन बिशपों को अध्यात्मिक लार्ड कहा जाता है[6] |

वर्तमान समय में विश्व के अधिकाश देशों के द्वारा धर्मनिरपेक्षता को अपनाया गया है | धर्मनिरपेक्षता के अंतर्गत नागरिकों को अपने धर्म को मानने की आजादी होती है और राज्य धर्म से अपने आप को तटस्थ घोषित करता है अर्थात राज्य किसी विशेष धर्म को मानने के लिए नागरिको को बाध्य नहीं करता है |

कुछ देशों में धर्म के आधार पर शासन के स्वरूप में परिवर्तन होता रहा है | ईरान में 1979 में हुए इस्लामिक क्रांति के द्वारा मुहम्मद रजा शाह पहलवी के शासन का तख्ता पलट कर अयातुल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में इस्लमिक शासन व्यवस्था की स्थापना की गयी (Goodarzi, 2013) | नेपाल जो कि पहले एक हिन्दू राष्ट्र था वर्तमान समय में वह एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है | इस प्रकार राज्य और धर्म के सम्बन्ध परिवर्तित भी होते रहते है ईरान जो की पहले एक धर्म निरपेक्ष राज्य था इस्लामिक क्रांति होने के बाद एक धार्मिक राज्य के रूप में परिवर्तित हो गया और नेपाल राजतंत्रीय शासन व्यवस्था के अंतर्गत एक हिन्दू राष्ट्र था किन्तु लोकतान्त्रिक देश के रूप में धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था को अपनाया गया |

हटिंगटन का यह दावा कि चर्च और राज्य का विभाजन पाश्चात्य सभ्यता की विशेषता है, जिसके कारण पाश्चात्य देश लोकतंत्र की तरफ जा रहे है, जबकि अन्य सभ्यताओं में

[6] Companion to the Standing Orders and guide to the Proceedings of the House of Lords". May 2010. Retrieved 1 July 2011 https://www.parliament.uk/documents/publications-records/House-of-Lords-Publications/Rules-guides-for-business/Companion-to-standing-orders/Companion-to-Standing-Order-2015.pdf, Accessed on: feburary 2, 2016.

लोकतंत्र मुश्किल से ही प्राप्त होता है (Huntington, 1996) ब्रिटेन के उदाहरण पर खरा नहीं उतरता | यद्यपि ब्रिटेन को लोकतंत्र की जननी माना जाता है और माना जाता है कि आधुनिक व्यवस्था ब्रिटेन की देन है किन्तु आज भी ब्रिटेन में धर्म और राज्य का अलगाव नहीं पाया जाता है | वही तुर्की जैसे राज्य भी देखे जा सकते है जो इस्लामिक शासन व्यवस्था के बाद राज्य का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप धारण कर लेते है | वर्त्तमान समय में अधिकाशतः लोकतान्त्रिक देशों के द्वारा धर्मनिरपेक्ष संविधान को अपनाया गया है |

परिभाषा, प्रासंगिकता एवं क्षेत्र:

वर्तमान समय में रूस के चेचन्या प्रान्त में इस्लामिक चरमपंथ और आतंकवाद रूस की स्थिरता और अखंडता के लिए खतरा बना हुआ है और इस समस्या के समाधान के लिए रूस द्वारा किये गए अब तक के प्रयास उपयुक्त साबित नहीं हुए हैं | इस लघु शोध के द्वारा चेचन्या में जारी संघर्ष का विश्लेषण कर इसकी तहों में जाने का प्रयास किया जाएगा, समस्या के मौलिक कारणों की खोज की जाएगी और संभावित समाधान सुझाने का प्रयास किया जाएगा | चेचन्या के सन्दर्भ में इस्लाम और राज्य के अध्ययन में चेचन्या में प्रारंभ से ही रूस के साथ इस्लाम का टकराव रहा है; चाहे वह जार के शासनकालों में मुरीद आन्दोलन हो, या सोवियत दौर में नास्तिक साम्यवादी सरकार के द्वारा इस्लाम को नियंत्रित करने के प्रयास हो, या वर्त्तमान रूस में दो चेचेन युद्धों तथा उसमें इस्लाम की भूमिका हो | इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि इस टकराव के विषय मूलतः क्या है ? और उनके समाधान के लिए रूस द्वारा क्या प्रयास किए गए, विशेषकर 1991 के बाद लोकतान्त्रिक तरीके से चुनी गई सरकार ने, और उनके क्या परिणाम हुए तथा चेचन्या में वर्तमान समय में इस्लाम का स्वरुप क्या है ?

अध्ययन का उदेश्य:

1. जारवादी रूस में चेचेन मुस्लिमों के प्रति जार की नीतियाँ और उस पर मुसलमानों द्वारा की गई प्रतिक्रिया का अध्ययन |

2. सोवियत सरकार के द्वारा इस्लाम के प्रति अपनायी गई नीतियों का अध्ययन |

3. चेचेन्या में वहाबी विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन |

4. दोनों चेचन्या युद्ध के दौरान इस्लामिक अतिवादी विचारधाराओं का चेचन्या और रूस पर पड़े प्रभाव का अध्ययन |

5. पुतिन की चेचेन इस्लाम के प्रति नीति का अध्ययन |

6. चेचन्या में इस्लाम को उग्र बनाने में बाहरी शक्तियों के योगदान का अध्ययन |

शोध प्रश्न:

1. चेचन्या में इस्लाम रूस विरोधी क्यों है ?

2. क्या वर्त्तमान समय में चेचन्या में जारी इस्लामिक अतिवाद में बाहरी तत्वों का भी योगदान है ?

3. रुसी सरकार के द्वारा चेचन्या में इस्लामिक अतिवाद को कम करने के लिए कौन सी नीतियाँ अपनायी गई ?

4. पुतिन की चेचन्या में इस्लाम के प्रति क्या नीतियाँ रही है ?

प्राकल्पना:

1. रुसी सरकार के द्वारा चेचन्या में इस्लाम को नियंत्रित करने के लिए सहयोग और प्रतिरोध की नीतियाँ अपनायी जा रही है |

2. चेचन्या में जारी इस्लामिक अतिवादी गतिविधियो में वैश्विक आतंकवादी तथा चरमपंथी संगठनों का भी हाथ है क्योंकि वह यहाँ पर अपना प्रभाव जमाकर एक इस्लामिक राज्य की स्थापना करना चाहते हैं |

शोध विधि:

यह अध्ययन ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है | यह अध्ययन चेचन्या के सन्दर्भ में इस्लाम और राज्य के सम्बन्धों के आलोचनात्मक विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित है | इस प्रस्तावित शोध में चेचन्या में इस्लाम और रूस के बीच विभिन्न शासनकालों में जो सम्बन्ध में रहे है, उनका तथा इस्लाम के बदलते स्वरुप का परीक्षण व विश्लेषण किया गया है | इस प्रस्तावित शोध में स्वतंत्र और आश्रित दोनों चरों का प्रयोग किया गया है | स्वतंत्र चर के रूप में हम चेचन्या के लोगों की रूस से अलग होने की भावना को ले सकते हैं तथा आश्रित चर के रूप में हम इस्लाम को देख सकते है | इन दोनों चरों के आधार पर हम निगमनात्मक निष्कर्ष पर पहुँचे है | यह प्रस्तावित शोध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होगा | प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत विभिन्न सरकारी दस्तावेजों, रिपोर्टों जो कि रूस तथा अन्य संगठनो के द्वारा किया गया है और इसी के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय संगठनों के प्रस्ताव, संधियाँ, घोषणापत्रों, सर्वे, तथा अन्य तथ्यों की सहायता ली गई है | द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत सन्दर्भ किताबों, जर्नल, आर्टिकल, समाचारपत्रों, पत्रिकाओं

और इन्टरनेट सामाग्री को प्रयोग में लाया गया है और सेमिनार, वर्कशॉप की सूचनाओं द्वारा शोध को सम्पुष्ट किया गया है |

अध्यायीकरण:

अध्ययन के अध्यायीकरण के लिए योजना

1. प्रस्तावना: सिद्धांत का ढ़ाचा और साहित्य समीक्षा

पहले अध्याय में विषय की रुपरेखा की व्याख्या किया गया है | इसके अतिरिक्त विषयवस्तु और शोध संरचना पर प्रकाश डाला गया है | सम्बंधित साहित्य का एक संक्षिप्त सर्वे भी इस अध्याय में दिया गया है | इस अध्याय में धर्म और धर्म राज्य संबंधों पर विमर्श किया गया है |

2. जार और सोवियत शासनकाल में राज्य और इस्लाम

दूसरे अध्याय में जार और सोवियत दौर में राज्य और इस्लाम पर प्रकाश डाला गया है | इस अध्याय में जार के निरंकुश शासन में इस्लाम के प्रति क्या नीतियाँ रही और उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई और सोवियत दौर में इस्लाम के प्रति क्या नीतियाँ रही और उसके क्या परिणाम हुए इस पर चर्चा किया गया है |

3. 1991 के पश्चात् रूस की इस्लाम के प्रति नीति

तीसरे अध्याय में 1991 से अब तक रूस की इस्लाम के प्रति क्या-क्या नीतियाँ रही हैं और एक लोकतान्त्रिक देश होने के नाते इस्लाम के प्रति उसका व्यव्हार कैसा रहा और उस पर इस्लाम की क्या प्रतिक्रिया रही, इस पर विमर्श किया गया है |

4. 1991 के उपरान्त चेचन्या में इस्लाम

चतुर्थ अध्याय में यह चर्चा की गई है कि 1991 के बाद तथा 2015 तक चेचन्या में इस्लाम का क्या स्वरुप रहा है तथा उस पर रुसी सरकार की क्या प्रतिक्रिया रही है, इस विषय पर प्रकाश डाला गया है |

5. निष्कर्ष

इस अंतिम अध्याय में शोधार्थी द्वारा सम्पूर्ण शोध कार्य के निष्कर्षो को दर्शानें का प्रयास किया गया है |

CHAPTER - 2

जार और सोवियत शासनकाल में राज्य और इस्लाम

चेचन्या में इस्लाम के आगमन के पूर्व यहाँ के लोग विभिन्न मतों को मानने वाले थे | चेचन्या से प्राप्त विभिन्न पुरातात्विक साक्ष्य जैसे शिल्पकारी, स्मारक, शवों को दफनाने या अंतिम संस्कार के स्थान यह संकेत देते है कि इनके धर्म प्रकृति और खगोलशास्त्र पर आधारित थे | इस्लाम 7वीं शताब्दी के मध्य में उत्तरी काकेशस में दागिस्तान के रास्ते प्रवेश किया | अब्द-रहमान-इब्न-रबिआह के नेतृत्व में इस्लामिक सेना ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की | इसके परिणामस्वरूप उत्तरी काकेशस जो कि अब तक खाजार साम्राज्य का हिस्सा था अब वह उमय्यद साम्राज्य का एक भाग हो गया |

मुस्लिम शासकों ने इस क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण प्रशासकीय केंद्र बनाया और यहाँ के आदिवासियों को इस्लाम से परिचित करवाया | यहाँ प्रचलित कहावतों के अनुसार बाट, बर्स और तेरमोल चेचन्या में इस्लाम के पहले उपदेशक थे | 19वीं शताब्दी के मध्य तक चेचन्या में इस्लामीकरण की प्रक्रिया चलती रही | चेचेनों की प्राचीन परम्पराओं तथा अंधविश्वासों ने और इस्लामिक विश्वासों के पालन ने एक अद्भुत मिश्रण का उत्पादन किया (Jaimoukha, 2004) |

खाजार साम्राज्य, वैजेनटाइन साम्राज्य, आर्मीनिया, जार्जिया, अरब, गोल्डेन होर्ड, क्रीमियन तातार खानेती, ओटोमन साम्राज्य और अंत में रूसी साम्राज्य का प्रभाव इस क्षेत्र के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा | इस क्षेत्र में इस्लाम को फैलाने में सर्वाधिक

महत्वपूर्ण योगदान सूफियों ने दिया | यहाँ का इस्लाम स्थानीय रीति-रिवाजों से भी प्रभावित था जिसका पालन चेचेन प्राचीन काल से कर रहे थे | उत्तरी काकेशस और रूस के बीच पहला कूटनीतिक संपर्क संघर्ष के रूप में न होकर सहयोग के रूप में हुआ | 1555 में जार इवान चतुर्थ के दरबार में उत्तरी काकेशस के प्रतिनिधिमंडल जिसमें कुछ चेचेन इसाई भी शामिल थे, जार से प्रार्थना की कि वह उन्हें क्रीमियन तातार और ओटोमन साम्राज्य के द्वारा किये जा रहे लूटमार से उनकी रक्षा करे (Yayinlari,1993) |

रूस के द्वारा अस्त्राखान खानेती का अधिग्रहण और 1556 में तातार खानेती का विध्वंस उत्तरी काकेशस क्षेत्र में उसकी रूचि को दर्शाने लगा | जार इवान IV 1533 में सत्ता में आया | उसने उत्तरी काकेशस में अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए यहाँ के कुलीन लोगों को अपनी तरफ मिलाया | फारसी लोगों और तुर्कों से अपनी शत्रुता के कारण चेचन राजकुमारों ने 1587 में तेरेक गोर्दोक में दुर्ग बनाने की अनुमति इवान को दे दी | जार के दरबार में पहला चेचेन राजदूत शेख मिर्जा ओकोत्सकी था, जिसे 1588 में ड्यूक की उपाधि प्रदान की गई | चेचन्या सहित सम्पूर्ण रुसी साम्राज्य में "इवान द टेरिबल" की मुसलमानों के प्रति नीतियाँ बहुत ही कठोर रहीं | उसने मस्जिदों को ध्वस्त करवाया और मुस्लिम लोगों को ऑर्थोडॉक्स चर्च में धर्मान्तरित करने के लिए कजान में आर्कबिशप (1555) स्थापित करवाया | और तातार शहरों में प्रतिबंधित कर दिए गए | इस तरह उसके शासनकाल में इस्लाम को दबाया गया (Jaimoukha, 2004) |

"कैथरीन द ग्रेट" के समय में मुसलमानों के साथ सहिष्णुता बरती गई | 1788 में कैथरीन द ग्रेट के आदेश से "मुस्लिम स्प्रिचुअल असेंबली" आरेनबर्ग में स्थापित की

गई | यह असेंबली पूरे रुसी साम्राज्य के तहत आने वाले इस्लामिक मामलों पर अपना निर्णय देती थी | इस असेंबली के शिखर पर मुफतिअते होती थी जिसके तहत एक मुख्य मुफ़्ती होते थे और उनके अधीन 5-6 काजी होते थे | मुख्य मुफ़्ती पूरे साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले मस्जिदों के प्रबन्धों के साथ-साथ इमामों की नियुक्ति भी करते थे (Perrie and Lieven, 2006) | आरम्भ में मुफ़्ती की नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी, किन्तु 1817 में जार अलेक्जेंडर प्रथम के द्वारा यह आदेश जारी किया गया कि मुफ़्ती का चुनाव सम्राट के साथ-साथ मुस्लिम समुदाय की सहमति से किया जा सकता है | इस तरह जार अलेक्जेंडर प्रथम ने मुफ़्ती के चयन में मुस्लिम समुदाय की भूमिका को भी महत्त्व दिया | अधिकांश मुफ़्ती और उनके सहयोगी जैसे मुल्ला इत्यादि कजान के तातार थे (Westerlund and Svanberg,1999) | इस असेंबली के द्वारा मस्जिदों के निर्माण, विवाह और तलाक के मामले, वक्फ, सम्पतियों के मामले, माता-पिता के अवज्ञाकारी बच्चों के मामले इत्यादि देखे जाते थे | सोवियत संघ के सत्ता में आने के पश्चात “मुस्लिम स्प्रिचुअल असेंबली” आरेनबर्ग के स्थान पर “सेंट्रल स्प्रिचुअल बोर्ड ऑफ़ मुस्लिम्स” का गठन किया गया (Yaacov, 2000) |

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक रूस ने स्त्रावोपोल क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और दक्षिणी पहाड़ों पर सैनिक हमलों की तैयारी कर रहा था | 1760 की शुरुवात तक उत्तरी काकेशस के मैदानी भागों में सैन्य-किलों की एक लम्बी श्रृखला तैयार हो चुकी थी | 1763 में रूस ने मोज्दोक में, 1790 में व्लादिकव्काज़ में किलों का निर्माण करवाया | 1780 के शुरुवात में कैथरीन द ग्रेट ने उत्तरी काकेशस में विस्तारवादी नीतियाँ आरम्भ कर दिया | 1806 में रूस ने कबर्दा, देबेंट के नेताओं को अपने प्रभाव में ले लिया | रूस के द्वारा

किये जा रहे इस तरह के विस्तार ने उत्तरी काकेशस के पर्वतीयप्रदेश वासियों के संघर्ष को तैयार किया (king, 2008) |

17वीं शताब्दी की शुरुवात से ही इसाई कोसाक्स तेरेक नदी के किनारे बसना आरंभ कर दिया | रुसी शासकों ने सावधानीपूर्वक मूल निवासी मुसलमानों के खिलाफ इसाई कोसाक्स का प्रयोग करने लगे | सेंट पीटर्सबर्ग की नीतियाँ यह थी कि यहाँ के निवासियों को रुसी ऑर्थोडॉक्स इसाईयत में धर्मान्तरित किया जाए | इस तरह यहाँ पर राजनीतिक प्रभुत्व के साथ ही साथ सांस्कृतिक और अध्यात्मिक प्रभुत्व स्थापित करने का भी प्रयास किया गया | चेचन्या में रुसी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को चेचेनों ने अपने धर्म के लिए हानिकारक माना (Reynolds, 2004) |

इसके साथ ही साथ पहाड़ो पर रहने वालों की अर्थव्यवस्था मैदानी क्षेत्रों के निवासियों के साथ व्यापार पर निर्भर करती थी, उन्हें लगा कि रूसियों के कारण उनके इस संपर्क में बाधा पड़ सकती है | इस तरह वे अपने सामूहिक शत्रु के खिलाफ एकजुट हो गए, और उन्होंने रुसी विस्तारवाद के खिलाफ एक जोरदार अभियान छेड़ दिया (Jaimoukha, 2004) |

सूफीवाद में मुरीद का तात्पर्य होता है मुर्शिद (अध्यात्मिक गुरु) के प्रति प्रतिबद्ध हो जाना | शिष्य को सालिक या मुरीद कहा जाता है | सालिक के मुर्शिद के शरण में आने के बाद मुर्शिद सालिक से यह अपेक्षा रखता है प्रारंभिक स्तर में वह जो भी सालिक को सिखाए, सालिक उसे स्वीकार करे | इस प्रक्रिया के दौरान मुरीद को अपने मुर्शिद के माध्यम से विशिष्ट अध्यात्मिक अहसास प्राप्त होता है | यदि मुरीद की प्रगति अच्छी रहती है तो मुर्शिद उसे खिरका प्रदान करता है (Esposito, 2003) | इस तरह सूफीवाद

में मुरीदवाद एक अध्यात्मिक विषयवस्तु है किन्तु जारवादी रूस में इसका राजनीतिक प्रयोग किया गया | उत्तरी काकेशस में 1830-1859 के दौरान चले मुस्लिम प्रतिरोध, जिसका कि नेतृत्व काजी मुल्ला, हमजा बेक और इमाम शामिल ने किया | सोवियत और रुसी लेखकों ने मुरीदवाद शब्द का प्रयोग कट्टर, पतनशील और अबौद्धिक प्रकृति के रूप में किया है जबकि यह उत्तरी काकेशस, में रुसी अतिक्रमण के खिलाफ चले मुस्लिम प्रतिरोध के प्रमुख प्रतीक के रूप में कार्य किया (Bennigsen and Wimbush, 2000) | काकेशस में मुरीदवाद आन्दोलन के नेताओं ने शरिया और सूफीवाद को एक बनाने का प्रयास किया, वे शरिया और सूफीवाद में कोई भिन्नता नहीं मानते थे | चेचन्या सहित सम्पूर्ण काकेशस में मुरीदवाद आन्दोलन के अंतर्गत प्रचलित गैर-इस्लामिक नियमों को हटाने का और शरियत को लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का प्रयास किया गया (Algar, 1990) | काकेशस क्षेत्र में मुरीदवाद आन्दोलन नक्श्बंदिया के खालिदी शाखा की विशेषता को प्रकट करता था | खालिदी शाखा के नेता खालिदी बगदादी ने पूरे काकेशस क्षेत्र में अनेक मदरसे स्थापित करवाया |

शेख मंसूर की शिक्षा नक्श्बंदिया सूफी स्कूल के तहत दागिस्तान में हुई थी (Schaefer, 2010) | शेख मंसूर 1784 में इमाम के रूप में चेचन्या आए तो वे चेचन्या में रुसी अधिपत्य से काफी दुखी हुए और उन्होंने चेचन्या के लोगों को आदेश दिया कि वे अपने पुराने मूर्तिपूजक विश्वासों को छोड़ दें जैसे मृतकों की पूजा और तम्बाकू का प्रयोग करना बंद कर दें तथा अदत के स्थान पर शरियत का पालन करें, जिससे इस्लामिक एकता स्थापित हो सकें | किन्तु इस्लामी परम्परा चेचन्या में उतना मजबूत नही थी जितना दागिस्तान के पहाड़ी क्षेत्रों में था, इसलिए धर्म युद्ध घोषित किया गया जिससे इस्लामिक एकता लायी जा सके |

मंसूर के अनुसार अल्लाह के संदेशवाहक पैगम्बर मुहम्मद साहब का मानना था कि अल्लाह ने दिखाया है कि प्रत्येक मानव को उस कारण के लिए अवश्य जीवित रहना चाहिए, जो कारण कुरान ने दिया है, इसलिए हमें कुरान के आदेशानुसार एकजुट होकर रुसी प्रभुत्व के खिलाफ युद्ध करना चाहिए, अल्लाह अवश्य ही उन्हें दण्डित करेगा (Nart, 1991) | इमाम मंसूर का यह सन्देश चेचेनों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ | उनसे न केवल चेचेन प्रभावित हुए बल्कि अन्तेप के उलेमा सय्यिद खलील इफन्दी अपने 200 मुरीदों के साथ रूसियों के खिलाफ जिहाद करने के लिए उत्तरी काकेशस आ गए (Bice, 1990) | 1785 में उत्तरी काकेशस के लोगों ने अल्द्य में एकत्रित होकर मंसूर को अपना सांसारिक और अध्यात्मिक नेता अर्थात इमाम चुना | इससे इमाम मंसूर का प्रभाव बहुत बढ़ गया | दागिस्तान के शक्तिशाली खान और बेग तथा अद्य्घे के राजकुमार ने उन्हें सन्देश भेजा कि रूस के खिलाफ युद्ध में वे उनके साथ आने के उत्सुक है | इमाम मंसूर की योजना यह थी कि सभी काकेशस लोगों को एक परिवार की तरह एकत्रित किया जाए | इसके लिए सर्वप्रथम उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर सभी मुसलमानों के लिए तीन दिन के उपवास की घोषणा की | इसके बाद उन्होंने अपने मुरीदों के साथ गाँवों का दौरा किया और उन्हें अपने साथ लाने के लिए धार्मिक ज़िक्र का सहारा लिया (Nart, 1991) |

रुसी साम्राज्य ने प्रारम्भ में उन्हें बदनाम करने का प्रयास किया किन्तु अन्त में उन्हें गिरफ्तार करने का निश्चय किया | इमाम मंसूर को गिरफ्तार करने के लिए 5,000 सैनिकों की एक टुकड़ी भेजी गई | चेचन योद्धाओं ने सुंज के युद्ध में हजारों रुसी सैनिकों को मार डाला | मंसूर ने किज्ल्यर दुर्ग को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया किन्तु इसमें वे असफल रहे | रुसी-तुर्की युद्ध के दौरान वे उत्तरी-पश्चिमी काकेशस

के अद्ग्गेया चले गए जहाँ वे इस्लामिक परंपरा को मजबूत करने का कार्य करने लगे | मंसूर ने रुसी लोगों के खिलाफ हमले में अद्ग्घे और नोगाई लोगों का नेतृत्व किया लेकिन वे कई बार पराजित हुए | 1791 में रुसी सेना ने इमाम मंसूर को गिरफ्तार करके सेंट पीटर्सबर्ग भेज दिया और 1794 में उनकी मृत्यु हो गई (Schaefer, 2010) |

इमाम मंसूर की मृत्यु के बाद भी काकेशस में मुरिद्वाद स्थानीय शेखों के प्रयास से चलता रहा, इसका पुनः सशक्त रूप गाजी मुहम्मद या काजी मुल्ला के प्रयासों द्वारा दिखाई पड़ता है | काजी मुल्ला एक प्रसिद्ध इस्लामिक विद्वान थे और ये काकेशस इमामत के पहले इमाम थे | इमाम मंसूर की तरह ही काजी मुल्ला ने भी दागिस्तान के मदरसे से शिक्षा प्राप्त की | उत्तरी काकेशस में रुसी प्रतिरोध के खिलाफ इमाम मंसूर द्वारा किये गए संघर्ष के प्रति ये सजग थे | इनका मानना था कि उत्तरी काकेशस से रुसी सैनिकों को तब तक नहीं हटाया जा सकता जब तक कि उत्तरी काकेशस के लोगों को धर्मयुद्ध के बैनर तले नहीं लाया जाता है, इसलिए मुरिद्वाद का पुनरुथान करना आवश्यक है | मुल्ला ने अपने आप को बहुत विख्यात नक्श्बंदिया शेख इस्माइल कुर्द्मिरी के प्रति समर्पित कर दिया | 1823 से मुल्ला ने लोगों और आदिवासियों को उपदेश देना आरंभ कर दिया | ठीक इसी समय से ये शेख समलेद्दीन-अल-कुमुकी से प्रभावित हुए, जो कि अदब-उल-मेर्ज़िय्या तरीकत-नाक्श्बंदिया के लेखक थे (Bice, 1990) | काजी मुल्ला एक लम्बे समय तक लोगों को धार्मिक शिक्षा देते रहे इसके पश्चात् सभी बड़े अदिवासी नेताओं को जिनमें अवर के खान शेख सयबानी, तर्खो के खान हाजी युसूफ, घाज़ी कुमुक के खान मुल्ला मुहम्मद तथा अन्य की उपस्थिति में काजी मुल्ला को अपना धार्मिक और राजनीतिक नेता चुना गया |

इन्होने शरिया, अध्यात्मिक शुद्धिकरण पर बल दिया और आक्रमणकारी रूसियों के खिलाफ जिहाद का आह्वान किया | काजी मुल्ला मुरीदवाद के प्रमुख समर्थक थे और उत्तरी काकेशस में धार्मिक और राष्ट्रीय भावना को बढ़ाने के लिए कुरान के नियमों का प्रयोग किया | काजी मुल्ला ने उपदेश दिया कि जिहाद तब तक संभव नहीं है जब तक उत्तरी काकेशस के लोग इस्लामिक नियमों और अदत के मिश्रित प्रयोग की जगह शरियत का कठोरतापूर्वक पालन करे | मुल्ला ने धर्मयुद्ध का आह्वान किया, उन्होंने एक आदेश जारी किया कि वाइन को सार्वजनिक रूप से नष्ट किया जाए | 1830 में खुन्ज़ख की राजधानी अवर को अपने अधीन करने का असफल प्रयास किया | 1831 में उत्तरी दागिस्तान पर सफल हमला किया किन्तु 1832 में काजी मुल्ला रुसी सेना के द्वारा पकड़े गए (Gammer, 1992) |

हमजाद बेक खुज़ख के रहने वाले थे | अक्टूबर 1832 में काजी मुल्ला की मृत्यु होने के कारण तथा शमिल के गंभीर रूप से घायल होने के कारण हजमत बेक को तुरंत इमाम नियुक्त किया गया | इन्होनें कूटनीति और सैन्य शक्ति दोनों का प्रयोग किया | बेक ने रूसियों के साथ बातचीत करने का प्रयास किया किन्तु रूसियों ने किसी भी प्रकार का समझौता करने से मना कर दिया | इमाम के रूप में हजमत बेक अधिक प्रभावी नहीं रहे |

इमाम हमज़त बेक की मृत्यु के बाद शेख शमिल इमाम चुने गए | शेख शमिल का जन्म 1795 में गिमरी में हुआ, ये अवर आदिवासी समूह के सदस्य थे | अपनी आरम्भिक अवस्था से ही ये इस्माइल कुर्देमिरी के मुरीद थे | धार्मिक और सूफी शिक्षा के दौरान शामिल पर अपने तीन शिक्षकों का बहुत प्रभाव पड़ा - शेख मुहम्मद यारागी, शेख ग़ाज़ी

कुमिकी, शेख इस्माइली कुर्देमिरी, ये सभी खालिदी बग़दादी के प्रति समर्पित थे (King, 2008) |

जब शमिल 29 साल के हो गए तब वे इस आन्दोलन के नेता चुने गए | काकेशस के अन्य आदिवासी समूहों से भिन्न होने पर भी धार्मिक कारणों के आधार पर उन्हें नेता चुना गया | 1835 में इमाम शामिल ने एक काउंसिल बुलाया जहाँ सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया गया कि उनके सभी सदस्य उन खानों के खिलाफ युद्ध लड़ेगें जो रूस के सहयोगी हैं | आरंभ में इनके मुख्य समर्थक चेचेन, दागिस्तानी और कुछ अन्य उत्तरपूर्वी आदिवासी थे | यद्यपि कुछ मूलनिवासी सामंत इनके विरोधी थे किन्तु थोड़े से ही समय में इनके समर्थकों ने सप्सिग क्षेत्र में 1839 में "नेशनल साल्वेशन असेंबली" के नाम से मजबूत एकता बना लिया, जहाँ उन्होंने यह घोषणा किया कि काले सागर और कैस्पियन सागर के बीच की भूमि एक राष्ट्र है और हम ककेशस के सभी भागों से विदेशी सेना के निकलने तक धर्म युद्ध जारी रखेगें (King, 2008) | 1847 में शेख शामिल और मुहम्मद एमिन ने उत्तरी ककेसिया के नेताओं के साथ बैठक बुलाई, जहाँ उन्होंने यह निश्चय किया एक तरफ जहाँ वे अपने जीवन को इस्लाम के नियमों के अनुसार संचालित करेगें, वहीँ दूसरी तरफ वे उस सामाजिक संरचना का उन्मूलन करेंगे जो कि जाति व्यवस्था और सामाजिक पद्सोपान पर आधारित है, केवल अल्लाह ही सर्वोच्च है बाकी सभी उसके मानने वाले एक सामान है (Bice, 1990) |

शेख शमिल के नेतृत्व में मुरीदवाद ने उत्तरी काकेशस के सभी भागों में अपनी मजबूत पकड़ बना चुका था केवल ओसेटिया और जार्जिया के कुछ इसाई आदिवासी रूस के साथ अपना मजबूत सम्बन्ध बनाये हुए थे | शमिल ने काकेशस के सभी भागों में अपने प्रतिनिधि भेजे | ये प्रतिनिधि काकेशस के पश्चिमी भागों में मुरीदवाद फ़ैलाने में अधिक

सफल हुए, इसका कारण यह था कि इस क्षेत्र में इस्लामीकरण की प्रक्रिया देर से आरंभ हुई विशेषकर 19वीं शताब्दी में (Demirpolat, 2007) |

शमिल के इमामत की प्रारम्भिक वर्षों में उनके मुरीदों ने रुसी सेना के खिलाफ कई युद्धों में विजय प्राप्त की, किन्तु बाद में यह जारी न रह सका इसका कारण यह था कि ओटोमन साम्राज्य इन्हें पर्याप्त मात्रा में सहायता नहीं उपलब्ध करा रहा था | वास्तव में इमाम शमिल ने स्वयं ओटोमन सुल्तान अब्दुलअज़ीज़ (Morison, 1985) और ईरान के शासक मुहम्मद शाह (Gammer, 1991) को पत्र लिखा किन्तु फिर भी वे मुरीद आन्दोलन के लिए पर्याप्त सहायता नहीं उपलब्ध करा सके |

रूस ने केन्द्रीय काकेशस में अपने सैनिकों की संख्या में भारी वृद्धि कर दी जिसके फलस्वरूप 1857 में रुसी सेना को शमिल के मुरीदों के विरुद्ध कई विजय प्राप्त हुई | इसी तरह रुसी सेनाओं ने काकेशस के रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भागों पर अपना अधिकार जमा लिया, विशेषकर 1859 में वेदोना पर | 6 सितम्बर 1859 को रुसी सेनाओं ने इमाम शामिल को बंदी बना लिया | इस तरह मुरीद आन्दोलन उत्तरीपश्चिमी काकेशस में अपने अंत को आ पहुंचा | लेकिन अन्य सूफी शाखा जैसे कादरिया शाखा के अनुयायी अपने आन्दोलन को लगातार चेचन्या और दागिस्तान में चलते रहे (Bennigsen, 1988) |

इमाम शमिल के समर्पण कर देने से चेचेन प्रतिरोध का अंत नहीं हुआ हालाकि चेचन्या पूरी तरह से उजड़ गया था | शेख बैसुन्गुर बेनो शमिल के अधीनस्थ एक योद्धा थे, उन्होंने इमाम शामिल के साथ समर्पण करने से इंकार कर दिया | शेख बैसुन्गुर ने कई

वर्षों तक रूसियों के खिलाफ संघर्ष किया, 1861 में ये गिरफ्तार हुए और फांसी पर चढ़ा दिए गए | मई 1860 में आर्गुन और इचकेरिया में अतबे अतएव और उमा दुएव के नेतृत्व में विद्रोह हुआ, प्रतिक्रिया स्वरुप रुसी सेना ने इचकेरिया के 15 गाँवों को जला दिया और नागरिकों की हत्या की और बचे हुए लोगों को साइबेरिया भेज दिया | भय के इस अभियान का अंत 1861 के वसंत में हुआ जब इन विद्रोहों के नेताओं को निर्वासित कर दिया गया |

कादरिया आन्दोलन 19वीं शताब्दी के 7वे दशक में आरम्भ हुआ | 19वीं शताब्दी में जब नक्शबंदिया प्रतिरोध अपने अंत पर आ गया तो मुस्लिम हतास हुए, रुसी सेनाओं ने अपने अधिग्रहित क्षेत्रों में मुसलमानों को परेशान करने की सारी हदें पार कर दी | इससे प्रभावित सभी लोगों ने आध्यत्मिक पुनरोदय के लिए कादरिया शाखा को स्वीकार किया | किन्तु जल्द ही रुसी सरकार इनके खिलाफ हो गई वह मुसलमानों के किसी भी प्रकार के संगठित रूप को स्वीकार करने के लिए तैयार नही थी, उसे इस बात से कोई फर्क भी नहीं पड़ता था कि वह उसे नुकसान पहुँचाने वाला है या नहीं | इसी कारण से जब एक बार कादरिया शाखा के लोगों ने कुअली और उर्स प्रारंभ किया था तो रुसी सैनिकों ने खुलेआम गोलीबारी की जिससे सैकड़ों लोग घटनास्थल पर मारे गए (Enders, 1985) |

कादरिया शाखा की स्थापना बगदाद में हुई थी और नक्श्बंदिया शाखा के बाद यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण सूफी शाखा थी | यह अरब व्यापारियों के द्वारा तुर्किस्तान विशेषकर फरगाना घाटी में लायी गई | 1850 में इस शाखा का प्रचार-प्रसार कुंटा हाजी के द्वारा उत्तरी काकेशस में किया गया | यही कारण है कि इसे कुंटा हाजी तरीकत भी कहते है | इमाम शामिल के बहुत से योद्धाओं ने जार प्रशासन के कठोर व्यवहार के कारण इस शाखा को ग्रहण कर लिया (Bennigson, 1985) |

कुंटा हाजी युद्ध के बजाय शांतिपूर्ण साधनों के द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति पर जोर देते थे | उनके अनुसार युद्ध एक क्रूरता है, आपकी शक्ति आपकी बुधिमत्ता, धैर्य और साफगोई है | आपका शत्रु आपकी इस शक्ति के आगे नहीं टिक पायेगा और शीघ्र ही पराजित हो जाएगा | किसी के भी पास इतनी शक्ति नहीं है कि वह आपको पराजित कर सके यदि आप अपने सच्चे विश्वास से भटकते नहीं है | मै तुर्की से सहायता मांगने पर विश्वास नहीं करता क्योंकि तुर्की के सुल्तान हमें स्वतंत्र नही करना चाहते है | इसका कारण साफ है वह स्वयं रुसी जार की तरह ही तानाशाह है | मैंने अपनी आँखों से देखा है कि अरब देशों में तानाशाही को छुपाने के लिए शरियत का इस्तेमाल किया जाता है | युद्ध अल्लाह को प्रसन्नता नहीं देता है | यदि वे तुम्हे आदेश देते है कि तुम चर्च में जाओ, तो तुम जाओ क्योंकि यह केवल एक इमारत है | यदि वे तुम्हे आदेश देते है कि तुम सलीब को पहनो, तो तुम पहनो क्योकि यह केवल लोहे की एक चीज है, फिर भी तुम अपनी आत्मा और ह्रदय से मुस्लिम रहोगे | किसी खराब व्यक्ति को तुम अपनी अच्छाई और प्यार से पराजित कर दो, लालची को अपनी उदारता से पराजित कर दो, कपटी को अपनी ईमानदारी से पराजित कर दो (Eldibiev, 2001) |

कुंटा हाजी ने इमाम का पद लेने से इंकार कर दिया, क्योकि वह रुसी साम्राज्य से शत्रुता नहीं लेना चाहते थे | जार प्रशासन के अनुरोध पर अधिकारिक इस्लामिक विद्वानों ने जैसे अब्दुल्काद्यर खोर्दयेव, मुस्तफा अब्दुलायेव ने धार्मिक विषय पर कुंटा हाजी के साथ सार्वजानिक बहस की और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि कुंटा हाजी की शिक्षा इस्लाम के खिलाफ है, किन्तु इस सार्वजानिक बहस के पश्चात कुंटा हाजी की प्रसिद्धी में और वृद्धि हुई | कुंटा हाजी को खतरे के रूप में देखते हुए तेरेक के गवर्नर-जनरल ने उन्हें गिरफ्तार करने के आदेश दिए | 1863 में नोवोचेर्कास्स्क में कुंटा हाजी गिरफ्तार

कर लिए गए | इस गिरफ्तारी के कारण डैगर विद्रोह हुआ, जिसमें कुंटा हाजी के लगभग तीन हज़ार मुरीदों ने उनकी रिहाई के लिए प्रदर्शन किया | इस विद्रोह को जनरल तुमनोव द्वारा कुचल दिया गया (Eldibiev, 2001) |

जिस तरह विद्रोह को कठोर उपायों द्वारा कुचला गया, उससे यह आन्दोलन समाप्त नहीं हुआ बल्कि भूमिगत रहकर अपने आप को जिन्दा रखा और बहुत ही तेजी के साथ चेचन्या और इनगुशेतिया में फैला | रूसियों का यह अनुमान गलत साबित हुआ कि उन्होंने इस आन्दोलन को कुचल दिया क्योकि आने वाले वर्षों में बहुत से विद्रोह हुए | नक्शबंदिया और कादरिया शाखा के अनुयायी रुसी अधिग्रहण को समाप्त करने के लिए एकजुट हो गए (Jaimoukha, 2004) |

अप्रैल 1877 से रूस और तुर्की के बीच युद्ध आरंभ हो गया | इन्स्ताम्बुल में प्रवासी उत्तरी काकेशस के लोग इमाम शामिल के बड़े पुत्र गाजी मुहम्मद के नेतृत्व में पूर्वी तुर्की फ्रंट के लिए एकत्रित होने लगे | चेचन्या और दागिस्तान में नक्शबंदिया और कादरिया दोनों के ही मुरीद अली बेक हाजी अल्दानोव और हाजी मुहम्मद के नेतृत्व में विद्रोह कर दिए | प्रवासी और स्थानीय लोगों के बीच सीधा संपर्क था | हालाँकि रुसी सेना ने जनरल स्विस्तुनोव के नेतृत्व में विद्रोह को बुरी तरह कुचल दिया | अली बेक सहित इस विद्रोह के बड़े नेताओं को गिरफ्तार करके फांसी पर लटका दिया गया और हजारों लोगो को साइबेरिया भेज दिया गया | जार ने अपने साम्राज्य के कुछ हिस्सों में मुसलमानों को ईसाइयत में धर्मान्तरित करने का प्रयास किया और कुछ हिस्सों में मुस्लिम धार्मिक संगठनों को बढ़ावा दिया | उत्तरी ककेशस में सूफी भाईचारे के खिलाफ जार ने क्रमिक रूप से अभियान छेड़ा | सूफीवाद के नेताओं को या तो मारा गया या तो उन्हें जेल भेज दिया गया और उनके समर्थकों ने आटोमन साम्राज्य में शरण लिया | ठीक इसी समय

जार ने अपने प्रति वफादार उलेमाओं को उत्तरी काकेशस में भेजा जिन्होंने सूफी समर्थकों को सांप्रदायिक और कट्टरपंथी घोषित किया | हालाँकि ऐसे उलेमाओं को बहुत ही कम लोगों का समर्थन प्राप्त था |

जारशाही अपने पतन के आखरी समय में इस्लाम के प्रति कुछ उदार हो गया | जार ने चेचेनों को अपने संस्कृति बनाये रखने की आज्ञा दे दी | प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुवात में उत्तरी काकेशस के लिए "काकेशस कैवेलरी डिवीज़न" बनायी गई, जो अपने सदस्यों के सैन्य दक्षता, बहादुरी और अनुशासन के लिए जानी गई | रुसी गृहयुद्ध के समय यह लाल सेना की विरोधी थी | इसके परिणामस्वरुप 1919 के अंत तक यह डिवीज़न भंग कर दी गई (Jaimoukha, 2004)|

नास्तिक बोलशेविकों के विरुद्ध नक्शबंदिया ने धर्म युद्ध की घोषणा कर दी | जबकि अन्य मुस्लिम यह निश्चय नही कर पा रहे थे कि वे सफेद सेना और लाल सेना मे से किसे चुने, जिन लोगों को चेचन्या से बलात् निकला गया था उन लोगों ने बोलशेविकों का पक्ष लिया | उत्तरी काकेशस में 1920 में विद्रोह समाप्त हो जाने पर वही स्थिति हो गई जो इमाम शामिल के पराजित हो जाने के बाद हुई थी | दोनों ही स्थितियों में सूफीवाद पतन की ओर नहीं गया | जहाँ नक्शबंदिया सूफी शाखा के लोग जिहाद में व्यस्त थे वही कादरिया शाखा के लोग तेजी के साथ अपने प्रभाव में वृद्धि कर रहे थे | सूफी अपने आप को साम्यवादी कहने लगे थे उनके घोषणापत्र की कुछ चीजें उन्हें साम्यवादी के रूप में परिलक्षित कर रही थी किन्तु अभी भी उनमें पुरानी धार्मिकता विद्मान थी (Samurski, 1925) |

साम्यवाद अपने आप में एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जो अपने आप को नास्तिक घोषित करती है और यही नीति सोवियत संघ के द्वारा अपनायी गयी (Froese, 2005)| सोवियत संघ के संस्थापक लेनिन का मानना था धर्म लोगों के लिए अफीम का काम करता है यह वाक्य मार्क्स के धर्म पर आधारित सम्पूर्ण विचारधारा की आधारशिला है | मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार सभी आधुनिक धर्म और चर्च, सभी प्रकार के धार्मिक संगठन कामगार वर्ग के शोषण के लिए बुर्जुआ वर्ग के हथियार है | नवम्बर 1917 में "पीपल्स कमिसारियत फॉर इनलाईटमेंट" बनाई गई जिसने स्कूलों के पाठ्यक्रम से धार्मिक चीजों को हटाने के आदेश दिए (Fitzpatrick, 1970) |

कलेक्शन ऑफ़ लॉज़ एंड वर्कर्स एंड पीजेन्ट्स गवर्नमेंट आर्डर नंबर 6, दिसम्बर 19, 1917 में "टू आल वर्किंग मुस्लिम्स ऑफ़ रसिया एंड द ईस्ट" नाम के शीर्षक में लेनिन ने लिखा रूस के मुस्लिम, वोल्गा क्षेत्र और क्रीमिया के तातार और काकेशस के चेचेनों के पूजा के सभी स्थान और मस्जिदें जो तोड़ी गयी, विश्वास और व्यवहार जो रूस के राजा के द्वारा दबाये गए थे अब से आपके विश्वास और रीति-रिवाज, आपकी राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक संस्थान स्वतंत्र घोषित किये जाते है | बिना किसी बाधा के स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी राष्ट्रीय जीवन की व्यवस्था करें | आपको ऐसा करने का अधिकार है | जैसे रूस के अन्य सभी लोग अपने अधिकारों को जानते है वैसे ही आप भी अपने अधिकारों को जाने, आप क्रांति और इसके तत्वों (कामगारों, सैनिकों, किसानों की सोवियतों) की रक्षा करें |

अगस्त 1917 में चेचन्या के आंदी में मुस्लिम नेताओं ने एक कांग्रेस आयोजित की जिसमें उजौन हाजी और नजमुद्दीन होत्सो को चेचन्या और दागिस्तान का इमाम बनाया गया | इस कांग्रेस में शरियत को पुनः लागू करने और रुसी अतिक्रमणकारियों को हटाने

की बात की गई | इन लोगों ने 10,000 लोगों की एक सेना बनाई और 1917 के अंत तक कुछ पहाड़ी क्षेत्रों को छुड़ा लिया | रुसी और कोस्सैक लोगों ने ग्रोज्नी में रहने वाले चेचेनों के विरुद्ध हमले किये और शेख अर्सनोव, जो उनसे बात करने के लिए भेजे गए थे उनकी हत्या कर दी | सितम्बर 1919 में कबर्दा, ओसेटिया, चेचन्या, दागिस्तान ने स्वतंत्र "उत्तरी काकेसिया अमीरात" की घोषणा कर दी | उत्तरी काकेसिया अमीरात के नेता उजौन हाजी बनाए गए, जो रुसी राष्ट्रवादियों के विरुद्ध बोल्शेविकों के समर्थक थे | बोल्शेविकों ने उजौन हाजी को वचन दिया था कि वे अमीरात की स्वायतत्ता को बनाये रखेंगे | 1921 में सफेद सेना को पराजित करने के बाद अपने वादे को तोड़ते हुए बोल्शेविकों ने अमीरात का शीघ्र ही उन्मूलन कर दिया | हालाँकि कुछ पहाड़ी लोगों ने विद्रोहों को बनाए रखा लेकिन 1925 में अंतिम रूप से वे भी कुचल दिए गए (Jaimoukha, 2004) |

चेचन्या के कादिरियों ने 1920-1921 के विद्रोह में व्यापक पैमाने पर भाग नहीं लिया था किन्तु 1922-1923 के विद्रोहों में उनकी व्यापक रूप से भागीदारी थी | शेख अली मितेव जिनके लगभग 10,000 अनुयायी थे और ये "चेचेन रिवोल्यूशनरी कमेटी" के कार्यकारी सदस्य भी थे उन्होंने इस विद्रोह में भाग लिया | सोवियत स्रोतों के अनुसार इन विद्रोहों के समय चेचेन साम्यवादी पार्टी के कई सदस्य जिकारवादी (जिक्र सूफी संप्रदाय में उपासना की एक पद्धति है जिसके पालन करने वालों को जिकारिस्ट कहा जाता है, सोवियत शासन काल के दौरान इसका नकारात्मक अर्थों में प्रयोग किया जाता था) हो गए थे और साम्यवादी पार्टी के बड़े नेता जैसे चेचेन सेंट्रल एग्जीक्यूटिव कमेटी के अध्यक्ष एल्देर्ख़ानोव भी अपनी सहानभूति नहीं छिपा पाए (Perovic, 2014) |

रुसी गृहयुद्ध के समय 1921 में सोवियत सरकार ने धार्मिक संस्थान और उनके अनुयायियों के उत्पीडन के लिए धर्म-विरोधी अभियान की शुरुवात की | सोवियत संघ का मुख्य लक्ष्य सभी धर्मो का सफाया और इसके स्थान पर भैतिकतावादी विश्वदृष्टी से नास्तिकतावाद का समर्थन करना था |10 वी पार्टी कांग्रेस में एक प्रस्ताव पास किया गया, इस प्रस्ताव में कहा गया कि कामगारों के बीच धर्मविरोधी आन्दोलन चलाने के लिए बड़े पैमाने पर संगठित, नेतृत्व और सहयोग होना चाहिए, और इसके लिए मीडिया, फिल्म, किताबों, साहित्य, और अन्य साधनों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए |

उत्तरी काकेसिया में 1923 के अंत तक धर्मविरोधी अभियान की शुरुवात कर दी गई | सभी शरीयत अदालतों का उन्मूलन कर दिया गया | 1923-1924 के सर्दियों में लाल सेना ने चेचेन लोगों से हथियार जब्त कर लिए और नक्श्बंदिया गुर्रिला योद्धाओं और भूमिगत कादरियाओं को डाकुओं की संज्ञा देते हुए उनका दमन किया गया | अप्रैल 1924 में शेख अली मितेव को क्रांतिविरोधी, विध्वंसक करार देते हुए गिरफ्तार कर लिया गया | 1925 में होत्सो के नजमुद्दीन को चेचन्या के पहाड़ी क्षेत्र से गिरफ्तार करके फांसी दे दी गई | 1925 में स्थानीय साम्यवादी पार्टी ने अविश्वसनीय सदस्यों की सफाई का अभियान चलाया | शीघ्र ही एल्देर्ख्यानोव सहित पार्टी के अन्य बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए | 1927 में शेख अली मितेव को फांसी दे दी गई (Perovic, 2014) |

उत्तरी काकेशस में 1928 में बड़े पैमाने पर सामूहीकरण प्रारम्भ हुआ और इसी के साथ ही धार्मिक नेताओं और उनके समर्थकों के सफाए के लिए भी अभियान चलाया गया | चेचन्या के शेख हाजी यांदरोव जो कि नक्श्बंदिया सूफी शाखा के मुर्शिद थे, 1928 में आर्थिक उत्प्लव का प्रयास किया, इन्हें मृत्युदण्ड दिया गया | 1929 के वसंत में चेचन्या में विद्रोह शुरू हो गया | इस विद्रोह में कुंटा हाजी शाखा के मुरीद और नक्श्बंदिया शाखा

के मुरीद दोनों ही शामिल थे | उजौन हाजी अमीरात के पूर्व युद्ध मंत्री शीता इस्तामुलोव ने सभी चेचेन लोगों से अपील की कि वे इमाम शामिल की इमामत को पुनःस्थापित करने के लिए तथा काफिरों को काकेशस से बाहर निकालने के लिए धर्मयुद्ध करें | उनकी इस अपील पर शाली, गोइती और बेनोई में शस्त्र विद्रोह उठ खड़ा हुआ, ठीक इसी समय 1929 में दागिस्तान, ओसेटिया, कबार्दा, बल्कारिया में भी विद्रोह हुआ, इन सभी के बीच स्वतंत्रता, गजावत, मंसूर, हमजा बेक, गाजी मुहम्मद और शामिल के नाम आम हो गए | दिसम्बर 1929 के मध्य में लाल सेना चेचन्या पहुंची जिसका नेता बेलोव को बनाया गया | इस युद्ध में लाल सेना को काफी नुकसान उठाना पड़ा, विशेषकर गोइती में पूरी “82 इन्फेंट्री रेजिमेंट” समाप्त हो गई और यही स्थिति शाली में हुई | मार्च 1930 में बेलोव ने नयी सहायता प्राप्त की और दो महीने के भयंकर संघर्ष के बाद बेनोई में प्रवेश किया | बेनोई के सभी निवासी जिसमें औरतें और बच्चे सभी शामिल थे पहाड़ों के दुर्गम स्थानों पर जा छिपे | विजयी बेलोव ने उन्हें सन्देश भेजा कि यदि विद्रोही अपने हथियार उसे सौप दे तो उन्हें अपने घरों को लौटने की इजाजत मिल जाएगी | किन्तु विद्रोहियों ने इसका प्रतिउत्तर दिया कि वे अपने घरों को तभी लौटेंगे जब बेलोव और उसकी सेना यहाँ से चली जाएगी | इसी बीच चेचन साम्यवादी पार्टी के नेताओं जैसे हसमन, ज्हुराव्लेव और अर्सनुकेव को उनके पदों से हटा दिया गया | सेनाओं को चेचन्या से वापस बुला लिया गया और इस विद्रोह में भाग लेने वाले सभी विद्रोहियों और उनके नेताओं के लिए सोवियत सरकार की तरफ से आममाफ़ी की घोषणा कर दी गई | शीता इस्तामुलोव को “रूरल कनज्वूमर कोआपरेटिव” का अध्यक्ष बनाया गया | 1931 में क्षेत्रीय स्टेट पॉलिटिकल डाइरेक्टोरेट आँफिस में बक्लाकोव ने मास्को से प्राप्त हुए अधिकारिक माफीपत्र को देने के लिए शीता इस्तामुलोव को बुलाया और उनकी हत्या कर

दी | शीता इस्तामुलोव के भाई हसन ने इस मृत्यु का बदला लेने के लिए एक नए समूह का निर्माण किया जो 1935 तक काम करता रहा (Broxup and Avtorkhanov, 1992)|

1939 में फ़िनलैंड के विरुद्ध सोवियत असफलता से उत्साहित होकर पूर्व सोवियत समर्थक खासन इस्रैलोव और उनके भाई हुसैन ने दक्षिणी-पूर्वी चेचन्या में अपना गुरिल्ला बेस बनाया | 1940 में शतोयस्क्य जिले में विद्रोह किया और गलान्चोज्ह में विद्रोही सरकार स्थापित कर दी गई | इसके पश्चात् उन्होंने "पीपल्स कमिसारियत फॉर इंटरनल अफेयर्स" द्वारा भेजी गई टुकड़ी को पराजित किया और उनके हथियारों को अपने नियंत्रण में ले लिया (Dunlop, 1998) | खासन इस्रैलोव के अनुसार अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए मैंने इस युद्ध का नेतृत्व स्वीकार किया है हम न केवल चेचन्या के लिए लड़ेंगे बल्कि पूरे काकेशस के लिए लड़ेंगे | उनका मत था कि सोवियत सम्राज्यवाद से अपनी आजादी प्राप्त करना कठिन है लेकिन हम अपने विश्वास और न्याय के लिए लड़ेंगे | पिछले 20 सालों से सोवियत प्राधिकारी मेरे लोगों के खिलाफ लड़ रहे है उनका उद्देश्य समूहों को नष्ट कर देना है | पहले वे कुलाकों के खिलाफ, फिर मुल्लाओं के खिलाफ और फिर अब बुर्जुआ-राष्ट्रवादियों के खिलाफ लड़ रहे है | मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इस युद्ध का वास्तविक उद्देश्य हमारे राष्ट्र का नाश कर देना है | इसलिए मैंने अपने लोगों की आजादी के इस संघर्ष में नेतृत्व स्वीकार किया है (Wood, 2007) |

रुसी निरंकुशता और बोल्शेविक पार्टी से लड़ने के लिए जनवरी 1942 में खासन इस्रैलोव ने निश्चय किया कि वे विद्रोहों का विस्तार चेचन्या और इंगुश तक करेंगे | इसके लिए उन्होंने "द स्पेशल पार्टी ऑफ़ काकेशस ब्रदर" बनाया | गुरिल्ला योद्धाओं में आदेश और

अनुशासन को बनाये रखने के लिए इस्रैलोव ने एक विशेष कोड को विकसित किया | उन्होंने कहा अपने सम्बन्धी भाइयों के खून का बदला शत्रुओं से क्रूरतापूर्वक लो | निर्दयतापूर्वक छुपे एजेंटों और पीपल्स कमिसारियत फॉर इंटरनल अफेयर्स के सूचनाप्रदाताओं को मारों | बिना किसी भरोसेमंद सुरक्षा व्यवस्था के गुरिल्ला योद्धाओं को रात्रि घर या गाव में बिताने के लिए स्पष्ट रूप से मना किया गया (Wood, 2007)|

फरवरी 1942 में एक पूर्व साम्यवादी मैरबेक शेरिपोव ने शतोई में विद्रोह किया | इनकी सेना ने खासन इस्रैलोव के साथ सहयोग किया | इन विद्रोहों के कारण चेचेन और इंगुश लोग लाल सेना को छोड़ने लगे कुछ स्रोत दावा करते है कि ऐसे लोगों की संख्या लगभग 62,000 थी (Wood, 2007) |

अगस्त 1942 में जर्मनी ने चेचन्या में अपनी प्रत्यक्ष गतिविधियाँ प्रारंभ कर दी | जर्मनी के द्वारा विध्वंसक दस्ते को चेचन्या भेजा गया | इनका मुख्य कार्य पीछे भागती हुई सोवियत सेना द्वारा ग्रोज्नी पेट्रोलियम रीफाइनरी को तोड़ने से बचाना था और स्थिति को तब तक नियंत्रण में रखना जब तक कि वहाँ जर्मन सेना पहुँच न जाए | जर्मनों ने खासन इस्रैलोव के साथ सहयोग करना चाहा किन्तु खासन इस्रैलोव ने क्रांतिकारी गतिविधियों के विषय में जानकारी जर्मनों को देने से मना कर दिया और जर्मनों से लगातार उसका आग्रह रहा कि चेचन्या की स्वतंत्रता को मान्यता दे | इन सब कारणों से जर्मन उसे भरोसेमंद नहीं मानते थे | इसके अलावा चेचेनों और नाजियों के बीच विचारधारात्मक विरोध भी था | मैरबेक शेरिपोव के अनुसार काकेशस की स्वतंत्रता का यह मतलब नहीं था कि यह एक उपनिवेशवादी के हाथ से दूसरे उपनिवेशवादी के हाथ में

जाए | दिसम्बर 1943 में चेचन्या में जर्मन गतिविधियों को सोवियत सेना के द्वारा समाप्त कर दिया गया |

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 40,000 चेचेन और इन्गुइश सोवियत संघ की तरफ से लड़े, इनमें से 50 योद्धाओं को सोवियत संघ के हीरो का दर्जा मिला | किन्तु सोवियत सरकार ने चेचेन लोगों को नाज़ी जर्मनी का समर्थक माना (Burds, 2007) | 23 फरवरी 1944 को सोवियत सरकार ने सेंट्रल एशिया और साइबेरिया में चेचेनों को स्थानांतरित करने के लिए एक योजना तैयार की जिसका नाम "लेंतिल" रखा गया, यह एक गुप्त आपरेशन था, जिसको पीपल्स कमिसारियत फॉर इंटरनल अफेयर्स और लाल सेना के सहयोग से चलाया गया | आपरेशन लेंतिल का नेतृत्व ऐन.के.वी.डी. प्रमुख लाव्रेंतीय बेरिया ने किया | यद्यपि चेचेन पहले भी रूसियों के हाथों निर्वासन झेल चुके थे किन्तु यह निर्वासन उन सब निर्वासनों से भी अधिक भयानक था | लोगो को इस कार्य के लिए नियुक्त विशेष ट्रेनों के द्वारा उनके गन्तव्य स्थान तक पहुँचाया गया | लगभग 240,000 लोगों को कजाखस्तान, 71,000 लोगों को किर्गिस्तान और बाकी लोगों को साइबेरिया, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान और इर्कुत्स्क भेजा गया | इन लोगों को कोलखोज में लगाया गया | इन लोगों को बसाने व देख-रेख की जिम्मेदारी ऐन.के.वी.डी. के विशेष विभाग के द्वारा की गई | बिना प्राधिकारियों को सूचित किये बिना इनको अपना निवास स्थान बदलने की इजाजत नहीं थी | इन स्थानों पर भोजन और कपड़ो का काफी अभाव था, जो कई निर्वासितों की बीमारी और मृत्यु का कारण बना (Flemming, 1998) |

स्टालिन के निर्देश पर एन.के.वी.डी. प्रमुख लाव्रेंतीय बेरिया के द्वारा चलाये गए आपरेशन लेंतिल को चेचेनों ने अपने धर्म और नस्ल पर हमला माना उनको लगा की उनकी

संस्कृति समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है (Tishkov,2004) | कजाखस्तान में निर्वासन के वर्षों में चेचेनों के बीच सूफीवाद ने उनके अन्दर राष्ट्रीय भावना को विकसित किया | सूफीवाद ने उनके सामाजिक ढाँचे को विकसित करने में व्यापक सहयोग किया | सूफीवाद ने उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे न केवल स्थानीय, परिवार व जाति के प्रति वफादार रहे बल्कि वे अपने आप को सूफी भाईचारे का सदस्य भी समझे (Zelkina, 1996) |

20वी साम्यवादी पार्टी कांग्रेस में खुश्चैव के द्वारा निर्वासितों के पुनर्वास की घोषणा की गई | अधिकारिक रूप से इन्हें अपने घरों को लौटने की इजाजत नवम्बर 1956 में दी गई | जनवरी 1957 में चेचेन-इंगुश ऐ.एस.एस.आर. को पुनर्गठित किया गया | निर्वासितों के पुनर्वास के लिए एक समिति बनाई गई जिसका अध्यक्ष मुस्लिम गैर्बेकोव को बनाया गया | चेचेनों और के पुनर्वास के समय यह घोषणा की गई थी कि उन्हें उनके पूर्वजों की भूमि वापस लौटा दी जाएगी और नागरिक अधिकार भी प्रदान किया जाएगा किन्तु चेचेनों और इन्गुइशों के साथ 1980 के अंत तक अधिकारिक और अनाधिकारिक तौर पर भेदभाव किया जाता रहा | 1970 तक सोवियत शासन के द्वारा ग्रोजनी को एक शत्रु भूमि के रूप में देखा जाता रहा, वहाँ 1970 तक लगातार नौ बार कर्फ्यू लगाया गया (Jaimoukha, 2004) |

1957 में सोवियत प्राधिकार के द्वारा चलाई गई शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व की नीति में भी चेचेनों को उनके धर्मिक अधिकार नहीं प्रदान किये गये | सोवियत प्राधिकार के द्वारा लगातार धर्मविरोधी अभियान चलाया जाता रहा | सूफी व्यवस्थागत शोषण का विषय बन गए थे | लगभग सभी सूफी संगठनों की शाखाओं के पास के.जे.बी. एजेंट नियुक्त किये गए थे जो नियमित रूप से के.जे.बी. मुख्यालय में सूचनाओं को भेजते रहते थे |

इस समय तक सूफियों को प्रतिक्रयावादी न मानकर अपराधी की संज्ञा देते हुए परेशान किया जाता था और गिरफ्तार किया जाता था | किन्तु सोवियत प्राधिकारियों के सभी प्रयास चेचेनों और को उनके धर्मिक कृत्यों को सम्पादित करने से रोकने में विफल रहें | यद्यपि वे यूरोपीय तरीके की शिक्षा ग्रहण करते थे और सोवियत राजनीतिक और आर्थिक मूल्यों को स्वीकार करते थे किन्तु परिवार और नृजातीय स्तर पर अलग तरीके की पहचान को बनाये रखते थे जो उनके धार्मिक तत्वों से प्रभावित थी | उनका पारिवारिक जीवन शरिया और अदत के द्वारा नियंत्रित होती थी | अधिकांश चेचेन जन्म, मृत्यु व विवाह के संस्कार आदि इस्लामिक परम्परा और स्थानीय नियमों के मुताबिक करते थे | यह भी एक तथ्य है कि इस क्षेत्र में केवल सात कार्यरत मस्जिदें थी, किन्तु गाँवों में लोग घरों में शुक्रवार की नमाज के लिए एकत्र होते थे | गावों में लोग जिक्र भी करते थे, यह एक सूफी पद्धति है जिसमें लोग गाते और नाचते हुए अल्लाह को याद करते है | साधारणतया 500 लोगों के एक गाँव में 25-30 कार्यरत सूफी मुरीद रहते थे और बाकी बचे लोग उनका अनुसरण करते थे (Zelkina, 1996) |

गोर्बाचेव के द्वारा ग्लासनोस्त की नीति लायी गई | ग्लासनोस्त का तात्पर्य खुलापन होता है | ग्लासनोस्त के तहत सोवियत नागरिकों को साम्यवादी पार्टी यहाँ तक कि उन्हें सोवियत व्यवस्था की आलोचना करने का भी अधिकार प्रदान किया गया | 1990 तक चेचन्या के लगभग सभी गाँवों में मस्जिदें पुनः खोली गई या नयी मस्जिदें बनाई गई | मक्का, मदीना सहित सभी मुस्लिम पवित्र स्थानों की यात्रा पर लगाये गए प्रतिबंधों को हटा लिया गया | सूफीवाद खुलकर समाज के धर्मिक जीवन पुनर्संगठित करने में सक्रिय भूमिका निभाने लगा |

सूफीवाद प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में सक्रिय नहीं हुई | चेचन्या में जो राजनीतिक पार्टियाँ अस्तित्व में आयी, वे धर्मनिरपेक्ष स्वरुप की थी | दो धर्मिक राजनीतिक पार्टियाँ "इस्लामिक रिवाइवल पार्टी" तथा "इस्लामिक पाथ पार्टी" को बहुत ही कम लोगों का समर्थन प्राप्त था | इस्लामिक रिवाइवल पार्टी का गठन आल यूनियन इस्लामिक रिवाइवल पार्टी की एक शाखा के रूप में किया गया था | चेचन्या में राजनीतिक रूप से प्रभावकारी संगठन "नेशनल कांग्रेस ऑफ़ द चेचेन पीपल" था | नवम्बर 1990 में चेचन्या और सोवियत संघ और विदेशों से भी चेचेनों के 1,000 प्रतिनिधि ग्रोज्नी में हुए सम्मेलन में भाग लिया | इस सम्मेलन में कार्यकारी समिति का चुनाव किया गया और जनरल दुदायेव को अध्यक्ष चुना गया | कांग्रेस के द्वारा चेचन्या की स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया गया |

CHAPTER - 3

1991 के पश्चात रूस की इस्लाम के प्रति नीति

सोवियत संघ के विखण्डन के उपरान्त रुसी गणराज्य अस्तित्व में आया | रुसी गणराज्य एक बहुराष्ट्रीय गणराज्य है, जिसमें बहुत से नस्लों और विभिन्न धर्मों को मानने वाले निवास करते है, इसलिए रुसी गणराज्य के द्वारा एक धर्मनिरपेक्ष संविधान को अपनाया गया | रुसी संघीय संविधान के अनुच्छेद 13 में कहा गया है कि रुसी संघ वैचारिक विविधता को मान्यता प्रदान करता है | कोई भी अधिकारिक विचारधारा राज्य द्वारा स्थापित नहीं की जाएगी | अनुच्छेद 14 में इस बात का प्रावधान है कि रुसी संघ धर्मनिरपेक्ष राज्य है और राज्य के द्वारा कोई धर्म स्थापित नहीं किया जायेगा और धार्मिक संगठन राज्य से अलग रहेंगे तथा सभी धर्म कानून के समक्ष समान रहेंगे | अनुच्छेद 19 में उल्लिखित है कि राज्य लिंग, नृजाति, राष्ट्रीयता, भाषा, मूलस्थान, संपत्ति, धर्म और आधिकारिक स्थिति को ध्यान रखे बिना सभी को समान अधिकार और स्वतंत्रता की गारंटी प्रदान करता है | अनुच्छेद 28 में सभी को चेतना और धर्म की स्वतंत्रता प्रदान की गई है इसमें कहा गया है कि लोगों को अधिकार है कि वे किसी भी धर्म को मान सकते है या किसी धर्म को अंगीकार कर सकते है | अनुच्छेद 29 में कहा गया है कि सभी लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी है किन्तु वे इस अधिकार का प्रयोग किसी सामाजिक, नृजातीय, राष्ट्रीय और धार्मिक समूह के खिलाफ उत्तेजना भड़काने में नहीं करेंगे, और ऐसा करना अपराध माना गया है[7] |

[7] "The Constitution Of The Russian Federation", Avilabble at : http://www.constitution.ru/en/10003000-01.htm, Accessed on: February 2, 2016.

रूसी संघ एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है और इसके लिए सभी धर्म समान है | इसाई, इस्लाम, यहूदी और बौद्ध धर्म को देश के ऐतिहासिक विरासत का अभिन्न हिस्सा कहा गया है, लेकिन साथ में यह भी कहा गया है कि देश के इतिहास में आध्यात्मिकता और संस्कृति को स्थापित करने में ऑर्थोडॉक्स इसाईयत का विशेष योगदान रहा है | यह संघीय कानून साझा समझ को बढ़ावा देने, सहनशीलता, चेतना और विश्वास की स्वतंत्रता को महत्व देने में विश्वास रखता है |

26 सितम्बर 1997 को चेतना की स्वतंत्रता और धार्मिक संघो के ऊपर संघीय कानून बनाया गया, जिसे 19 सितम्बर 1997 को राज्य ड्यूमा द्वारा स्वीकार किया गया तथा 24 सितम्बर 1997 को संघीय कौंसिल द्वारा स्वीकृति प्राप्त हुई | यह कानून स्वीकृत होने के पश्चात् अनेक बार संशोधित भी हुआ है |

इस कानून के अनुच्छेद 1 में कहा गया है कि यह संघीय कानून प्रत्येक नागरिक की चेतना और विश्वास की स्वतंत्रता, धार्मिक संगठनों के क़ानूनी स्तर और मानवाधिकारों के क़ानूनी सम्बन्धों को नियंत्रित करेगा |

अनुच्छेद 2 के अनुसार चेतना और विश्वास की स्वतंत्रता, धार्मिक संगठनों के सम्बन्ध में नियम रुसी संघ के संविधान के प्रचलित कानूनों के अनुसार होंगे | नियामक एक्ट और संघीय कानूनों में मतभेद की स्थिति में संघीय कानून मान्य होंगे | रुसी संविधान ने इन अधिकारों के सम्बन्ध में जो भी गारन्टी दी है या इन अधिकारों के सम्बन्ध में जिन

अंतर्राष्ट्रीय समझौतों पर रूस ने हस्ताक्षर किया है, उनका उल्लंघन रुसी विधायिका नहीं करेगी |

अनुच्छेद 3 में उल्लिखित है कि रुसी संघ चेतना और विश्वास की स्वतंत्रता की अनुमति देता है जिसके तहत एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को किसी भी धर्म का प्रचार करने की, स्वतंत्रतापूर्वक किसी भी धर्म को स्वीकार करने या बदलने का और उन्हें व्यवहार में लाने का अधिकार देता है | जो रुसी नागरिक नहीं है और जिनके पास रुसी संघ की नागरिकता नहीं है उन्हें भी यह आजादी रुसी नागरिक के समान ही प्राप्त होगा किन्तु वे संघीय कानून द्वारा स्थापित इन प्रावधानों का उल्लंघन नहीं कर सकेंगे |

इन अधिकारों पर प्रतिबन्ध तभी लगाया जा सकता है जब इन अधिकारों की वजह से संवैधानिक शासन, नीति, नागरिकों के स्वास्थ्य, अधिकार और देश की रक्षा और राज्यों की सुरक्षा खतरें में हो | किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत धार्मिक व्यवहार की वजह से किसी भी तरह का विशेषाधिकार, बाधा या किसी भी तरह के भेदभाव की इजाजत नहीं दी जाएगी |

किसी भी व्यक्ति को उसको अपना धर्म बताने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा, उसे किसी अन्य धर्म को मानने के लिए भी बाध्य नहीं किया जाएगा, उसे किसी भी धार्मिक आयोजन में भागीदारी के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा | उसे किसी धर्म के बारे में उपदेश देने के लिए भी बाध्य नहीं किया जाएगा | नाबालिकों को बिना उनके अभिवावकों की इजाजत के बिना किसी धार्मिक संगठन में शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा |

किसी व्यक्ति के चेतना और विश्वास की स्वतंत्रता के अधिकार को तब प्रतिबंधित किया जा सकता है, जब कोई व्यक्ति अपने धार्मिक अधिकार के तहत किसी दुसरे व्यक्ति के विरुद्ध हिंसा करें, उसकी भावनाओं पर आघात करें, दुसरे धर्म पर अपनी धार्मिक श्रेष्ठता को सिद्ध करने का प्रयास करे या किसी सम्पत्ति को धर्म की आड़ में ध्वस्त करने का प्रयास करे |

6 जुलाई 2006 को संशोधन संख्या 104-FZ के द्वारा इस कानून में कहा गया कि रुसी संघ का नागरिक चाहे वह किसी भी धर्म को मानता हो वह नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में कानून के समक्ष समान माना जाएगा |

अनुच्छेद 4 में राज्य और धार्मिक संगठनों के बारे में चर्चा की गई है | इसमें कहा गया है कि रुसी संघ एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है | यहाँ किसी भी धर्म को राजधर्म घोषित नहीं किया जा सकता है | धार्मिक संगठन राज्य से पृथक रखे जायेंगे और कानून के समक्ष समान होंगे |

राज्य को धर्म से अलग रखने की नीति के तहत राज्य किसी भी नागरिक के किसी भी धर्म से जुडाव को निर्धारित करने में, बच्चों के पालन-पोषण में हस्तक्षेप नहीं करेगा | यदि किसी भी प्रकार का आयोजन चाहे वह स्थानीय सरकार का हो या सार्वजनिक कार्यक्रम, उसमें किसी भी प्रकार का धार्मिक आयोजन नहीं किया जाएगा | राज्य किसी भी धार्मिक संगठन के कार्यों में तब तक दखलंदाजी नहीं करेगा जब तक कि वह संघीय कानूनों का उल्लंघन न करे |

सरकारी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा को धर्मनिरपेक्ष बनाया जाएगा | धार्मिक संस्थानों के ऊपर कर नहीं लगाया जाएगा बल्कि उनकी बिल्डिंग, यादगार संग्रहालय के रखरखाव के

लिए आर्थिक सहायता दी जाएगी | धार्मिक संगठनों के द्वारा जो शैक्षणिक संस्थान बनाया जाएगा, उनका रखरखाव भी सरकार द्वारा किया जाएगा और उन पर भी रुसी संघ के शैक्षणिक नियम लागू होंगे | और कोई भी सरकारी संगठन धार्मिक कार्यक्रम आयोजित नहीं कर सकेगा और न ही कोई सरकारी अधिकारी अपने पद का इस्तेमाल किसी धर्म को बढ़ावा देने में करेगा |

धार्मिक संगठनों को राज्य से अलग रखने की नीति के तहत सभी धार्मिक संगठनों को अधिकार है कि वह अपने संस्थान के लिए पदसोपन, संगठन की संरचना, चुनाव, नियुक्ति और कर्मचारियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में अपने नियम बनाने का अधिकार है किन्तु उनको राज्य प्राधिकार, अन्य सार्वजनिक संस्थान, स्थानीय प्रशासन में भागीदारी का कोई अधिकार नहीं होगा | धार्मिक संगठनों को किसी राजनीतिक दल या राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेने का कोई अधिकार नहीं होगा | धार्मिक संगठनों के सदस्यों को राज्य के कार्यों में भागीदारी करने के सम्बन्ध में दूसरे नागरिकों के समान ही अधिकार होगा | धार्मिक संगठनों को यह अधिकार होगा कि रुसी संघ के अंतर्गत उपयुक्त सरकारी प्राधिकारी से यह आग्रह कर सकता है कि वह किसी धार्मिक महत्व वाले दिन उस क्षेत्र विशेष में अवकाश का दिन घोषित कर सकता है |

अनुच्छेद 5 के अंतर्गत धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में बातें की गई है | प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मर्जी के अनुसार किसी भी धार्मिक शिक्षा को चुनने का अधिकार होगा | किसी अभिवावक के आग्रह पर राज्य या नगर निकाय द्वारा स्थापित विद्यालय स्थानीय सरकार की अनुमति से किसी धार्मिक संगठन की सहायता से स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा धार्मिक शिक्षा उपलब्ध करवा सकता है | अनुच्छेद 6 में इस बात का वर्णन है कि सभी रुसी नागरिकों को स्वेच्छिक रूप से धार्मिक संगठन बनाने का अधिकार होगा |

उनको धार्मिक व्यवसाय को अपनाने का अधिकार होगा लेकिन सार्वजानिक या स्थानीय सरकार या सैन्य दल या नगर निकाय की संस्थाओं के दायरे में इसकी अनुमति नहीं होगी |

अनुच्छेद 7 में धार्मिक समूहों का उल्लेख किया गया है | इसमें कहा गया है कि यह नागरिकों का स्वैच्छिक संगठन होगा | जिसको सामूहिक आस्था के अनुसार स्थापित किया जा सकता है | इसके लिए राज्य प्राधिकार से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होगी |

8 दिसम्बर को संशोधन संख्या 169-FZ के द्वारा अनुच्छेद 8 में कहा गया है की धार्मिक संगठन एक स्वेच्छिक संगठन होगा जो कि रुसी नागरिकों के द्वारा बनाया जाएगा और क़ानूनी रूप से वैध होगा इन संगठनों को दो भागों में बांटा जा सकता है- स्थानीय और केन्द्रीकृत | स्थानीय धार्मिक संगठनों में 18 साल के उपर के 10 सदस्य होंगे और यह स्थानीय धार्मिक संगठन ग्राम या शहर स्तर पर बनाये जाएगें | तीन स्थानीय धार्मिक संगठन मिलकर एक केन्द्रीकृत संगठन का निर्माण करेंगे | केन्द्रीकृत संगठन का अपना एक बोर्ड होगा और उस बोर्ड को अपने संगठन के लक्ष्य और अधिकार घोषित करना होगा | इसका दर्जा एक सरकारी एजेंसी जैसा होगा | इन संगठनों की समस्याओं को सुलझाने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की होगी | किसी भी धार्मिक संगठन का नाम उस धर्म से सम्बंधित ही रखा जाएगा | जिस राज्य में धार्मिक संगठन का पंजीकरण होगा उसी राज्य के पास ये अपनी समस्याओं को लेकर जाएगें | अगर कोई धार्मिक संगठन बार-बार विफल हो रही हो और राज्य सरकार के अंतर्गत उसका पंजीकरण न हुआ हो तो राज्य की यह जिम्मेदारी होगी कि वह उस संगठन की गतिविधियों की जाँच-पड़ताल

करने की अपील करे | स्थानीय संगठन के काम-काज का लेखा-जोखा केन्द्रीय धार्मिक संगठन के द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा |

अनुच्छेद 9 में उल्लिखित है कि स्थानीय संगठन में सदस्यता केन्द्रीय संगठन की सहमति से ही प्रदान किया जाएगा | अनुच्छेद 10 में कहा गया है कि धार्मिक संगठनों का एक चार्टर होगा जो कि रूस के नागरिक कानूनों के अनुसार बनाया जाएगा और इस चार्टर में संगठन का नाम, धर्म का नाम और सदस्यों की पहचान लिखी जाएगी और साथ ही साथ इसमें इसके लक्ष्य, गतिविधियाँ, संगठन की संरचना, प्रबन्ध, वित्तीय स्रोत, संपत्ति और बाकी सारी जानकारी रखी जाएँगी |

अनुच्छेद 11 के अनुसार धार्मिक संगठनों का पंजीकरण संघीय कानूनों के अनुसार किया जाएगा | अनुच्छेद 12 में कहा गया है कि यदि किसी धार्मिक संगठन का चार्टर रुसी संघ के प्रचलित कानून या संविधान का उल्लंघन करता है तो ऐसे संगठन का पंजीकरण नहीं किया जाएगा | 21 मार्च 2002 को संशोधन संख्या 104-FZ के द्वारा अनुच्छेद 12 में जोड़ा गया कि यदि किसी धार्मिक संगठन का पंजीकरण निरस्त किया जाता है तो इसका लिखित सुचना कारण सहित उस संगठन को दी जाएगी और वह वह संगठन इस मामलें को न्यायालय में ले जा सकता है |

अनुच्छेद 13 में कहा गया है कि रुसी धार्मिक संगठन विदेशों में भी अपने संगठन बना सकते है किन्तु इस तरह के संगठनों को अपना प्रतिनिधि ऑफिस रूस में बनाना होगा तथा उस प्रतिनिधि ऑफिस को एक अधिकृत प्रमाणपत्र दिया जाएगा | 23 जुलाई 2008 में संघीय कानून संख्या 160-FZ द्वारा अनुच्छेद 13 में यह जोड़ा गया कि किसी

संगठन को विदेशों में अपना ऑफिस खोलने का अधिकार होगा कि नहीं इस बात पर केन्द्रीय कार्यकारी प्राधिकार द्वारा निर्णय लिया जाएगा |

अनुच्छेद 14 में इस बात पर चर्चा की गयी है कि किस आधार पर धार्मिक संगठन को निलंबित या निरस्त किया जा सकता है |

1-अगर वह धार्मिक संगठन के चार्टर का उल्लंघन करता है |

2-अगर वह संघीय कानून का उल्लंघन करता है |

3-अगर वह अपने लक्ष्यों से हट कर कार्य करता है |

4-अगर वह सार्वजानिक सुरक्षा या आदेश को तोड़ता है |

5-अगर वह किसी अतिवादी गतिविधि में लिप्त रहता है |

6-अगर वह नागरिकों के अधिकार व आजादी में बाँधा डालता है |

7-अगर वह सार्वजानिक संपत्ति को नुकसान पहुंचता है |

8-अगर वह अंधविश्वास फैलता है या किसी को आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है |

9-अगर वह किसी को अनिवार्य शिक्षा से रोकता है |

10-अगर वह किसी को अपने नागरिक दायित्यों को निभाने से रोकता है |

निरस्तीकरण की प्रक्रिया के बारे में कहा गया है कि प्राधिकारी सत्ता पंजीकरण को रद्द कर सकती है | इसके लिए धार्मिक संगठन ने जो भी दस्तावेज जमा किये थे, उनकी पांच कार्यदिवसों के अन्दर जाँच करके निरस्तीकरण की प्रक्रिया शुरू किया जाएगा |

धार्मिक संगठन के प्रमुख को संघीय न्यायालय के सम्मुख उपस्थित होना पड़ेगा और उसे निरस्तीकरण का कारण बताया जाएगा | इसमें रुसी संघीय न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय अंतिम होगा | किसी भी धार्मिक संगठन को कुछ समय के लिए या हमेशा के लिए बंद किया जा सकता है |

अनुच्छेद 15 में धार्मिक संगठनों के आतंरिक नियंत्रण के बारे में बात की गयी है | इसमें कहा गया है कि धार्मिक संगठनों को इस तरह से कार्य करना होगा कि वे संघीय कानूनों से संघर्ष न करें और राज्य का यह कार्य होगा कि वह धार्मिक संगठनों के आन्तरिक नियंत्रण में हस्तक्षेप न करें |

अनुच्छेद 16 में धार्मिक रीति-रिवाज और समारोह के सम्बन्ध में बातें की गई है | किसी भी धार्मिक संगठन को खुले स्थान या किसी बिल्डिंग के अन्दर पूजापाठ या अन्य धार्मिक गतिविधि, मीटिंग या तीर्थयात्रा करने का अधिकार होगा | सार्वजानिक स्थानों पर तीर्थयात्रा, समारोह या अंतिम संस्कार करने के लिए प्राधिकारी की अनुमति लेनी होगी | हॉस्पिटल या दूसरे अन्य संस्थाओं में भी धार्मिक रीति-रिवाजों को क्रियान्वित करने का अधिकार होगा जब तक कि वह वहाँ के काम-काज में बाँधा न पहुंचाए | किसी भी धार्मिक संगठन को सेना या पुलिस के क्षेत्र के आस-पास धार्मिक क्रिया-कलापों को करने का अधिकार नहीं होगा |

अनुच्छेद 17 में धार्मिक साहित्य और धार्मिक महत्व के वस्तुओं की चर्चा की गई है | इसमें कहा गया है कि धार्मिक संगठन किसी भी तरह के मुद्रित या आडियो-विडियो साहित्य को बना सकते है, ग्रहण कर सकते है, आयात-निर्यात कर सकते है |

अनुच्छेद 18 में धार्मिक संगठनों के परोपकार के कार्य और सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों पर चर्चा की गई है | धार्मिक संगठन अपने अन्दर किसी सांस्कृतिक, शैक्षणिक, मास-मीडिया की स्थापना कर सकते है | सरकार धार्मिक संगठनों के ऐसे कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मदद दे सकती है |

अनुच्छेद 19 में व्यवसायिक धार्मिक शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध में चर्चा की गई है | धार्मिक संगठन अपने अन्दर व्यवसायिक धार्मिक शिक्षण की स्थापना कर सकते है ताकि वे दूसरे लोगों को धार्मिक शिक्षा दे सकें | ऐसे शिक्षण संस्थानों को खोलने के लिए लाइसेंस की जरुरत पड़ेगी जो कि स्थानीय प्राधिकारी इनको प्रदान करेंगे | संघीय कानून संख्या 14-FZ द्वारा अनुच्छेद 19 में संशोधन किया गया और कहा गया कि जो नागरिक इन संस्थानों में पूर्णकालिक अध्ययन करेंगे उन्हें रुसी संघ के अंतर्गत होने वाले शैक्षणिक लाभ और प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे |

अनुच्छेद 20 में धार्मिक संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और सम्पर्क पर चर्चा की गई है | धार्मिक संगठन दूसरे देशों के संगठनों या नागरिकों के साथ संपर्क बना सकते है | तीर्थयात्रा या धार्मिक कार्यक्रम को आयोजित करने को लेकर बातचीत कर सकते है | धार्मिक संगठन को यह विशेषाधिकार होगा कि वह किसी विदेशी नागरिक को किसी उत्सव पर अपने यहाँ बुला सकता है |

अनुच्छेद 21 में धार्मिक संगठनों के स्वामित्व पर चर्चा की गई है | धार्मिक संगठन किसी बिल्डिंग, जमीन, धर्मार्थ कार्य, सांस्कृतिक कार्य तथा अन्य कार्य और धनोपार्जन सम्बन्धी और अन्य चीजें जो उनके गतिविधियों के लिए आवश्यक है और इसके साथ ही साथ ऐतिहासिक स्मारक जो उनसे सम्बंधित है, उसका स्वामित्व रखते है | ये इन

संपत्तियों के केवल स्वामी ही नहीं होते बल्कि इनका रख-रखाव भी करते है | नागरिकों तथा सरकार के द्वारा मिले धन से ये अपना कार्य करते है | इनके भवनों और स्मारकों पर स्थानीय सरकार कोई कर नहीं लेती है | ये विदेशों में स्थित संपत्तियों का भी स्वामित्व रख सकते है | इन धार्मिक संगठनों को अगर कोई संपत्ति उपलब्ध करा रहा है तो वह रुसी सरकार की देखरेख में ही होगा |

अनुच्छेद 22 में कहा गया है कि धार्मिक संगठन अपनी सुविधानुसार अपनी सम्पत्ति का प्रयोग कर सकते है | धार्मिक संगठनों को जो संपत्ति सरकार के द्वारा मिलेगी वह उसे संघीय नियमों के अनुसार ही इस्तेमाल कर सकता है |

अनुच्छेद 23 में कहा गया है कि धार्मिक संगठन चाहें तो व्यवसाय भी कर सकते है तथा अपनी तरफ से इंटरप्राइज भी बना सकते है |

अनुच्छेद 24 में कहा गया है कि धार्मिक संगठन अपने कर्मचारियों के साथ अनुबंध कर सकते है | इन कर्मचारियों के साथ जिस अनुबंध पर हस्ताक्षर किया जाएगा वह रुसी संघ के श्रम नियमों के अनुसार ही होना चाहिए | सभी कर्मचारियों को सामाजिक कल्याण और पेंशन मिलना चाहिए[8] |

इस्लाम रूस में माना जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा धर्म है और संवैधानिक रूप से इस्लाम को ऐतिहासिक विरासत की सूची में रखा गया है | रूस में सुन्नी मत को मानने वाले मुसलमानों की संख्या सबसे ज्यादा है | रूस में मुसलमानों की आबादी दागिस्तान, चेचन्या, इंगुश, बुल्गार, बाश्किर, कबर्दीन इत्यादि राज्यों में है (Page, 2010) |

[8]"Federal Law No. 125-Fz Of September 26, 1997 On The Freedom Of Conscience And Religious Associations", Available at:legislationline.org/.../id/.../RF_Freedom_of_Conscience_Law_1997_am2008_en.pdf, Accessed on February 25, 2016.

सोवियत संघ के पतन के पश्चात रूस के मुस्लिम बहुल गणराज्यों जैसे अद्ग्गेया, बश्कोर्तोस्तान, दागिस्तान, तातारस्तान, कबारदिनो-बल्किरिया, उत्तरी ओससेटिया, कराचायेवो-चेरकेस्सिया, चेचन्या और इनगुशेतिया में बड़ी संख्या में मुस्लिम धर्मार्थ संगठन खुले | धर्मार्थ संगठन मुस्लिम सामाजिक और नैतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है | रूस के ग्रामीण क्षेत्रों में मस्जिदें अनेक महत्वपूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराती है, जैसे मुस्लिम यहाँ से दाह-संस्कार और विवाह के समय बर्तन और कालीन निशुल्क प्राप्त कर सकते है | मस्जिद "खाषर" का आयोजन करते है, जिसे कार्य का स्वेच्छिक दिन कहा जाता है | इसमें मुस्लिम लोग एक समुदाय के रूप में एकत्र होते है और जरूरतमंद व्यक्ति के लिए घर अदि का निर्माण करते है | रूस का मुस्लिम बोर्ड लम्बे परिवार और अनाथों को भौतिक सहायता प्रदान करता है | "मुस्लिम बोर्ड ऑफ़ द सेंट्रल एंड यूरोपियन रीजन" के अध्यक्ष और मास्को के सेंट्रल मस्जिद के इमाम शेख रविल गैनेत्दीन धर्मार्थ कार्यों का आयोजन करते है | "द ओपन यूनिवर्सिटी ऑफ़ इस्लामिक कल्चर इन मास्को" के द्वारा अनेक सहायता सम्बन्धी कार्य किये जाते है | इसके द्वारा गरीब मुसलमानों को बीमारी, दाह-संस्कार आदि की स्थियों में सहायता उपलब्ध कराई जाती है (Gasym, 1996) |

1990 के दशक में सोवियत संघ के द्वारा मक्का की यात्रा पर लगे रोक को हटा दिया गया और मुस्लिमों को उनके धार्मिक स्थानों की यात्रा की इजाजत दे दी गई | कुरान की प्रतियाँ आसानी से उपलब्ध होने लगी | 1995 में तातारस्तान के इमाम खात्य्ब मुक़द्दस के द्वारा "यूनियन ऑफ़ मुस्लिम्स" स्थापित की गई जिसका उद्देश्य अन्तर-नृजातीय समझ को बढ़ावा देना और रुसी लोगों की इस समझ को दूर करना कि इस्लाम एक अतिवादी धर्म है | 1991 में मास्को में "इस्लामिक कल्चरल सेन्टर ऑफ़ रसिया" खोला

गया | "अश-शफी इस्लामिक इंस्टिट्यूट" दागिस्तान में खोला गया, यह एक शोध संस्थान है | 1990 के दशक से इस्लामिक प्रकाशनों की संख्या में वृद्धि होने लगी जिसमें एखो-कव्काज़ा, इस्लाम्स्कीय-वेस्त्निक रुसी भाषा की पत्रिकाएँ और एक रुसी भाषा में समाचारपत्र इस्लाम्स्किये-नोवोस्ती शामिल है[9] |

नवम्बर 2003 में "द केनन इंस्टिट्यूट एंड द मिडिल ईस्ट प्रोजेक्ट ऑफ़ द वूडरो विल्सन सेण्टर" द्वारा ऐतिहासिक और वर्तमान रूस की इस्लामिक पहचान पर एक सेमिनार आयोजित किया गया | जिसमें "स्प्रिचुअल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़ मुस्लिम्स ऑफ़ रशिया" के मुख्य मुफ़्ती के सलाहकार तालिब सैद्बेव ने सेमिनार में कहा कि मै खुले रूप से कह सकता हूँ कि रूस केवल ऑर्थोडॉक्स ही नहीं बल्कि एक मुस्लिम देश भी है | वर्तमान समय में रूस में 20 मिलियन से भी ज्यादा मुस्लिम रहते है | इसी कार्यक्रम में " स्प्रिचुअल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़ मुस्लिम ऑफ़ रशिया" के रादिक अमिरोव ने कहा कि रूस के इस्लामिक नेता धर्मनिरपेक्ष रुसी राज्य के प्रति वफादार हैं और उनके साथ सहयोग करते है, उन्होंने इस बात पर बल दिया कि रूस में इस्लाम रुसी लोगों का एक पारंपरिक विश्वास है (Hofmann, 2011) |

सोवियत संघ के दौरान रूस में कोई मुस्लिम शैक्षिणिक संस्थान नहीं था | वर्तमान समय में रूस के उत्तरी काकेसिया, वोल्गा क्षेत्र, यूराल और अन्य स्थानों पर अनेक मुस्लिम विश्वविद्यालय और मदरसे काम कर रहे हैं | "द इस्लामिक यूनिवर्सिटी अल-फतीह" कजान क्षेत्र में 1995 में तातार विद्वानों के एक समूह और "द मुस्लिम बोर्ड ऑफ़ तातारास्तान" के सहयोग से स्थापित की गयी | इस विश्वविद्यालय में मुख्य रूप से

[9]"Islam in Russia", Available at: http://www.islamicpopulation.com/Europe/RUSSIA/Islam%20in%20RUSSIA.htm, Accessed on: March 2, 2016.

पांच विभाग है 1-इस्लामिक धर्मशास्त्र 2-वित्त और अर्थशास्त्र 3-चिकित्सा 4-विधिशास्त्र 5-तकनीकि शिक्षा है | "द ओपेन यूनिवर्सिटी ऑफ़ इस्लामिक कल्चर" की स्थापना 1995 में मास्को में हुई | इस विश्वविद्यालय में कुरान, हदीस, अरबी भाषा, सिरा अल-नबी (पैगम्बर का जीवन), शरिया और रूस में इस्लाम का इतिहास और संस्कृति आदि की शिक्षा दी जाती है (Kerimov, 1996) |

1996 में रूस द्वारा "मास्को इस्लामिक विश्वविद्यालय" स्थापित किया गया | 2005 में इस्लामिक शिक्षा के लिए एक विशेष काउंसिल की स्थापना की गयी, जिसका उदेश्य राज्य और विभिन्न इस्लामिक संगठनों के बीच ताल-मेल और सहयोग बढ़ना है (Smith, 2006) |

सितम्बर 2015 में मास्को में यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद का उद्घाटन किया गया (Crews, 2016) | रूस में मुसलमानों की दूसरी सबसे घनी आबादी मास्को में है | उनकी आबादी लगभग 1.5 से लेकर 2 मिलियन तक है | राजधानी के लगभग सभी स्थानों पर उनकी उपस्थिति है | यहाँ पर कई नयी बनी मस्जिदें है | मुस्लिम सांस्कृतिक क्लब, अस्पताल, स्कूल, किंडरगार्टन, खाने की दुकानें है यहाँ तक कि एक मुस्लिम सुपर-मार्केट भी है | मास्को के प्रभावशाली मेयर लुज्हकोव ने इस्लाम से सम्बन्धित धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थानों को आर्थिक सहायता देकर मास्को में रहने वाले मुसलमानों के बीच काफी ख्याति प्राप्त कर ली है | पुतिन और मेदवेदेव दोनों ही मुस्लिम समुदाय के धार्मिक अवसरों पर बधाई सन्देश भेजते थे और यहाँ तक कि उनकी मस्जिदों का भ्रमण भी करते थे | ये सभी बातें राजधानी में मुसलमानों के बढ़ते हुए महत्त्व को दर्शाती है[10] |

[10] "Russian news agency-2013, Putin, Medvedev congratulate Russian Muslims with Eid-Ul-Fitr", Available at:http//tass.ru/en/society/886419, Accessed on: March 12, 2016 .

सोवियत संघ के पतन और नए रूस के प्रथम दशक को कई विशेषज्ञों ने इस्लाम के पुनरुत्थान की संज्ञा दी है | 2000 में रुसी संघ के राष्ट्रीय योजना के मंत्री व्लाद्मिर ज़ोरिन के अनुसार 7,000 नए मस्जिद बने | अकेले दागिस्तान में 2000 में 1,585 मस्जिद रजिस्टर हुए | जनवरी 2004 में रूस के न्याय मंत्रालय के अनुसार 3,537 मुस्लिम समुदाय पंजीकृत हुए | 2008 में रूस और यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद ग्रोजनी में खुली[11] |

इस्लामिक बैंक रूपये पर ब्याज नहीं देते है, रूस में "बदरे फोर्टे बैंक" को इस्लामिक बैंकिंग नियमों के तहत बैंकिंग की इजाजत दी गई है | ततारिस्तान में "इदेल हज" कार्यक्रम के तहत मुसलमानों के हज के लिए धन एकत्रित करने का कार्य किया जाता है | इस कार्य के लिए इस्लामिक कर लिया जाता है | तातारिस्तान में 2005 से जकात "तत्फोंदबैंक" और "अक बार्स बैंक" के माध्यम से जमा किया जा सकता है (Malashenko and Nuritova, 2009) |

2006 में "कौंसिल ऑफ़ इस्लामिक एजुकेशन" स्थापित की गई इसकी स्थापना का उदेश्य इस्लामिक शिक्षा में सुधार लाना और नए कार्यक्रम तैयार करना | 16 सितम्बर 1999 को दागिस्तानी संसद ने वहाबवाद को प्रतिबंधित कर दिया | ठीक इसी तरह के नियम इन्गुसुशेटिया, कबर्दिनो-बल्कारिया, कराचेवो-चेर्केस्सिया और अंत में चेचन्या में बना | हालाँकि इस तरह का प्रतिबन्ध न तो अधिकारिक धार्मिक वर्ग को और न ही धर्मनिरपेक्ष प्रधिकार्यों को मजबूत बना पाया | इन सब कार्यों से वहाँ से वहाबवाद पूरी तरह से समाप्त भी नहीं हो पाया | लेकिन इस तरह का कोई भी प्रयास संघीय स्तर पर नहीं

[11] "Grozny Opens 'Europe's Biggest Mosque' Radio free Europe Radio Liberty", Available at: http://www.rferl.org/content/Grozny_To_Open_Europes_Biggest_Mosque/1330690.html, Accessed on: March 16, 2016.

किया गया | मास्को में केन्द्रीय प्राधिकार को इस्लाम के विशेषज्ञ यह समझाने में सफल रहे कि इस्लाम की इस विचारधारा को प्रतिबंधित करना बुधिमत्तापूर्ण कार्य नहीं होगा (Franklin, 2014) |

इस्लाम के प्रति रूस की नीति पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है | एक तरफ वे अधिकारिक इस्लाम को बढ़ावा देते है दूसरी तरफ पुतिन इस्लामिक खतरे का धर्मनिरपेक्षीकरण करते हुए इसे आतंक के खिलाफ युद्ध का नाम देते है | रूस इस्लाम को अपनी बहुराष्ट्रीय पहचान के लिए अवश्यक मानता है जो कि कई शताब्दियों से रुसी ऑर्थोडॉक्स के साथ सहअस्तित्व में रहा है | रुसी सरकार निरंतर रुसी इस्लाम का समर्थन करती रही है और अधिकारिक मुस्लिम संस्थाओं के साथ संघीय और क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग करती रही है | रुसी प्राच्यविद विताली नौम्किन के अनुसार रुसी उम्मा रुसी राष्ट्र का अभिन्न अंग रहा है यह रुसी राजत्व के लिए एक सुरक्षा दीवार का कार्य करता रहा है (Roy, 2004) | 2003 में राष्ट्रपति पुतिन ने मलेशिया में रूस को एक इस्लामिक शक्ति के रूप घोषित किया और इसी बात की पुष्टि के लिय "आर्गेनाइजेशन ऑफ़ इस्लामिक कांफ्रेंस" में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल हुआ (Mayers, 2003) | रूस की विदेश नीति में भी इस्लामिक झुकाव देखने को मिलता है विशेषकर पुतिन के समय में पश्चिम से दुरी और इराक युद्ध का विरोध, ईरान का समर्थन, हमास का समर्थन |

दूसरी तरफ देखा जाय तो प्रचलित रूप से इस्लाम का सम्बन्ध अतिवाद और आतंकवाद के साथ माना जाता है | रूस का इस्लामिक अतिवाद के प्रति भय यह है कि यूरपियन देशों के रास्ते कहीं यह रूस में न आ जाए | इसका कारण यह है कि 1980 के दशक में पश्चिमी देशों के द्वारा सोवियत संघ के विरुद्ध अफगान मुजाहिदीनों को समर्थन दिया गया था, इसी को वह 1990 के प्रारम्भ में ताजकिस्तान में हुए गृहयुद्ध तथा रूस-

चेचन्या युद्ध के रूप में देखता है | पुतिन खुद ही इसे अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद कहते है, उनके अनुसार रूस में पाया जाने वाला इस्लामिक अतिवाद यहाँ का परम्परागत इस्लाम नहीं है बल्कि यह विदेशों से आयातित इस्लाम है |

जुलाई 2006 में रूस ने धार्मिक नेताओं के विश्व सम्मलेन का आयोजन किया, राष्ट्रपति पुतिन ने लोगों से धार्मिक सहनशीलता की अभिवृद्धि के लिए कार्य करने की अपील की | रूस के द्वारा इस्लाम के हित में वर्तमान समय में अनेक कार्य किए जा रहे है, जैसे- इमामों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, मस्जिदों का निर्माण करना, इत्यादि | रुसी राष्ट्रपति के द्वारा 2008 में इस्लामिक शिक्षा के लिए दी जाने वाली धनराशि को 400 मिलियन रूबल से बढ़ाकर 800 मिलियन रूबल कर दिया है | इन सब कार्यो के द्वारा रूस अपने यहाँ के मुस्लिम समुदाय को अतिवादी या चरमपंथी बनने से रोकना चाहता है | 2009 में मास्को के केंद्रीय मस्जिद का भ्रमण करने के दौरान मेदवेदेव ने कहा कि रूस बहु-राष्ट्रीयताओ और विभिन्न मतावलम्बियों का देश है | रूस में मुसलमानों का काफी सम्मान और प्रभाव है और इस्लामिक संस्थाएँ समाज में शांति स्थापित करने में, लोगों को आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है तथा साथ ही साथ अतिवाद से लड़ने में सहयोग कर रहीं है (Yilmaz, 2013) |

1778 में कैथरीन द ग्रेट द्वारा स्थापित ओरेनबुर्ग मुस्लिम स्प्रिचुअल असेंबली के 225वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अक्टूबर 2013 में राष्ट्रपति व्लाद्मिर पुतिन ने कहा इस्लाम ने हमारे समाज के सांस्कृतिक और अध्यात्मिक विकास में अमूल्य योगदान दिया | पुतिन ने कुछ मुद्दों को सामने रखा जिसका सामना रुसी मुस्लिम समुदाय कर रहा है जैसे इस्लाम का समाजीकरण | उनके अनुसार मुस्लिम जीवन का पारम्परिक तरीका, तात्कालिक सामाजिक वास्तविकता और सोचने का तरीका अतिवादी विचारधारा का

विरोध करता है | पुतिन के अनुसार अधिकारिक रूप से इस्लाम को दो भागों में बाटा गया है पारम्परिक और अपारम्परिक | प्राधिकारी इस बात की उपेक्षा करते है कि बहुत से विद्वान, इमाम और राजनीतिज्ञ भी विशेषकर मुस्लिम क्षेत्रों के, चाहते है कि इस विभाजन से दूर रहा जाए क्योंकि यह गलत है और समाज को तोड़ने वाला भी है | संघीय स्तर पर इस्लाम को विभाजित करना आसान होता है लेकिन क्रेमलिन इस दोहरी परिभाषा से अपना सम्बन्ध तोड़ रहा है | निश्चित रूप से नयी परिभाषा " इस्लाम की विविधता में इस्लाम की एकता" पर आधारित होगी | विशेष रूप से यह जानना उचित होगा कि रूस में इस्लाम की कौन सी शाखा प्रचलित है ? इस्लाम का वह कौन सा प्रकार होगा जिसके साथ राज्य समझौता कर सकता है ? मेरे विचार से पारम्परिक इस्लाम और अपारम्परिक इस्लाम के समवाद को आधुनिक इस्लाम कहा जा सकता है जो 21वी सदी की चुनौतियों से निपटने में सक्षम हो | पुतिन ने अतिवादियों की आलोचना की | धर्म के राजनीतिकरण पर उन्होंने यह कहा यह हमेशा सकारात्मक प्रक्रिया नहीं होती है | इस प्रकार उन्होंने यह प्रमाणित किया कि राजनीतिक इस्लाम आवश्यक रूप से नकारात्मक नहीं होता है | दागिस्तान के राष्ट्रपति रमजान अब्दुलातिपोव का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा यद्यपि संवैधानिक रूप से धर्म राज्य से अलग है, किन्तु राज्य स्वयं को इसके अनुयायियों से अलग नहीं कर सकता है | यदि हम इस दृष्टिकोण से सहमत है तो निश्चित रूप से इस्लाम एक राजनीतिक कारक है | इस कारण से इसका इस्तेमाल कई राजनीतिक मतों को उजागर करने में भी किया जा सकता है और लोगों को कोई भी कदम उठाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है | जिसमें से अतिवाद एक है | अतिवाद की इस विशेषता को उत्तरी काकेसिया में देखा जा सकता है | लेकिन रूस के दक्षिणी क्षेत्रों में जैसे वोल्गा, यूराल, साइबेरिया में इस्लाम एक

राजनीतिक साधन के रूप में कार्य करता है | अपने संबोधन के दौरान पुतिन ने "द सेंट्रल रिलीजियस बोर्ड फॉर द मुस्लिम्स ऑफ़ रसिया" और "कौंसिल ऑफ़ मुफ्तीस ऑफ़ रसिया" की जगह कोई एक अध्यात्मिक बोर्ड स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की (Putin, 2013) |

"इन्टरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम रिपोर्ट 2007" के अनुसार रूस में धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन के अनेक मामले सामने आए | रूस की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति ने 2000 में कहा कि विदेशी धार्मिक संगठनों और मिशनरियों का राष्ट्रीय सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है | विदेशी धार्मिक संगठनों के लिए आवश्यक है कि वे अपने संगठन का पंजीकरण राज्य प्राधिकारियों के यहाँ करवाए, इसके बिना वे अपनी धार्मिक गतिविधियाँ जारी नहीं रख सकते है, लेकिन व्यवहार में कई विदेशी धार्मिक संस्थान बिना पंजीकरण के अपनी धार्मिक गतिविधियाँ रूस में जारी रखे हुए है | मास्को सिटी ड्यूमा ने यह नियम बनाया है कि कोई भी धार्मिक भावनाओं को सार्वजनिक रूप से न उत्तेजित करे, अगर यदि कोई ऐसा करता है तो उसके उपर लगभग 100-500 रूबल का दण्ड लगाया जाएगा[12] |

1997 के कानून के तहत राष्ट्रपति, राज्यों और स्थानीय प्रशासन सलाहकारी अभियन्त्र का निर्माण करेंगे जो धार्मिक समुदायों के साथ सरकार के संवाद को बनायेगें और उनकी निगरानी करेंगे | राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक समुदायों के साथ संवाद करने के लिए एक सरकारी कमीशन बनाया जाएगा जिसमें कानून लागू करने वाली संस्था और सरकार के मंत्री शामिल होंगे | बृहत् योजनागत प्रश्नों के लिए राष्ट्रपति प्रशासन "प्रेसीडेसियल

[12] "international Religious Freedom Report 2007", Available at: http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2007/90196.htm,Accessed on: March 24, 2016, Accessed on:March 18, 2016.

कौंसिल ऑन कोऑपरेशन विथ रिलीजियस एसोसिएशन" के सहयोग से कार्य करेगा, इस कौंसिल में राष्ट्रपति प्रशासन के सदस्य, धार्मिक मामलों के धर्मनिरपेक्ष शैक्षिणिक विशेषज्ञ, परम्परागत और अपरम्परागत धार्मिक समुदायों के प्रतिनिधि शामिल होंगे | धार्मिक मामलों के लिए एक अन्य संस्था "गवर्नमेंटल कमीशन फॉर द अफेयर्स ऑफ़ रिलीजियस एसोसिएशन" होगी जिसके प्रमुख सांस्कृतिक और जनसंपर्क मंत्रालय के मंत्री होंगे[13] |

संघीय कानून और स्थानीय कानूनों में, कानून की अलग-अलग व्याख्या करने के कारण मतभेद की स्थिति बन जाती है | राज्य के अधिकारी धार्मिक अल्पसंख्यकों की गतिविधियों पर पाबंदियां लगाने लगते है | कई विशेषज्ञों के अनुसार बहुमत वाले धार्मिक समूह के दबाव के कारण स्थानीय सरकार धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव करती है | कई स्थानीय समुदाय अपनी खुद की योजनाओं को लागू करने लगती है | इन स्थानीय मामलों में जब संघीय सरकार दखल देती है तो वह न्याय मंत्रालय, राष्ट्रपति प्रशासन और न्यायालय के माध्यम से कार्य करती है, लेकिन संघीय सरकार बहुत ही कम अवसरों पर ऐसे मामलों में दखल देती है |

2002 में रूस में अतिवाद पर बने कानून को 2006 में संशोधित किया गया, जो धार्मिक समुदायों को प्रभावित कर सकता है विशेषकर मुस्लिम समुदाय की गतिविधियों को व्यापक रूप अपराधी घोषित कर सकता है[14] | उदहारण के लिए मंसूर शंगारीव को अतिवादी घोषित करते हुए दो साल कैद की सजा सुनाई गई, मंसूर शंगारीव के द्वारा

[13]"Report For the OSCE Meeting, Russian Non-Governmental Organization For Religious Liberty Protection 2012", Available at:http://www.osce.org/odihr/95011?download=true, Accessed on: April 1, 2016.

[14]"Article 19'S Statement On Proposed Amendments To The Russian Extremism Law, July 2006", Available at: https://www.article19.org/data/files/pdfs/press/russia-extremism-law.pdf, Accessed on: April 4, 2016.

मुस्लिम लड़कियों के कपड़ों पर टिप्पड़ी की गई थी | 2006 में संशोधित इस कानून के अंतर्गत उन लोगों को भी अतिवादी ठहराया जा सकता है जो अतिवादी घोषित किये गए लोगो का बचाव करते है या उनके प्रति सहानभूति रखते है

“ऑफिस ऑफ़ फेडरल ह्यूमन राइट्स ओम्बुस्ड्समैंन” के प्रमुख व्लाद्मिर लुकिन के अनुसार उनका कार्यालय प्रतिवर्ष धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन से सम्बंधित 200-250 शिकायतें प्राप्त करता है जिसमे हजारों लोग आरोपी ठहराएँ जाते है | और जाँच के दौरान पाया जाता है कि इनमें से 75% मामले वास्तविक होते है |

सरकार के द्वारा मुस्लिम लोगों के धार्मिक स्वतंत्रता के विरुद्ध आतंकवाद विरोधी उपायों के नाम पर पूर्वनियोजित गंभीर हिंसा की जाती है | यहाँ पर अनेक ऐसे केस है जिसमें मुसलमानों के चरमपंथी या आतंकवादी संगठनों के साथ स्पष्ट सम्बन्ध न होने के बावजूद उन्हें प्रताड़ित किया गया | पुलिस के द्वारा हेरफेर किये जाने के कारण कुछ लोगों को केवल कुरान के साथ पकड़े जाने पर जेल भेजा गया | केवल शक के आधार पर पुलिस के द्वारा कुछ लोगों को अतिवादी इस्लाम के नाम पर प्रताड़ित किया गया | 24 मई 2007 को स्ताव्रोपोल में रुसी और चेचन युवाओं के बीच हुए अंतरनृजातीय संघर्ष में गेलानी अयातेव के घायल होने के कारण मृत्यु हो गई | एक गवाह ज़ुर्बेक अख्मादोव के अनुसार अयातेव पर जब हमला किया गया तो पुलिस ने उसे बचाने के कोई उपाय नहीं किये, यहाँ तक घायल अवस्था में उसे एक घंटे तक डाक्टरी सहायता भी उपलब्ध नहीं कराई गई (Akaev, 2012) |

31 मार्च 2006 को नोवाया अद्य्गेइअ गाँव के लोगों को मस्जिद में जुमे की नमाज पढ़ने से रोका गया | पुलिस और अद्य्गेइअ मिलिशिया ने गाँव की सड़कों को बंद कर

दिया और कारों को रोक दिया तथा मुसलमानों की खोज करने लगे | मयकोप मस्जिद के इमाम के अनुसार पुलिस ने युवा मुस्लिम युवकों के एक समूह के साथ इमाम को भी गिरफ्तार किया | पुलिस ने उन्हें पीटा और उनसे प्रश्न किया कि वे दाढ़ी क्यों रखते है और सफाई के सम्बन्ध में मुस्लिम नियमों का पालन क्यों करते है | पुलिस ने उन्हें एक रात जेल में बंद रखा और अंत में न्यायालय के आदेश के बाद उन्हें रिहा किया गया[15] |

कबर्दिनो-बल्कारिया में 2005 में पुलिस और मुसलमानों के बीच तनाव में वृद्धि हो गई | पुलिस ने बड़ी संख्या में मस्जिदों को बंद करवा दिया था विशेषकर उन क्षेत्रों में जिसे इस्लामिक उग्रवादियों के द्वारा आजाद घोषित किया गया था | अक्तूबर 2005 में स्थानीय उग्रवादियों ने शामिल बसायेव के कहने पर नालचिक में सरकारी कार्यालयों और पुलिस ऑफिस पर हमला किया और उनपर कब्जा किया | कई सौ उग्रवादी मारे गए, उनमें से कई के शव उनके घरवालों को नहीं दिए गए | सरकारी अधिकारियों का कहना था कि इस हमले के शक में केवल 60 लोगों को गिरफ्तार किया गया है जबकि मानवाधिकार संगठनो का दावा था कि अधिकारियों ने जितने लोगों को पकड़ने का दावा किया है उससे कही ज्यादा लोगो को बंदी बनाया गया है[16] |

अप्रैल 2005 को पुलिस ने कबर्दिनो-बल्कारिया 9 मुस्लिम छात्राओं को हिजाब पहनने के कारण व समूह में कुरान पढने के कारण गिरफ्तार किया व जाँचपड़ताल की |

चेचन्या में इस्लाम और राष्ट्रवाद आपस में मिल गए | प्रथम चेचेन युद्ध के दौरान चेचेन योद्धाओं के द्वारा अपने सिर पर हरे रंग की पट्टी बांधी गयी जिससे वे अपने

[15]"International Religious Freedom Report 2007", Available at: http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2007/90196.htm,Accessed on: April 22, 2016.
[16]"KABARDINO-BALKARIA CRACKS DOWN ON MUSLIMS", Available at : http://www.jamestown.org/programs/nc/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=31031&tx_ttnews%5BbackPid%5D=187&no_cache=1, Accessed on: May 1, 2016.

आप को धार्मिक योद्धा के रूप में प्रस्तुत कर सके | 21 फरवरी 1996 को एक प्रेस कांफ्रेस को संबोधित करते हुए येल्तसिन ने कहा कि दुदायेव पूरे काकेशिया को अपने अधीन लाकर एक इस्लामिक राज्य बनाना चाहते है | दिसम्बर 1994 में रूस ने चेचन्या के खिलाफ युद्ध शुरू कर दिया था | चेचन्या के दक्षिणी हिस्से में इस्लामिक अलगाववादी प्रभावी थे और उत्तरी हिस्से पर रूस का प्रभाव था | इस युद्ध के दौरान कादरिया संप्रदाय ने रूस के साथ शांति को समर्थन दिया (Halbach, 2001) |

मास्खादोव चेचेनों को इस्लामिक कानून से परचित कराना चाहते थे इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि सभी सरकारी भवनों में एक प्रार्थना-कक्ष अवश्य होना चाहिए और महिला सरकारी कर्मचारियों को हरा स्कार्फ पहनना अनिवार्य कर दिया गया (Halbach, 2001) | मास्खादोव के पास व्यापक जनसमर्थन था, वे इसका इस्तेमाल अतिवादी तत्वों को रोकने में कर सकते थे, किन्तु वे ऐसा नहीं कर पाए | रसियन अपार्टमेंट बॉम्बिंग के बाद रूस ने भी किसी प्रकार की कोई रियायत देने से इंकार कर दिया और बिना कोई बातचीत के सभी चेचेन इस्लामिक अलगाववादी नेताओं को आतंकवादी की श्रेणी में रखा और उनके खिलाफ युद्ध आरंभ कर दिया (Wilhelmsen, 2005) | दागिस्तान में वहाबवाद अधिकारिक रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है | दुब्रोव्का थियेटर कांड हो या बेसलान स्कूल घटना हो पुतिन ने इन इस्लामिक अतिवादी घटनाओं के प्रति कठोर रुख अपनाया | रूस ने इन घटनाओं के बाद अनेक मुस्लिम संगठनों को प्रतिबंधित कर दिया जो कि रूस से संचालित हो रहे थे (Dannreuther, 2010) |

चेचेनीकरण की योजना को रूस ने दूसरे चेचेन युद्ध से अब तक लागू किया हुआ है इस योजना के तहत रूस ऐसे चेचेनों का समर्थन करता है जो उसकी योजनों को चेचन्या में लागू करवा सकें (Eichler, 2011) | इस रणनीतिक कदम के तहत मास्को कद्ग्रोव परिवार

का समर्थन करता है जिसे कद्ग्रोवीकरण भी कहते है इस तरह चेचेनीकरण और कद्ग्रोवीकरण एक दूसरे के अभिन्न अंग बन गए है | रूस के द्वारा चेचन्या में एक मजबूत आन्तरिक सेना के निर्माण में सहयोग किया जा रहा है (Souleimanov, 2006) | चेचन्या में वर्तमान समय में रूस की यह नीति है कि सूफीवाद को समर्थन दिया जाय क्योंकि वहाबी संकट का सामना बिना सूफीवाद के सहयोग के नहीं किया जा सकता | रुसी सरकार का विदेश मंत्रालय विशेषकर मध्य-पूर्व में स्थित उसके दूतावास पैगम्बर साहब के अवशेषों को चेचन्या लाने का प्रयास शुरू कर चुके है | रमजान कद्ग्रोव के द्वारा चेचन्या में इस्लाम को बढ़ावा देने वाले कार्यो को रुसी सरकार का पूरा समर्थन प्राप्त है क्योंकि रुसी सरकार चाहती है की चेचन महसूस करे की अब धर्मिक संघर्ष समाप्त हो चुका है और साथ ही चेचन्या मुस्लिम देशों के साथ रूस के संपर्क में पुल काम करे (Vatchagaev, 2012) |

2006 तक चेचन्या में 500 से अधिक मस्जिदें है जिसमे से 326 जामा मस्जिदें थी | यहाँ 21 जिला काजी है, 326 इमाम है, 31 मदरसा है और एक राज्य इस्लामिक विस्वविद्यालय है जिसका नाम कुंटा हाजी किशेव है, इस विश्वविद्यालय का वित्तीय खर्च मास्को द्वारा दिया जाता है | ग्रोज्नी में अकेले 27 मस्जिदें है, इन मस्जिदों में एक ऐसी मस्जिद भी है जो पूरे यूरोप में सबसे बड़ी है जिसे चेचन्या का ह्रदय भी कहा जाता है | दो रूस-चेचन युद्धों के दौरान नष्ट हुए मस्जिदों का पुनर्निर्माण किया गया (Ibragimova, 2006) |

बोल्शेविक क्रांति के पहले मस्जिदों की चेचन समाज में जो स्थान था अब उनका वह स्थान नहीं रह गया | लोग अब मुल्लाओं के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ सम्बन्धों के कारण दूरी बनाने लगे, मुल्लाओं को सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है और उनको

वेतन भी दिया जाता है | इस तरह मस्जिदें सरकार की एक शाखा बन गई | मस्जिदें सरकारी योजनाओं के प्रचार का स्थान बन गई और मुल्ला सरकार के प्रवक्ता बन गए | लोग अपने मुल्लाओं से राजनीति नहीं सुनना चाहते है | 1920 से 1980 के बीच का समय अतिवादी नास्तिकतावाद का समय था इस समय तक चेचन्या में कोई कार्यरत मस्जिद नहीं थी, या तो मस्जिदों को ध्वस्त किया गया या उनके इमारतों का इस्तेमाल दुसरे कार्यों के लिए किया गया |इस्लाम सार्वजानिक जीवन से गायब हो गया, यह लोगों के पारिवारिक जीवन तक सिमट कर रह गया | जब मस्जिदों को वापस खोला गया तो यह भी साधारण चेचेनों के लिए समस्या बन गई, वे ये सोचने लगे कि ईश्वर किसी भी स्थान से की गई प्रार्थना को स्वीकार करता है तो इसके लिए मस्जिद जाने की जरुरत ही क्या है | मस्जिदें केवल शुक्रवार की सुबह या शाम की नमाज के समय भरी रहती है | इसके अलावा अन्य समय में कुछ ही लोग मस्जिदों में पाए जाते है (Vatchagaev, 2014) |

CHAPTER - 4

1991 के उपरांत चेचन्या में इस्लाम

सोवियत संघ में गोर्बाचेव के द्वारा 1980 के दशक में ग्लासनोस्त की नीति लायी गई | ग्लासनोस्त का तात्पर्य खुलापन होता है | ग्लासनोस्त के तहत सोवियत नागरिकों को साम्यवादी पार्टी की, यहाँ तक कि उन्हें सोवियत व्यवस्था की आलोचना करने का भी अधिकार प्रदान किया गया | 1990 के अंत तक चेचन्या के लगभग सभी गाँवों में मस्जिदें पुनः खोली गई या नयी मस्जिदें बनाई गई | मक्का, मदीना सहित सभी मुस्लिम पवित्र स्थानों की यात्रा पर लगाये गए प्रतिबंधों को हटा दिया गया | सूफीवाद खुलकर समाज के धर्मिक जीवन को पुनःस्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभाने लगा | रूस में इस्लाम को मानने वाले लोगों में अधिकाशतः लोग सुन्नी मुसलमान है जो शफी तथा हनफी स्कूल से सम्बन्ध रखते है |

1990 में ग्रोज्नी के लेनिन चौक पर "इस्लामिक रिवाइवल पार्टी" के सदस्यों ने घोषणा की कि कुरान को मुसलमानों का संविधान होना चाहिए | यह ठीक उसी तरह था जिस प्रकार 1920 में मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड ने घोषणा की थी कुरान हमारा संविधान है (Kepel, 2000) | चेचन्या के सभी लोग रूस से अलगाव के पक्ष में नहीं थे, विशेषकर उत्तरी और मैदानी भागों में रहने वाले चेचेन | जो लोग अलगाव चाहते थे उनमें भी दो पक्ष थे | पहला पक्ष उन लोगों का था जिनका मानना था कि लोकतंत्र पर आधारित संवैधानिक सरकार हो | दूसरा पक्ष उन लोगों का था जो इस्लामिक मूल्यों पर आधारित सरकार चाहते थे | इस प्रकार अलगाव चाहने वाले लोग लोकतान्त्रिक सरकार के पक्ष में

उतना नहीं थे जितना कि आजादी के पक्ष में थे और इसके साथ ही साथ वे इस्लाम को सामाजिक गतिशीलता का सबसे प्रभावकारी रूप मानते थे | सेबास्टियन स्मिथ के अनुसार धर्म ने चेचन्या के प्रतिरोध में अहम् भूमिका निभाई, चेचेनों के विश्वास और सूफी भाईचारे की परंपरा ने उनके नैतिकता और नृजातीय पहचान को बनाये रखने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Smith,2006) | मोशे गाम्मेर के अनुसार चेचेन होने का मतलब मुस्लिम होना होता है | यहाँ तक कि अधिकाशतः धर्मनिरपेक्ष और पश्चिमी चेचेन राष्ट्रवादी भी यह स्वीकार करते है कि इस्लाम चेचेन पहचान, परम्परा और संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है | इस प्रकार इस्लाम मार्क्सवादी और सोवियत विचारधारा का प्रतिवाद बन जाता है | इसलिए यह स्वाभाविक था कि दुदायेव ने राष्ट्रपति पद की शपथ कुरान पर हाथ रख कर ली | चेचन्या में राष्ट्रीयता के आधार पर लोगों को एकत्र करने में धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के स्थान पर इस्लामिक विचारधारा अधिक कारागर सिद्ध हुई (Gammer, 2006) |

चेचन्या में सूफी इस्लाम की दो शखाएँ – नक्श्बंदिया और कादरिया ने आरम्भ से ही चेचनों की राष्ट्रीय और धार्मिक पहचान को बनाए रखा | दुदायेव के द्वारा चेचन्या की स्वतंत्रता की घोषणा करने के पश्चात अधिकांश रुसी लोग चेचन्या छोड़कर चले जाने लगे | चेचेन अभी तक मुख्य रूप से ग्रामीण इलाकों में रहते थे, अब वे स्लावों से खाली हुए शहरों को भरने लगे | चेचन्या में नए उत्पन्न हुए अभिजात शहरी वर्ग रूस का हिस्सा बने रहने की बजाय एक इस्लामी आवरण के पक्ष में थे, जो कि सरकार, अर्थव्यवस्था और समाज के इस्लामिक विचार को आकर्षित करता था | जबकि सूफीवादी निष्क्रिय प्रतिरोध में विश्वास करते थे और उनके पास चेचन्या की तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिए स्पष्ट सोच का आभाव था | साथ ही साथ चेचन्या में व्यापक रूप

से व्याप्त बेरोजगारी ने इसमें और सहयोग दिया | सोवियत संघ का 70% औद्वोगिक उत्पादन सोवियत रूस में होता था और सोवियत रूस अपने उत्पादनों के कच्चे माल के लिए अपने मुस्लिम क्षेत्रों पर निर्भर रहता था तथा कच्चे माल के उत्पादक इन क्षेत्रों में कभी औद्वोगिक विकास नहीं हो पाया | 1991 के समय तक चेचन्या सभी सोवियत हिस्सों में सबसे अधिक गरीब और अविकसित बना रहा और सोवियत दौर में भी चेचेनों के साथ दोयम नागरिक जैसा बर्ताव किया जाता था और साधारणतया उन्हें ऊँची शिक्षा और सरकार में ऊँचा स्थान प्राप्त करने से रोका जाता था | इन स्थितियों ने तथा अरब देशों से शिक्षा प्राप्त करके चेचन्या वापस आए चेचेन लोगों ने अपना झुकाव अरबी-इस्लामिक लोगों के प्रति प्रदर्शित किया (Gall and Waal,1998) |

अगस्त 1991 में दुदायेव ने ग्रोज्नी टेलीविजन स्टेशन पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और नेशनल गार्ड को स्थापित किया | 6 सितम्बर को दुदायेव के समर्थकों ने संसद भवन और सभी महत्वपूर्ण सरकारी भवनों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया | 15 सितम्बर को राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव होने तक के समय के लिए प्रोविजनल कौंसिल बनाई गई | अक्टूबर 1991 में राष्ट्रपति चुनाव हुए जिसमें दुदायेव के अलावा तीन अन्य उम्मीदवारों ने भाग लिया दुदायेव ने कुल 90% मत प्राप्त किए और जो संसद सदस्य चुनें गए वे भी दुदायेव के समर्थक थे | 1 नवम्बर. 1991 में दुदायेव ने चेचन्या को संप्रभु घोषित करके रूस से चेचन्या के स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी | दुदायेव के रूस से अलग होने के निर्णय को इस्लामिक पाथ पार्टी, मुस्लिम ब्रदरस, इस्लामिक कल्चरल सेण्टर ऑफ़ द चेचेन रिपब्लिक, गाँवों के मस्जिदों के इमाम और उनके मुरीद विशेषकर कुंटा-हाजी सम्प्रदाय के लोगों ने समर्थन दिया (Halbach, 2001) | चेचन्या के नए

संविधान को धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया लेकिन शपथ समारोह के दौरान कुरान को मंच पर रखा गया |

रुसी संघीय सरकार ने चेचन्या में आपातकाल घोषित कर दिया और "नेशनल चेचेन पीपल्स कांग्रेस" की सैनिक शाखा को निश्त्रीकरण करने का प्रयास किया, जिससे चेचेन लोगों के बीच इस्लामिक भावना का उभार और तेजी के साथ हुआ | इस प्रकार चरम राष्ट्रवादी विचारधारा के साथ-साथ इस्लामिक अलंकरण भी आ गया | अपने मतभेदों को एक तरफ रखते हुए चेचेन दुदायेव को राष्ट्रीय स्वाधीनता का प्रतीक मानते हुए उनके चारो ओर एकत्र हो गए | इस इस्लामिक भावना के कारण दुदायेव की स्थिति और भी मजबूत हो गई (Kudravtzev,1994) |

मुरीद युद्ध की समाप्ति के लगभग 100 सालों बाद चेचन्या में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित हुआ | दुदायेव के अनुसार चेचन्या राज्य का विचार एक धर्मनिरपेक्ष, संवैधानिक और सभी नागरिकों के लिए सामान अधिकारों, कर्तव्यों और समान अवसरों पर आधारित था | दुदायेव के अनुसार इस राज्य का आधार धार्मिक विश्वास है, जो लोगों को एकत्रित करता है | इसके साथ ही साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत जो कि रुसी अतिक्रमण के विरोध में हमारे महान पूर्वजों के संघर्षों पर आधारित है (Cornell, 2000) |

जब चेचन्या को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता नहीं मिली तब धीरे-धीरे दुदायेव का झुकाव इस्लाम को चेचन्या का राष्ट्रीय धर्म घोषित करने की ओर होने लगा | जिससे उनको इस्लामिक देशों का समर्थन प्राप्त हो सके | एक स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता न मिल पाना चेचेन सरकार के राजनीतिक और वैचारिक द्रष्टिकोण पर प्रश्नचिन्ह लगाने लगा (Cornell, 2000) |

चेचन्या के आधिकारिक धार्मिक वर्ग ने दुदायेव की घरेलू और विदेश नीति का विरोध किया | एक स्वतंत्र चेचेन मुफ्तिअत 1991 में बनाई गई और इस मुफ्तिअत के द्वारा अक्टूबर 1991 में इमाम की कौंसिल चुनी गई | इस कौंसिल के द्वारा दुदायेव के शासन में चेचन्या में हो रही आर्थिक गिरावट की आलोचना की गई | दुदायेव ने जाने-माने और प्रभावशाली इस्लामिक नेता अब्दुल-बाकी को चेचन्या इस उम्मीद से बुलाया कि वह उनकी शक्ति के आध्यात्मिक स्तम्भ बनेगें | अब्दुल-बाकी जो कि एक नृजातीय चेचेन थे, 1993 में वे चेचन्या आए | कुछ दिन चेचन्या में रहने के बाद एक स्थानीय टीवी चैनल पर शासन व्यवस्था और राष्ट्रपति की आलोचना करते हुए कहा कि एक राज्य जिसमें शासकों के पेट भरे हो और केवल मात्र एक बच्चा या वयस्क भूख से मर रहा हो तो उस शासन-व्यवस्था को इस्लामिक कहलाने का हक़ नहीं है | यदि इस्लाम और चेचेन अदत का इस्तेमाल निर्माणकारी कार्यों में न होकर केवल समाज और कानून-व्यवस्था के विध्वंस में हो रहा हो तो यह चेचेन लोगों के लिए खतरनाक होगा | अब्दुल-बाकी के इस संबोधन के अगले ही दिन उन्हें दुदायेव ने उन्हें रुसी जासूसी सेवा का जासूस, विश्व के माफिया संगठनों का उपराष्ट्रपति और विश्वास का द्रोही कहा | जबकि इसके एक महीने पहले ही दुदायेव ने अब्दुल-बाकी को "चेचन्या गणराज्य का सम्मानित नागरिक" की उपाधि से विभूषित किया था | इसी तरह चेचन्या के एक पूर्व मुफ़्ती मुखामेद्बशिर-हाजी ने दुदायेव के भय से चेचन्या को छोड़ दिया (Schaefer, 2010) |

चेचन्या आन्तरिक और बाहरी दोनों दबावों के कारण अपने राज्य व संघर्ष के स्वरुप को इस्लामिक बनाने का प्रयास करने लगा | यह प्रथम रूस-चेचेन युद्ध शुरू होने के पहले का वह समय था जब चेचन सरकार ने मध्य-पूर्व के अतिवादी इस्लामिक संगठनों के

साथ अपने सम्बन्ध बढ़ाने शुरू कर दिए | सीरिया, जोर्डन, सऊदी अरब, यूनाइटेड अरब अमीरात, टर्की और लीबिया से बहुत बड़ी संख्या में अपने आप को "इस्लाम का उपदेशक" कहने वाली मिशनरियां आने लगी, लेकिन इन मुस्लिम देशों के द्वारा चेचन्या की स्वतंत्रता को कभी आधिकारिक मान्यता नहीं दी गई (Cornell, 2000) |

चेचन्या में आयी ये मिशनरियां अतिवादी राजनीतिक इस्लाम का प्रतिनिधित्व करती थी | रूस की मीडिया के द्वारा चेचन्या में आये सभी अरबी अफगान योद्धाओं और सलाफी इस्लामवादियों के लिए बहाबी शब्द का प्रयोग किया गया | 1990 की शुरुवात में वहाबी प्रतिनिधि स्थानीय मुल्ला और इमाम के सहयोग से वहाबवाद के प्रसार के लिए साधारण योजनाए चलाते थे जैसे वहाबी सम्प्रदाय को अपनाने वाले चेचेनों को वे एक बार में $1000 से लेकर $1500 तक देते थे या $100 से लेकर $150 प्रतिमाह देते थे (Shishani, 2006) |

इस प्रकार चेचेन सूफियों का सामना सलाफी जिहादी आन्दोलन के सक्रिय प्रचारकों के साथ हुआ जो चेचेनों को सूफी इस्लाम को छोड़कर इस्लाम की अतिवादी व्याख्या को अपनाने को प्रेरित करते थे | इसके साथ ही साथ चेचन्या मध्य-पूर्व और अफगानिस्तान के मुजाहिदीनों और हथियारों के लिए प्रसिद्ध गन्तव्य हो गया | विदेश से आने वाले इन योद्धाओं में सबसे महत्वपूर्ण योद्धा इब्न अल-खत्ताब था जो आठ अन्य विदेशी योद्धाओं के साथ 1995 के वसन्त में चेचन्या आया था | खत्ताब और उसके इन सहयोगियों ने "पवित्र विदेशी योद्धा" नामक समूह बनाया, इस समूह ने 1996-1999 तक चेचन्या में सैन्य गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई और साथ ही साथ चेचेनों को सैन्य प्रशिक्षण भी दिया (Kohlmann, 2001) |

इस्लामिक मूल्यों की तरफ दुदायेव के झुकाव में विदेशी सहयोग ने मत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके परिणामस्वरूप सरकार का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप डगमगाने लगा | इस प्रकार इस्लाम सोवियत संघ के विघटन के पश्चात चेचेन पहचान का मुख्य बिंदु हो गया और शीघ्र ही यह आधुनिक रुसी राज्य के साथ ही साथ इसाई सभ्यता के विरोध का प्रतीक बन गया |

1994-1996 के दौरान चले प्रथम रूस-चेचेन युद्ध में इस्लामिक विचारधारा का पूरा प्रयोग किया गया | स्वाधीनता के लिए चले इस संघर्ष में राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर कुरान की अतिवादी व्याख्या की गई जैसे कहा गया कि यह संघर्ष मुस्लिम भू-भाग पर कब्जा किए हुए काफिरों के विरुद्ध किया जा रहा है | आक्रामक जिहाद, चेचेन भू-भाग से काफिरों को पूरी तरह से और हमेशा के लिए हटाना, ये सब वाक्य सर्वव्यापी मनोभावना बन गई | चेचन्या में जिहाद की भावना ने समाज के सभी स्तरों को, विशेषकर युवा पीढ़ी को एकीकृत कर दिया | सिर पर हरी पट्टियाँ बांधे हुए कुरान की आयातों का उच्चारण करते हुए युवा पीढ़ी, एक इस्लामिक योद्धा की तरह अपने जीवन को चेचन्या के लिए समर्पित करने के लिए तैयार थी (Kohlmann, 2001) |

दुदायेव ने 19वीं शताब्दी के मुरीद युद्ध के प्रतीकों का सहारा लिया | उन्होंने रुसी प्रतिरोध के लड़ाकों शेख मंसूर, इमाम शामिल के साथ अपना भी उदाहारण किया | दुदायेव ने 1993 में चेचन्या के संविधान में इस्लामिक कानूनों को शामिल करने का प्रयास किया लेकिन इसका विरोध वहाँ की संसद के साथ ही साथ धार्मिक वर्ग ने भी किया (Halbach, 2001) | पहला रूस-चेचेन युद्ध होने तक चेचन्या की राजनीति और यहाँ के लोग धर्मनिरपेक्ष बने रहे | इस युद्ध ने चेचेन लोगों में 18वीं और 19वीं शताब्दी के इस्लामिक प्रतिरोध की यादें ताजा कर दी |

प्रथम रूस-चेचेन युद्ध के दौरान रूस में अनेक गुरिल्ला और आतंकवादी हमले किये गए, इस तरह के हमलों में सबसे महत्वपूर्ण बुद्योंनोव्स्क (1995) और पेर्वोमय्स्कोये (1996) के हमलें थे | इन दोनों ही हमलों में इस्लामिक अतिवादियों के द्वारा इस्लामिक पहचान वाले चिह्न धारण किये गए थे | इन दोनों ही हमलों ने युद्ध के दौरान अलगाववादी चेचेन सरकार और येल्तसिन प्रशासन के बीच राजनीतिक और रणनीतिक सम्बन्धों को व्यापक रूप से प्रभावित किया (Specter, 1996) |

बुद्योंनोव्स्क के हमले को आतंकवाद के इतिहास में सफल हुए हमलों में गिना जाता है वहीं यह दूसरी तरफ रूस के लिए आतंकवाद-निरोधी अभियानों के अनुभवों में सबसे दर्दभरी स्मृति की तरह है | 14 जुलाई, 1995 को शामिल बसायेव के नेतृत्व में 80 चेचेन अलगाववादियों के समूह ने बुद्योंनोव्स्क के अस्पताल में 200 लोगों को बंधक बना लिया (Kroupenev, 2007) | बंधकों को बचाने के लिए रुसी सुरक्षाबलों के द्वारा किए गए दो असफल प्रयासों के बाद रूस के प्रधानमंत्री विक्टर चेर्नोम्यर्दीन ने अपस्ताल में शामिल बसायेव से बातचीत के लिए गए | इस बातचीत में दोनों नेताओं के बीच यह सहमति बनी कि रूस इन 200 बंधकों को छोड़ने के बदले में चेचन्या में युद्ध विराम करेगा और भविष्य में चेचन्या के साथ युद्ध के विषय पर बातचीत करेगा | 19 जुलाई को सभी बंधक रिहा कर दिए गए और बसायेव और उसके सहयोगी चेचन्या वापस चले गए, इस प्रकार इस संकट का अंत हुआ | बुद्योंनोव्स्क के इस सफल हमले के कारण रूस के तत्कालीन नेतृत्व की काफी आलोचना हुई और शामिल बसायेव का चेचन्या में एक “राष्ट्रीय नायक” की तरह स्वागत हुआ (Sadler,1996) |

इस प्रकार के कार्यों के लिए व्यापक आर्थिक और परिचालनीय समर्थन, ट्रेनिंग कैम्प और सैन्य सफलताओं ने चेचेन युवकों को काफी प्रभावित किया और इस प्रकार विदेशी वहाबी योद्धाओं ने प्रथम चेचेन युद्ध के दौरान काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Vidino, 2005) |

21 अप्रैल, 1996 को द्जोहर दुदायेव की मृत्यु हो गई और इसी वर्ष 22 अगस्त को खासव्यूर्त संधि के तहत रूस और चेचन्या के बीच युद्धविराम हो गया | इस युद्धविराम के बाद अतिवादी संगठन अपने कार्यो के लिए धन जुटाने के लिए चेचेन नागरिकों का अपहरण, नशीले पदार्थों की तस्करी व अन्य तरह के अपराधिक कृत्य करने लगे | अतिवादी संगठन अपने इस तरह के कार्यों को इस्लाम का सहारा लेकर उचित ठहरने लगे, जिससे युद्ध उपरांत चेचन्या में कानून व्यवस्था की स्थिति चरमराने लगी (Curtis, 2002) |

यदि इस युद्ध के परिणामों को देखा तो चेचेन संस्कृति को सुरक्षित रखने और विकसित करने में चेचेन राष्ट्रवाद सफल रहा और इस्लाम ने अविवादित रूप से इसमें केन्द्रीय भूमिका निभाई | इसके साथ ही साथ इस युद्ध के परिणामस्वरुप हुए इस्लामीकरण की प्रक्रिया और पूर्व के चेचन समाज में स्पष्ट रूप से विभिन्नता देखी जा सकती है | इस युद्ध के पश्चात चेचेन समाज में सोवियत दौर में शिक्षित सम्भ्रान्त्यों का स्थान अतिवादी और चरमपंथी युद्ध नेताओं ने ले ली | इस युद्ध का एक परिणाम यह भी रहा कि चेचेन लोगों में रूस विरोधी भावना का प्रसार पूर्ण रूप से हो गया (Kroupenev, 2007) |

पहला चेचेन युद्ध समाप्त होने के बाद चेचन्या के नेताओं ने वहाबवाद की विचारधारा और धन के प्रभाव महसूस किया जो कि वास्तव में मध्य-पूर्व से चेचन्या में निर्यात किया गया था | इसीलिए गणराज्य के मुख्य मुफ़्ती अखमद कद्ग्रोव ने वहाबियों पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की (Gammer, 2008) |

प्रथम रूस-चेचेन युद्ध के दौरान किये गए कार्यों के कारण अरब योद्धाओं को चेचेनों के बीच काफी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई | हालाँकि प्रथम चेचेन-रूस युद्ध के दौरान राष्ट्रवाद की भावना प्रबल रही और इस्लाम ने सहायक भूमिका निभाई | इस युद्ध के दौरान चेचन्या की अर्थव्यवस्था का 80 % भाग नष्ट हो गया जिसके कारण चेचनों के जीवन में काफी समस्याए उत्पन्न हुई | जिसका प्रभाव चेचन्या की राजनीति पर पड़ा और सलाफी-जिहादी विचारधारा ने निराश चेचेन नवयुवकों को अपनी तरफ आकर्षित किया | दुदायेव के बाद कार्यवाहक राष्ट्रपति बने यांदेर्बेव ने चेचन्या में शरिया अदालतों की स्थापना की घोषणा की, जिससे अरब देशों से उन्हें सहायता प्राप्त हो सकें | इन सब कारणों से चेचन्या में सलाफी-जिहादी गतिविधियाँ तीव्र हो गई | इस दौरान अनेक विदेशी सहायता संगठन भी चेचन्या में अपनी शाखाएं खोलने लगे जैसे अल-हरमैन संस्थान, द इन्टरनेशनल फोरम फॉर मुस्लिम यूथ रिलीफ आर्गेनाइजेशन इत्यादि (Vachagaev, 2000) |

चेचन्या में पहला “गजावत” 1780 में शेख मंसूर (खालिदिया नक्श्बंदिया शेख) के द्वारा प्रारंभ की गई, इन्होनें यहाँ प्रचलित लोक इस्लाम के स्थान पर मूलभूत इस्लाम को पालन करने पर जोर दिया | दूसरा गजावत नक्श्बंदिया शेखों के द्वारा प्रारंभ किया गया, इसमें विशेष रूप से प्रचलित नाम शेख शामिल का है | रुसी अधिपत्य के प्रारम्भ से ही चेचेनों ने रूस के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा और इस्लामिक मूलभूतवाद उनकी विचारधारा

में स्थान प्राप्त करता रहा इस तरह वे वे विदेशी मुस्लिम राज्यों का समर्थन प्राप्त करते और साथ ही साथ अपने लोगों को एकजुट रखते थे |

वहाबवाद सुन्नी इस्लाम के हनबली स्कूल से सम्बंधित एक सम्प्रदाय है | इस संप्रदाय का नाम इसके संस्थापक मुहम्मद इब्न अब्द अल-वहाब (1703-1792) के नाम से सम्बंधित है | इसको रुढ़िवादी संप्रदाय भी कहा जाता है जो शुद्ध इस्लाम की बात करता है | यह संतो के मजारों की इबादत, रहस्यमयता, नृत्य और संगीत की आलोचना करता है | वहाबवाद शरिया पर आधारित राज्य का समर्थन करता है, यह धर्मनिरपेक्ष सरकार के स्वरूप को स्वीकार नहीं करता है | वहाबवाद हिंसा की वकालत नहीं करता है किन्तु जब इसके अनुयाइयों को लगे कि शरिया सरकार की स्थापना करने के लिए कोई अन्य उपाय नहीं बचा है तो ये हिंसा का सहारा ले सकते है (Schaefer, 2010) |

रुसी सरकार और कुछ चेचेनों के द्वारा भी चेचन्या में होने वाली सभी इस्लामिक अतिवादी और आतंकवादी गतिविधियों के लिए वहाबियों को उत्तरदायी ठहराया जाता है | यहाँ यह भी कहना आवश्यक है कि चेचन्या के अतिवादी इस्लामिस्ट अपने आप को कभी वहाबी नहीं कहते | सऊदी अरब की सरकार भी चेचन्या के अतिवादी इस्लाम के साथ अपने किसी भी प्रकार के सम्बन्ध से इंकार करती है | रुसी सरकार का कहना है कि चेचन्या आने वाले वहाबी स्थानीय मुसलमानों को धार्मिक अतिवादी बनाते है और ये धार्मिक अतिवादी ही आतंकवादी हमले करते है | किन्तु रुसी सरकार का वहाबियों और आतंकवादियों को समतुल्य मानना उचित नहीं है (Choueiri,2006) |

चेचन्या की अतिवादी मुस्लिम विचारधारा सैय्यद कुतब और अब्दुल्लाह अज्जाम के विचारों पर आधारित है | सैय्यद कुतब को कई पश्चिमी विचारक समकालीन अतिवादी इस्लामिक विचारधारा का धर्मपिता मानते है | कुतब मिस्र के रहने वाले थे, इन्होंने अमेरिका में शिक्षाशास्त्र पर अध्ययन किया था | कुतब ने अतिरुढ़िवादी इस्लामिक विचारधारा का प्रतिपादन किया था | इनके अनुसार पूरा विश्व दो विरोधी कैम्पों में बटा हुआ है, एक तरफ अल्लाह पर विश्वास करने वाले लोग है तो दूसरी तरफ काफ़िर है | अब्दुल्लाह अज्जाम फ़िलिस्तीन के रहने वाले थे, इन्होंने मुजाहिदीनों को सोवियत संघ के विरुद्ध सफलता प्राप्त करते हुए देखा था | अज्जाम ने एक "पार-राष्ट्रीय इस्लामिक ब्रिगेड" के निर्माण की अवधारणा प्रस्तुत की जो पूरे विश्व के मुस्लिम समुदाय की रक्षा कर सके | यह बिल्कुल उसी प्रकार का "अंतर्राष्ट्रीय इस्लामिक ब्रिगेड" था, जिसका खत्ताब ने प्रथम रूस-चेचेन युद्ध के दौरान निर्माण करने का प्रयास किया था (Schaefer, 2010) |

दुदायेव के बाद कार्यवाहक राष्ट्रपति यांदार्बियेव ने चेचन्या को एक इस्लामिक देश घोषित किया और उन्होंने धर्मनिरपेक्ष अदालतों की जगह शरिया अदालतें स्थापित करने की घोषणा की | इसके पश्चात् चेचन्या में 30 धार्मिक अदालतें स्थापित की गई, जिसमें से 5 ग्रोजनी में थी | ये अदालतें विवाह, तलाक और शराब के उपभोग से सम्बंधित मामलें देखती थी और ये अदालतें इस्लामिक नियमों के अनुसार ही दण्ड देती थी | इन अदालतों के फैसलों के खिलाफ कहीं भी अपील नहीं की जा सकती थी (Borovinkov,2000) |

इन इस्लामी अदालतों के नियम "मलिकी डाक्ट्रिन" पर आधारित थे, जबकि चेचेनों के द्वारा "अल-शफिई डाक्ट्रिन" का पालन किया जाता था | इन धार्मिक अदालतों का प्रमुख अबू अल-सैफ को बनाया गया जो कि सऊदी का रहने वाला था | अबू अल-सैफ ने इन

अदालतों पर अरब दुनिया के प्रभाव को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया, उसके अनुसार चेचन्या में जब हमें किसी केस को लेकर समस्या उत्पन्न होती है तब हम उसे शेख मुहम्मद सालेह अल-ओथिमीन के सम्मुख प्रस्तुत करते है और हम पाते है कि वे इन समस्याओं के प्रति काफी जिम्मेदार रहते हैं | वे बिना किसी शिकायत के हमारे प्रश्नों का समाधान करते हैं | इस प्रकार ये अदालतें इस्लामिक नियमों का पालन करने के साथ ही साथ रूस से चेचन्या के सम्बन्ध-विच्छेद की प्रतीक भी थी | यांदार्बियेव "इस्लामिक मॉडल" के पूर्ण समर्थक थे इसलिए इन्होने इस्लामिक कानूनों के साथ-साथ अरबी भाषा को अनिवार्य विषय घोषित करवाया (Souleimanov, 2005) |

जनवरी 1997 में असलन मास्खादोव चेचन्या के राष्ट्रपति चुने गए | अनेक युद्धनेताओं ने मास्खादोव की सत्ता का विरोध किया | एक संवैधानिक व्यस्थापन व्यवस्था, निष्पक्ष चुनाव, धर्मनिरपेक्ष अदालतें युद्धनेताओं के हितों के प्रतिकूल थी | इन युद्धनेताओं को स्थानीय समर्थन ही प्राप्त था | चेचन्या के पहाड़ी क्षेत्रों के साथ-साथ वेदेनो और जा-वेदेनो गाँव का समर्थन शामिल बसायेव को प्राप्त था | सलमान रादुयेव को गुदेर्मेस के शहर और दागिस्तान की सीमा से लगते हुए चेचन्या के उत्तरी क्षेत्रों का समर्थन प्राप्त था | अरबी बरायेव के पास उरुस-मर्टन क्षेत्र का और सेर्जे-युर्ट क्षेत्र का समर्थन खत्ताब को प्राप्त था | इन युद्धनेताओं की अपने-अपने क्षेत्रों में अच्छी पकड़ थी किन्तु राष्ट्रव्यापी स्तर पर इन्हें समर्थन नहीं प्राप्त था (Kroupenev, 2009) |

ये युद्धनेता इस्लामी विचारधारा के आधार पर अपनी शक्ति बढ़ाते जा रहे थे किन्तु इनकी बढ़ती शक्ति से जाति के बुजुर्गो, महक-खेल (चेचन्या में अंतर-जाति सम्बन्धों को बनाये रखने का पारम्परिक केन्द्रीय संगठन), मुफ्तियत (मुस्लिम धार्मिक वर्ग की कौंसिल) की राजनीतिक शक्ति में कमी आ रही थी | अनेक मुस्लिम विद्वान अरबीकरण

की प्रक्रिया का विरोध करने लगे | युद्धनेताओं के संबध जाति के बुजुर्गों, पारम्परिक मुफ़्ती, चेचेनों के शिक्षित वर्ग और राष्ट्रपति मास्खादोव के साथ अच्छे नहीं थे | आक्रामक राजनीतिक इस्लाम जिसका प्रवेश चेचन्या में 1990 में हुआ, उसने युद्धनेताओं को किसी भी घरेलू वैचारिक प्रतिरोध यहाँ तक कि पारम्परिक धार्मिक वर्ग को उपेक्षित करने का अधिकार शुद्ध इस्लाम के नाम पर दे दिया था (Akayev, 1998) |

सलाफी-जिहादी शासन के समर्थकों और राष्ट्रपति मास्खादोव के समर्थकों के बीच विभाजन स्पष्ट रूप से 1998 की गर्मियों से दिखना प्रारंभ हो गया | 14 जुलाई 1998 को गुदेर्मेस में मास्खादोव समर्थक यामदयेव और वहाबियों के समर्थकों के बीच संघर्ष हुआ | इसमें वहाबियों का नेतृत्व अरबी बरयेव और अब्दुल-मालिक मेज्हिदोव कर रहे थे, ये दोनों सैन्य शरिया अदालत के स्वयंघोषित जज थे | इस संघर्ष में गुदेर्मेस के लोगों ने यामदयेव का सहयोग किया | इस संघर्ष में 30 वहाबी, 20 यामदयेव के समर्थक और 10 साधारण नागरिक घायल हुए (Vatchagaev, 2005) |

गुर्देर्मेस की इस घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चेचेन राष्ट्रपति मास्खादोव ने कहा कि वहाबियों के द्वारा किये जा रहे सैन्य कार्य और राजनीतिक विध्वंस के कार्य चेचन्या में कानून-व्यवस्था की अवमानना को दर्शाते है | मास्खादोव ने आरोप लगाया कि अरब देशों के द्वारा चेचन्या में चेचन्या में वहाबी गतिवधियों के प्रसार के लिए धन उपलब्ध कराया जा रहा है | उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि केवल चेचेन राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए वे इनकी गतिविधियों को सहन कर रहे है (Vatchagaev, 2005) |

गुदेर्मेस की घटना ने चेचेन समाज का तेजी से ध्रुवीकरण किया और विभिन्न इस्लामिक धड़ो के बीच के मतभेद को उजागर कर दिया | चेचन्या के मुख्य मुफ़्ती अखमद कदिरोव

ने वहाबी गुट के विरुद्ध चेचन्या, इनगुशेतिया और दागिस्तान के मुस्लिम नेताओं के साथ एक ग्रोज्नी में संयुक्त मोर्चा बनाया | इस मोर्चे में शामिल सभी लोगों ने वहाबियों की आलोचना की और वहाबवाद के विरुद्ध कानून बनाने की तथा वहाबी चरित्र वाले शस्त्र समूहों को प्रतिबंधित करने की मांग की |

सूफी समर्थक धड़े ने जनता के बीच मास्खादोव को चुना और वहाबी समर्थक सैन्य-राजनीतिक विरोधी समूह ने युद्धनेताओं और पूर्व सरकार के कुछ सदस्यों को अपना प्रतिनिधि चुना | दोनों ही समूह अपने आप को वैधता देने के लिए स्वयं को इस्लामिक मूल्यों का सच्चा रक्षक सिद्ध कर रहे थे | 3 फरवरी 1998 को राष्ट्रपति मास्खादोव ने कार्यकारी आदेश द्वारा शरिया कानून को लागू कर दिया और इसी के साथ ही साथ शरिया मंत्रालय स्थापित किया | इसके पश्चात चेचन्या में नियम-कानून शरिया और कुरान के दिशा निर्देशों के अनुसार बने | धर्मनिरपेक्ष सरकारी संस्थान समाप्त कर दिए गए | राष्ट्रपति मास्खादोव ने आदेश दिया की सभी सरकारी भवनों में एक प्रार्थना कक्ष अवश्य होना चाहिए और महिला सरकारी कर्मचारियों को हरा स्कार्फ पहनना अनिवार्य कर दिया गया (Shishani, 2005) |

यह सब करने के बावजूद भी मास्खादोव संसद को विघटित नहीं कर पाए और न ही संविधान का उन्मूलन कर पाए | संसद विधायन सम्बन्धी कार्य नहीं कर पा रही थी, इसकी भूमिका निरीक्षण मात्र की रह गई थी | इस समय मास्खादोव द्वारा चेचन्या के संसद को जो अंतिम कार्य दिया गया था वह शरिया पर आधारित संविधान का मसौदा तैयार करना था और इस कार्य को चेचन्या के सांसदों ने धार्मिक वर्ग की सलाह-मशविरा से एक माह के भीतर तैयार कर लिया (Kroupenev, 2009) |

मास्खादोव के इस्लामिक सुधारों के कारण उनके विपक्ष ने तेजी के साथ अपनी स्वयं की "सूरा कौंसिल" स्थापित कर ली | इस कौंसिल में यांदार्बियेव, रादुयेव, इस्रायिलोव, उदुगोव, मखाशेव, ज़कयेव को मिलकर कुल 35 सदस्य शामिल थे | इस कौंसिल ने शामिल बसायेव को अपना अमीर या नेता चुना | अमीर चुने जाने के बाद बसायेव ने अपने पहले बयान में कहा कि अमीर के पास इस बात का पूरा प्राधिकार है कि वह एक स्वतंत्र शरिया राज्य स्थापित कर सकता है | बसायेव ने मास्खादोव के ऊपर यह आरोप लगाया कि उन्होंने युद्ध के लड़ाकों का शोषण किया है और वे चेचेन स्वाधीनता के लिए भी संकट है | इस बयान में यह भी कहा कि चेचन्या के लिए एक नए नेता का चुनाव शरिया पर आधारित होना चाहिए |

बसायेव के अपने साथ प्रतिस्पर्धा में आने के कारण मास्खादोव ने चेचेन समाज और सरकार में इस्लामी एकीकरण लाने के अपने प्रयासों में वृद्धि कर दी | मास्खादोव ने प्रत्येक गाँव में अपने भरोसेमंद लोगों का एक दस्ता तैनात कर दिया जो शरिया कानूनों के क्रियान्वयन की निगरानी कर सके | मास्खादोव एक ऐसी अद्भुत राजनीतिक व्यवस्था बनाना चाहते थे जहाँ शरिया की केन्द्रीय भूमिका हो और राष्ट्रपति इस्लामिक कानूनों के व्याख्याता, रक्षक और गारंटर के रूप में कार्य करें | मास्खादोव ने अतिवादी युद्धनेता उमारोव और उदुगोव के ऊपर खुले रूप में यह आरोप लगाया कि ये एक नए धार्मिक आन्दोलन को खड़ा करना चाहते है, जो कि सऊदी अरब द्वारा निर्देशित है और इसका उद्देश्य चेचेन समाज को विभाजित करना है | मास्खादोव के अनुसार उनका लक्ष्य हमें अफगानिस्तान के तालिबान की तरह परिवर्तित कर देना है लेकिन हम सुन्नी लोग नक्शबंदिया और कादरिया आन्दोलन के अनुयायी है, इनके अतिरिक्त हम चेचन्या

में अन्य किसी प्रकार का इस्लाम स्वीकार नही कर सकते है | मास्खादोव ने वहाबियों और अपने विरोधी कौंसिल के समर्थकों को सजा देने की बात की (Kroupenev, 2009) |

चेचन्या में इस्लाम के इस राजनीतिकरण के दो आधार देखे जा सकते है | राष्ट्रपति विद्रोही समूह के द्वारा वहाबी उग्रवादी इस्लाम को बढावा देने का प्रयास किया गया | अपने इस प्रयास को वे सार्वभौमिक इस्लाम के आधार पर वैध ठहराने का प्रयास किया | उनके अनुसार वे चेचेन समाज को सम्पूर्ण विश्व के मुस्लिम समुदाय के साथ जोड़ने का प्रयास कर रहे है | दूसरी तरफ मास्खादोव ने परम्परागत सूफीवाद के रास्ते से अपने आप को वैध ठहराने का प्रयास किया | वास्तव में इन दोनों के बीच अध्यात्मिक-धार्मिक टकराव केवल अपने-अपने राजनीतिक हितों के लिए था |

हालाँकि राष्ट्रपति मास्खादोव 1996 से 1998 के बीच अपनी सरकार और विरोधी पक्ष के बीच कई बार सामंजस्य बनाने का प्रयास किया था | मास्खादोव सत्ता में सूफीवाद के प्रतिनिधि के रूप में आए और अपने विपक्ष को निष्प्रभावी बनाने का प्रयास किया | उन्होंने अपनी सरकार में अतिवादी इस्लामिक कहे जाने वाले लोगों को अपनी सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया (Vatchagaev, 2005) |

अरब योद्धा खत्ताब और शामिल बसायेव ने एक दुसरे के साथ सहयोग किया और “इस्लामिक अंतरराष्ट्रीय ब्रिगेड” बनाया | इस गठबंधन ने सलाफी-जिहादी ताकतों को मजबूती प्रदान की और उन्होंने 1999 में दागिस्तान के एक छोटे से क्षेत्र पर अधिकार करके वहाँ शरिया कानून लागू करने की घोषणा की और इसके साथ ही साथ चेचेन अतिवादियों के द्वारा सितम्बर 1999 में रूस के तीन शहरों बुयनास्क, मास्को,

वोल्गोडोंस्क में चार अपार्टमेंट ब्लाक में विस्फोर्ट किये गए | इसकी प्रतिक्रियास्वरूप रूस ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणा की (Goldfarb and Litvinenko, 2007) |

1999 में हुए दुसरे युद्ध के दौरान रूस ने चेचन्या के प्रति अपनी नीतियों को बदल लिया | पूर्व ख़ुफ़िया अधिकारी वाल्द्मिर पुतिन ने सत्ता में आने के बाद यह वादा किया था कि वह पुनः रूस को विश्वशक्ति बनायेंगे और रूस में इस्लामिक कट्टरपंथ के खिलाफ लड़ेंगे | इस युद्ध ने एक बड़ी संख्या में विदेशी लड़ाकों को आकर्षित किया था | 1999 के अंत तक रुसी सेना ने ग्रोज्नी को अपने अधिकार में ले लिया था | इस युद्ध के प्रतिउत्तर में चेचेन अलगाववादियों ने रुसी नागरिकों के ऊपर अनेक हमले किए | इस युद्ध के दौरान दोनों पक्षों की तरफ से ही मानवाधिकार के उल्लंघन के अनेक मामले सामने आए |

युद्ध के दौरान बसायेव और खत्ताब के द्वारा इस युद्ध के अनेक लक्ष्य दिए गए जैसे इस्लामिक समाज के लिए विजय जिसमें कोई गरीब या अमीर नहीं होगा, कैस्पियन सागर और काला सागर के बीच एक इस्लामी साम्राज्य का निर्माण आदि (Shermatova, 1999) | अफगानिस्तान युद्ध और प्रथम रूस-चेचेन युद्ध में हुए भारी नुकसान से सबक लेते हुए रुसी सेना ने चेचेन अलगावादियों के प्रति असहिष्णुता की नीति का पालन किया | इस युद्ध के दौरान विदेशी सरकारों और मानवाधिकार संगठनों की आलोचनाओं की तरफ भी कोई ध्यान नहीं दिया |

अल-हरमैन संस्थान, द इन्टरनेशनल फोरम फॉर मुस्लिम यूथ रिलीफ आर्गेनाइजेशन इत्यादि संगठनों को रूस के द्वारा 1999 में बंद किया जाने लगा तो ये खत्ताब के द्वारा स्थापित ट्रेनिग कैम्पों को धन उपलब्ध कराने लगे और ये सलाफी-जिहादी विचारधारा या

"शुध्द इस्लाम" की बात करने लगे | ये संगठन चेचन्या के परम्परागत सूफी इस्लाम को काफ़िर पंथ कहकर निंदा करने लगे | जूली विल्ल्हेमसेह ने इस बात का अध्ययन किया कि चेचन्या के राष्ट्रवादी और सलाफी-जिहादियों के बीच गठबंधन कैसे बना | उनके अनुसार कुछ चेचेन नेता जैसे शामिल बसायेव, जिलमखान यांदेर्बेव, मोव्लादी उदोगोव, सलमान रादुएव, मोसवर बरयेव ने खत्ताब द्वारा मिलने वाले धन की मदद से उग्र इस्लामिक स्थिति को ग्रहण किया (Shishani, 2005) |

11 सितम्बर की घटना के पश्चात् चेचन्या की आजादी का संघर्ष अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के रूप में देखा जाने लगा | चेचन्या में रूस की समर्थक सरकार बनायी गई | इस सरकार का प्रमुख चेचन्या के पूर्व मुफ़्ती अखमद कदिरोव को बनाया गया जो कि प्रथम रूस-चेचेन युद्ध में रूस के खिलाफ लड़ें थे | चेचन्या में सलाफी-जिहादियों के बढ़ते प्रभाव के कारण अखमद कदिरोव ने रूस की तरफ आने का निश्चय किया | दुसरे युद्ध के दौरान पुतिन के द्वारा चेचेनीकरण की नीति को अपनाया गया जिसके तहत रूस ने कादिरोव परिवार को अपना समर्थन दिया | इस नीति के तहत चेचन्या की समस्याओं को चेचेनों द्वारा सुलझाने पर जोर दिया गया (Eichler, 2011) |

यद्यपि चेचेन अलगाववादियों को सैन्य उपायों द्वारा पराजित तो किया जा चुका था किन्तु अनेक प्रसिद्ध युद्धनेता जैसे खत्ताब, गेलायेव, यांदार्बियेव, रादुयेव, सय्दुलायेव और बसायेव सक्रिय बने हुए थे | 23 अक्तूबर 2002 में मास्को थियेटर अपहरण कांड हुआ | इस घटना को 40 से 50 चेचेन अलगाववादियों ने अंजाम दिया | इन अलगावादियों का नेतृत्व चेचेन दिवंगत अलगाववादी नेता अरबी बरयेव का सम्बन्धी मोवसर बरयेव कर रहा था | उनकी मांग यह थी कि रुसी सेना बिना शर्त के और तुरंत चेचन्या को छोड़ दे | इसके लिए अलगाववादियों ने एक सप्ताह की समय सीमा दी हुई

थी | मोवसर बरयेव के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को अपना भविष्य निर्धारित करने का अधिकार है | अल्लाह ने ये अधिकार सभी को दिया हुआ है, हम भी अपना ये अधिकार चाहते है किन्तु रूस ने हमारा ये अधिकार हमसे छीन लिया है | अल्लाह ने हमें स्वतन्त्रता का अधिकार और अपने भाग्य को चुनने का अधिकार दिया है और रुसी घुसपैठिए ने हमारी धरती को हमारे बच्चों के खून से रंग दिया है | चेचन्या में शेख, औरतें और मासूम बच्चे मारे जा रहे है | यही कारण है कि हमने यह तरीका चुना है, चेचन्या की स्वतंत्रता के लिए हम लोगों ने मास्को में मरने का निश्चय किया है | अगर हम मरते है तो अन्य लोग भी आगे आएंगे और हमारा अनुसरण करेंगे | अल्लाह के रास्ते में और अपने राष्ट्र को आजाद कराने के लिए हमारे भाइयों और बहनों को अपना जीवन बलिदान देने की इच्छा है | जब हमारे राष्ट्रवादी मरते है तो लोग कहते है की ये अपराधी और आतंकवादी है जबकि सच्चाई ये है कि असली अपराधी रूस है[17] | इन अलगाववादियों ने 850 लोगों को बंधक बनाया हुआ था, जिसमे से 170 लोग बचाव अभियान के दौरान मारे गए |

24 अगस्त 2004 में रुसी एयरक्रॉफ्ट बाम्बिंग हुई | मास्को के दोमोदेदोवो इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरे हुए दो हवाई जहाज वोल्गा-अविया एक्सप्रेस फ्लाइट 1353 और साइबेरिया एयरलाइन्स फ्लाइट 1047 में बम विस्फोर्ट की घटना हुई | इन दोनों ही हवाई जहाजों में कुल 90 लोग सवार थे जिसमें सभी की मृत्यु हो गई | चेचेन अलगाववादी नेता शामिल बसायेव ने इस घटना की जिम्मेदारी ली उसके अनुसार उसने इस कार्य के लिए कुल $4,000 दिए थे | इस घटना में ग्रोज्नी की रहने वाली दो महिला आत्मघाती

[17] Gunmen release chilling video", CNN.com/world. Available at: http://edition.cnn.com/2002/WORLD/europe/10/24/moscow.siege.video/, Accessed on:May 16,2016

हमलावरों (सत्सिता द्ज्हेबिर्खानोवा, अमानता नगयेवा) का इस्तेमाल किया गया (Kurz and Bartles,2007) |

बेसलान स्कूल अपहरण कांड सितम्बर 2004 में हुआ | ये चेचेन अपहरणकर्ता रियादुस सलिखिन बटालियन से सम्बंधित थे जो शामिल बसायेव के निर्देश पर इस घटना को अंजाम दिया | बेसलान स्कूल उत्तरी ओसेटिया में स्थित है | चेचेन अपहरणकर्ताओं ने कुल 1,100 लोगों को बंधक बनाया जिसमें 777 बच्चे शामिल थे| इनकी मांग यह थी कि रुसी सेना चेचन्या को छोड़ दे और चेचन्या की स्वतंत्रता को संयुक्त राष्ट्र मान्यता प्रदान करे | इस अपहरण के तीन दिन बाद रुसी सुरक्षा बलों ने टैकों और भारी हथियारों का प्रयोग कर बंधकों को मुक्त कराया | इस पूरे अभियान के दौरान 330 बंधक मारे गए (Satter, 2006) |

2005 में प्रकाशित "वहाबिज्म इन द नार्थ काकेसिया" में मर्केदोनोव ने उत्तरी काकेसिया पारम्परिक सूफीवाद और वहाबवाद में अंतर स्पष्ट किया है | उनके अनुसार उत्तरी काकेसिया में पारम्परिक इस्लाम रीति-रिवाजों के साथ जुड़ा हुआ है जो कि अपने आप को अतिवादी इस्लाम से अलग पाता है | चेचन्या में सूफी परम्परा "तरीक" के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, जो कि मुख्य रूप से तीन है- नक्श्बंदिया, कादरिया और शाज़लियाह | ये तीनों एक दुसरे से भिन्न विचारों पर आधारित है तथा इनके अपने रीति-रिवाज भी अलग-अलग है | ये अपने प्रार्थना में कुरान और मुहम्मद साहब के सुन्नत के अलावा अन्य चीजों का भी समिश्रण करते है (Makalati, 1994) |

नक्श्बंदिया तरीक के लोग शांति से चुपचाप तरीके से जिक्र (ईश्वर को याद करना) करते है जबकि कादरिया तरीक के लोग नाचते, गाते और ताली बजाते हुए जिक्र करते है | इन तरीक के अपने-अपने विर्द भी होते है, ये विर्द उनके अपने शेखों के नाम पर आधारित होते है | नक्श्बंदिया तरीक में ताशु-हाजी, अख्मतुक-हाजी, एलाख-मुल्ला, अब्दुल-वाख्लाबा, अब्दुल-अज़ीज़ शाप्तुकायेव, देनी-अर्सनोव, युसुप-हाजी, कोस्खेल्दिन्स्क्य विर्द, बगौत्दीन अर्सनोव, उमलत-हाजी, सुगैप-मुल्ला, उजुन-हाजी, सोल्स-हाजी, सुलेइमान-हाजी, अल्बस्त-हाजी, मगोमेद-अमिन, यांगुल्बा-हाजी, काना-हाजी, इब्रागिम-हाजी, कोसुम-हाजी और शमसुद्दीन-हाजी विर्द है | चेचन्या में रहने वाले मुसलमानों में लगभग 18% लोग नक्श्बंदिया शाखा के मानने वाले लोग है | कादरिया तरीका के अंतर्गत कुंटा-हाजी, बमत्गिरेइ-हाजी, चिम्मिर्ज्य, अली मितेव, मणि-शेख और विस-हाजी विर्द हैं | चेचन्या में रहने वाले मुसलमानों में लगभग 70% लोग कादरिया शाखा के मानने वाले लोग है (Akayev, 2010) |

सोवियत समय में अर्सनोव विर्द लोकप्रिय था किन्तु वर्त्तमान समय में चेचन्या में कादरिया शाखा की शेख कुंटा हाजी विर्द सबसे अधिक प्रभावशाली है | इसके सदस्यों में चेचन्या के राष्ट्रपति रमजान कदिरोव, चेचन्या के मुख्य मुफ़्ती और धार्मिक वर्ग के प्रभावशाली लोग सम्मलित है | रमजान कदिरोव ने नक्श्बंदिया शेख कुंटा हाजी की जियारत का पुनर्निर्माण करवाया | इसके अतिरिक्त चेचन्या में बटल-हाजी विर्द भी काफी प्रभावशाली है |

इन सब मुस्लिम सम्प्रदायों में एक नया आन्दोलन वहाबवाद के नाम से प्रचलित हुआ है | ये शुद्ध इस्लाम की बात करते हैं और तौहीद (धार्मिक एकता) पर जोर देते है | ये पैगम्बर मुहम्मद साहब के सुन्नाह की स्थापना को अपना प्रमुख कर्तव्य मानते है | ये

स्थानीय इस्लाम को बदलने पर जोर देते है ये सूफीवाद को इस्लाम के लिए नुकसानदायक मानते है | उत्तरी काकेशस में वहाबवाद का उदय चेचेन युद्ध के समय हुआ और यह पारम्परिक सूफी इस्लाम के विरोध में कार्य कर रही है (Akayev, 2010) |

1997 में 20 धार्मिक अध्यापकों की हत्या वहाबियों द्वारा चेचन्या में की गई | वहाबी इससे भी अधिक पागलपन वाले कार्य करते थे जैसे लोगों को उनके घर वालों के सामने ही प्रताड़ित करते थे और उनकी हत्या कर देते थे | वहाबी अपने विरोधी लोगों के घरों को जला देते थे और ये छोटे बच्चों को भी सजा देने में नहीं चुकते थे (Mirzayev, 2007) |

चेचन्या में पुरुष और महिलायें पारम्परिक रूप से यूरोपीय तौर तरीके वाले कपड़े पहनते हैं लेकिन वहाबी महिलाओं को हिजाब पहनने के लिए और पुरुषों को लम्बी दाढ़ी और अरबी तरीके के कपड़े पहनने के लिए प्रेरित करते हैं | चेचन्या में पारम्परिक धार्मिक शिक्षक शांति, दया की बात करते हैं तथा ये किसी भी प्रकार के युद्ध के विरुद्ध हैं वहीं वहाबी युद्ध और जिहाद के रास्ते को गौरवपूर्ण बतातें हैं | पारम्परिक चेचेन मुस्लिम अल्लाह के साथ ही पैगम्बर साहब और अपने सूफी संतो के नाम का उच्चारण करते हैं लेकिन वहाबी इसे गैर इस्लामिक मानते हैं | वहाबियों द्वारा चेचन्या में नए धार्मिक पुस्तकों का वितरण किया जा रहा है जिसमें "एक ईश्वर" नामक पुस्तक प्रमुख हैं | पारम्परिक रूप से चेचेन परिवार में पिता को प्रमुख माना जाता है लेकिन वहाबी "मुस्लिम भाईचारा" के विचार को प्रस्तुत करते हुए इसे माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से ज्यादा महत्त्व देने की बात करते हैं | इसके कारण कई परिवारों में माता–पिता को वह सम्मान नहीं प्राप्त हो पा रहा है जो उन्हें पहले प्राप्त था | वहाबी चेचन्या में इस्लाम के उग्र रूप को प्रदर्शित कर रहे हैं, और जो भी पारम्परिक धार्मिक नेता इनका

प्रतिरोध करते हैं ये उनकी हत्या कर देते हैं | अधिकांश चेचेन वहाबवाद का समर्थन नहीं करते है लेकिन जब पारम्परिक चेचेन इमामों को मार दिया जाता है तब भी अधिकांश चेचेन उसका प्रतिरोध नहीं करते हैं (Tishkov,2004) |

वहाबी संप्रदाय के सदस्य एक दुसरे को इखवान के नाम से बुलाते है | इस कार्य को इखवानवाद के नाम से संबोधित किया जाता है | वहाबवाद चेचन्या में नए समस्याओ को जन्म दे रहा है जबकि वहाँ कई समस्याएँ पहले से ही मौजूद हैं | वहाबी अपने लिए अलग से मस्जिदों का निर्माण कर रहे है | ये शुद्ध इस्लाम की बात करते है | यह शुद्ध इस्लाम बेरोजगार, वंचित लोगों के बीच लोकप्रिय हो रहा है | ये नवयुवकों को अरब देशों में इस्लाम के अद्धयन के लिए धन उपलब्ध कराते हैं | इस समय चेचन्या में पारम्परिक सूफी और वहाबियों के बीच संघर्ष की स्थिति बनी हुई है (Tishkov,2004) |

चेचन्या में विदेशी योद्धा जिसमे मुख्य रूप से अरबी लोग शामिल है और जिनकी उम्र 20 से 40 साल के बीच में है उन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में बंटा जा सकता है | व्यवसायिक लोग- इसमें वो लोग शामिल है जिन्हें अफगानिस्तान, बोस्निया, ताजकिस्तान में युद्ध का अनुभव रहा है, चेचन्या के युद्ध में ये लोग बहुमत से है | नवयुवक स्वयंसेवक - इसमें वे गैरअनुभवी युवा शामिल है जिन्हें कैसेट, सीडी आदि के द्वारा जेहादी बनने के लिए प्रेरित किया गया है (Williams, 2004) | युवा चेचेन; इसमें वे चेचेन शामिल है जो अरब देशों में रहते है और ये धर्म की अपेक्षा राष्ट्रवाद से अधिक प्रेरित है | इन विदेशी लड़ाकों में 59% सऊदी, 14% यमनी, 10% मिश्र, 6% कुवैती और 11% अन्य देशों के है | इन विदेशी लड़ाकों में सैन्य स्तर पर खत्ताब, अबू अल-वालिद अल-घमिदी,अबू हफ्स अल-उर्दिनी और विचारधारात्मक स्तर पर अबू ज़ैद अल-कुवैती, अबू ओमर अल-सैफ ने नेतृत्व किया (Vidino, 2005) |

सलाफी-जिहादी विचारधारा सलाफी और जिहादी विचारधारा का समवाद है | सलाफी विचारधारा इस्लामिक साहित्य का सहारा लेकर इस्लामिक समाज की स्थापना को अपना लक्ष्य मानती है और जिहादी विचारधारा हिंसा को मुख्य साधन मानती है | वर्तमान समय में सलाफी-जिहादी विचारधारा अल-कायदा की विचारधारा है | इन अरबी लड़ाकों का अंतिम उद्देश्य चेचन्या में शरिया का राज्य और इमामत की स्थापना करना है (Gammer, 2005) | अरब लड़ाके चेचन्या को जिहादियों के लिए सुरक्षित स्थान बनाना चाहते हैं | शरिया कानून को लागू करवाना सलाफी-जिहादियों का बहुत बड़ा लक्ष्य है | जून 2003 को अबू उमर अल-सैफ के अनुसार चेचन्या के संविधान को शरिया के अनुसार बनाया जाएगा | अयमान अल-जवाहिरी के अनुसार यूरेशिया वास्तविक युद्धभूमि है, यह इस्लामिक कार्यों को क्रियान्वित करने का बहुत बड़ा थियेटर है | अल-जवाहिरी का सोचना था कि यदि हम चेचन्या में सफल हो जाते है तो हमारे पास पूरी इस्लामिक दुनिया से जिहादी आयेगें और यह तेल से धनी कैस्पियन सागर का यह क्षेत्र जिहादियों का हब बन जाएगा | अल-जवाहिरी ने एक इस्लामिक बेल्ट के निर्माण का भी विचार किया था | उसके अनुसार यह बेल्ट दक्षिणी रूस से होते हुए मध्य एशिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और कश्मीर तक जाएगी (Shishani, 2005) |

2001 के बाद से चेचन्या में अरब योद्धाओं का प्रभाव घटता नजर आ रहा है | इसमें 9/11 की घटना ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है | इसके साथ ही साथ कई अन्य कारण भी उत्तरदायी है जैसे समाज का विभाजन, सलाफी-जिहादी आन्दोलन चेचन्या में समाज के शुद्धिकरण की बात करता था और वहाँ शरिया न्यायव्यवस्था को थोपने का प्रयास किया | औरतों के लिए इस्लामिक ड्रेस कोड लागू करने की बात करता था | सूफियों ने इस कठोर व्यवस्था को विदेशी तरीके के इस्लाम के रूप में देखा | जबकि यह बात सत्य

है कि चेचन्या में ड्रेस को पहनने का तरीका अरबी देशों से भिन्न है| इससे सलाफी-जिहादी पारम्परिक सहिष्णु सूफीवाद को मानने वाले चेचेन समाज से अलग-थलग पड़ गए (Akaev,2000) |

सूफी और सलाफी-जिहादी के बीच में यह विरोध तब काफी बढ़ गई जब 1998 में दोनों के बीच सशस्त्र संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई थी | यह पहली बार दशक में हुआ जब सूफी विशेषकर कादरिया शाखा के लोगों ने रूस का समर्थन किया | एक अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को तब मिला जब चेचन्या के पूर्व मुफ़्ती अखमद कादिरोव ने रूस समर्थक सरकार का नेतृत्व किया | दूसरा महत्वपूर्ण कारण धन का अभाव होना, विशेषकर खाड़ी देशों द्वारा दिए जाने वाली मदद में कमी आना | 9/11 की घटना के पश्चात अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने अतिवादी इस्लामिक समूहों को धन उपलब्ध कराने वाले स्रोतों के के खिलाफ कठोर कारवाही का आह्वान किया | इसका चेचन्या में लड़ने वाले सलाफी-जिहादियों पर दो तरह से प्रभाव पड़ा | इससे उनकी आक्रामक क्षमता में कमी आयी और दूसरा धन के अभाव के कारण चेचन्या में उनकी वैधता पर प्रश्न खड़े होने लगे, धन के अभाव के कारण स्थानीय चेचेन योद्धाओं के साथ अरब लड़ाकों का गठबंधन कमजोर हो गया (Shishani, 2005) |

तीसरा महत्वपूर्ण कारण अरब योद्धाओं और चेचेन स्वाधीनता आन्दोलन का अलग-अलग लक्ष्य होना, चेचेन स्वाधीनता आन्दोलन का लक्ष्य रूस से अपने आप को आजाद करवाना है जबकि सलाफी-जिहादी अन्दोंलन बहुत व्यापक है जिसमें अमेरिका, इजरायल, भारत तथा अन्य देश भी शामिल है | इसके अतिरिक्त चेचेन स्वाधीनता आन्दोलन एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की बात करता है जबकि सलाफी-जिहादी अन्दोंलन धार्मिक राज्य की स्थापना करना है (Williams, 2004) |

अक्टूबर 2007 में दोक्का उमारोव ने "काकेसस अमीरात" की स्थापना की और स्वयं को इसका अमीर घोषित किया | काकेसस अमिरात अपने आप को 7 हिस्सों में बाँट रखा है जिनको यह विलायत (प्रान्त) कहता है-विलायत नोखचिचो (चेचन्या), विलायत गल्गेचो (इनगुशेतिया और उत्तरी ओसेटिया), विलायत चेरकेस्सिया (अद्ग्गेया और क्रस्नोदर करै का दक्षिणी हिस्सा), विलायत दागिस्तान (दागिस्तान), कबर्दा, बल्कारिया और कराचय की संयुक्त विलायत, विलायत नोगे स्टेपी (क्रस्नोदर करै का उत्तरी हिस्सा), विलायत लरिस्तों (उत्तरी ओसेटिया) (Britton, 2015) |

यह संगठन न केवल न केवल चेचन्या को रूस से मुक्त करना चाहता है वरन यह अंतरराष्ट्रीय जिहाद में विश्वास करता है | 2007 में उमारोव ने अपनी एकता अफगानिस्तान, इराक, सोमालिया और फिलिस्तीन के मुसलमानों के लिए प्रदर्शित की | इस प्रकार यह संगठन सार्वभौम-इस्लाम के साथ चेचेन अलगाववादी अभियान को जोड़ना चाहता है | यह संगठन अल-कायदा, जैश अल-मुहाजिरीन वल-अंसार, तालिबान और अल-नुसरा फ्रंट का सहयोगी है (Tracy, 2013) |

29 मार्च 2010 को मास्को मैट्रो बम कांड हुआ | दो आत्मघाती औरतों के द्वारा मास्को मैट्रो के दो स्टेशनों (लुब्यंका, पार्क कुल्तुरी) पर बम विस्फोर्ट की घटना को अंजाम दिया गया | इस विस्फोर्ट में 40 लोग मारे गए और 100 लोग घायल हुए | इस घटना के दो दिन बाद उमारोव ने कहा कि रुसी सुरक्षा बलों के द्वारा चेचेन और इन्गुइश नागरिकों की हत्या के विरुद्ध यह कारवाही की गयी है[18] |

[18] Three Moscow metro bombing 'organisers' killed, available at : http://news.bbc.co.uk/2/hi/europe/8680074.stm, Accessed on: May 20, 2016.

काकेसस अमीरात ने जनवरी 2011 में दोमोदेदोवो इन्टरनेशनल एअरपोर्ट पर आत्मघाती बम विस्फोर्ट करवाया | जिसमें 37 लोग मरे गए और 173 लोग घायल हुए | इसका उद्देश्य उसने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और इजराइल के द्वारा मुसलमानों के शोषण का बदला लेना बताया है (Rosenberg, 2011) |

दिसम्बर 2013 को वोल्गोग्राद शहर के वोल्गोग्राद-1 स्टेशन पर काकेसस अमीरात द्वारा बम विस्फोर्ट की घटना को अंजाम दिया गया | इस आत्मघाती हमले में 18 लोग मारे गए और 44 लोग घायल हुए[19] | 2014 के बाद इस संगठन की गतिविधियों में कमी आ रही है |

वर्तमान समय में चेचन्या के अलगाववादी समूहों का जुडाव "इस्लामिक स्टेट" के साथ होने लगा है | 2014 में काकेशस अमीरात या अमीरात कवकाज़ के कुछ प्रमुख नेताओं ने इस्लामिक स्टेट को समर्थन देने की घोषणा की (Hoffman, 2015) | जुलाई 2014 में इस्लामिक स्टेट के नेता अबू बकर अल-बगदादी ने रूस और अमेरिका दोनों को ही मुस्लिम दुनिया का शत्रु घोषित किया | इस घोषणा से यह स्पष्ट हो गया कि इस्लामिक स्टेट रूस में अपनी रूचि रखता है | जून 2015 में इस्लामिक स्टेट के आधिकारिक प्रवक्ता अबू मुहम्मद अल-अदनानी ने रुसी उत्तरी काकेशिया के लिए नई विलयत या सरकार बनाने की घोषणा की और अबू मुहम्मद अल-कादरी को इस नए संगठन का प्रमुख घोषित किया | इस नए संगठन का नाम वालियत काव्काज़ रखा गया | इस घोषणा का उद्देश्य स्पष्ट है कि अब इस्लामिक स्टेट रूस की सीमा के भीतर अपने अधिकार का दावा कर रहा है | उत्तरी ककेसिया में इस संगठन ने अपना पहला हमला

[19]Volgograd railway station blast. Available at: https://www.rt.com/news/volgograd-suicide-bombing-updates-940. Access on: june 29,2016 .

नवम्बर 2015 में किया | इस्लामिक स्टेट ऑफ़ इराक एंड द लेवांत की वेबसाइट पर कहा गया कि इसके संगठन के सदस्य दक्षिणी दागिस्तान के मघरामकिंत गाँव में रुसी सनिकों के बैरक पर सफल हमला किया | रुसी सैनिकों की हत्या करने के बाद वे अपने ठिकाने पर सुरक्षित पहुँचने में सफल रहे (Gambhir, 2015)|

2 फरवरी 2009 को चेचन्या में यूरोप के सबसे बड़े इस्लामिक अस्पताल का उद्घाटन किया गया | जिसमें मस्तिष्क रोगों का गैर-परंपरागत तरीके से उपचार किया जाएगा | कादिरोव ने इसके उद्घाटन समारोह में कहा इस गणराज्य में बहुत से लोग पारम्परिक चिकित्सा पद्धति से हतास हो चुके है, ऐसे लोगों के लिए यह अपस्ताल फायदेमंद होगा | इस अवसर पर चेचन्या के मुख्य मुफ़्ती ने कहा कि इस अस्पताल में 15 उलेमा नियुक्त किए जायेंगे जो एक दिन में 80 मरीजों का उपचार पवित्र कुरान के सूरा और आयात सुनाकर करेंगे | इसके लिए लोगों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा | यह पद्धति न तो रूस के किसी संघीय कानून का उल्लघन करेगी और न ही परम्परगत चिकित्सा पद्धति की उपेक्षा करेगी (Grove, 2011) |

अगस्त 2009 में ग्रोज्नी में रुसी इस्लामिक विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया गया | इस विश्वविद्यालय को 19वी शताब्दी के अहिंसा के उपदेशक कुंटा-हाजी की याद में बनाया गया | इस उद्घाटन समारोह की शुरुवात पुतिन के इस संदेश से हुई कि रूस में 3 मिलियन मुस्लिम रहते है और वे सभी रूस को अपनी मातृभूमि के रूप में देखते है और हम सभी रूस में इस्लामिक परम्पराओं की वापसी का स्वागत करते है | इस

अवसर पर चेचन्या के राष्ट्रपति रमजान कादिरोव ने कहा कि भविष्य में इस देश के ऊपर से वहाबी और अतिवादी इस्लाम का प्रभाव समाप्त हो जाएगा[20] |

पिछले कुछ वर्षों से रमजान कादिरोव की सरकार ने नैतिकता अभियान विशेषकर औरतों के लिए चलाया हुआ है | 2006 में जब वह प्रधानमंत्री थे तभी से उन्होंने यह अभियान चलाया हुआ है | चेचन्या के सार्वजानिक संस्थानों जैसे स्कूल, सरकारी ऑफिस, हॉस्पिटल, और इसके अतिरिक्त गलियों, पार्कों, दुकानों में जाने के लिए ड्रेस कोड लागू किया हुआ है | रमजान कादिरोव के अनुसार औरतें अपने पती की संपत्ति है और उनका मुख्य कार्य बच्चों का पालन-पोषण करना है | कादिरोव बहु-पत्नी प्रथा का समर्थन करते है जबकि यह रूस में प्रतिबंधित है उनके अनुसार बहु-पत्नी प्रथा इस्लाम में वैध है, यदि किसी मुस्लिम व्यक्ति के पास इतनी क्षमता है कि वह दो-तीन औरतों का भरण-पोषण कर सकता है तो उसे दो-तीन विवाह करने का अधिकार है | मार्च 2009 में सात युवा औरतों की हत्या पर रमजान कादिरोव ने कहा कि वे औरतें जिनके शव सड़क के किनारे पड़े हुए मिले थे वे निम्न चरित्र की औरतें थी और उनके सम्बन्धियों ने सम्मान के लिए हत्या करके उचित ही किया (Lokshina, 2012) |

पिछले कुछ वर्षों से रमजान कादिरोव रूस में अपनी छवि एक मुस्लिम नेता के रूप में बनाने का प्रयास कर रहे है और क्रेमलिन द्वारा नियंत्रित मीडिया रुस में उनके विचारों को महत्त्व प्रदान करता है | जनवरी 2015 में एक फैंच पत्रिका चार्ली हेब्दो द्वारा पैगम्बर मुहम्मद का कार्टून बनाये जाने के विरोध में कादिरोव ने चेचन्या की राजधानी ग्रोज्नी में एक रैली और सामूहिक प्रार्थना का आयोजन किया | चेचन्या पुलिस का दावा

[20] Russian Islamic University opens in Grozny, with Putin's blessingAsianews.it, available at :http://www.asianews.it/index.php?l=en&art=16117&geo=4, Accessed on: May 20, 2016.

है कि इस रैली में एक मिलियन लोगों ने चेचन्या और अन्य राज्यों से आकर हिस्सा लिया और लोगों ने अल्लाह महान है, के नारे लगाए | एक रुसी समाचारपत्र ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि कादिरोव ने चेचन्या के व्यापारियों और अन्य लोगों पर दबाव डालकर अपने कर्मचारियों को एक दिन की अवकाश देने के लिए बाध्य करवाया ताकि रैली में भारी संख्या में लोगों की भीड़ हो सके (Peter, 2015) |

रूस में लगभग 20 मिलियन मुस्लिम रहते है जिसमें से 15 मिलियन मुस्लिम चेचन्या में रहते है | यद्यपि रुसी नियमों के तहत चर्च और राज्य अलग-अलग घोषित किए गए है लेकिन चेचन्या के स्कूलों में इस्लाम को प्रोत्साहित किया जाता है | चेचन्या की सरकार के द्वारा एक बड़ी संख्या में मस्जिदों व अन्य इस्लामिक संस्थाओं का निर्माण कराया गया है | कादिरोव सरकार के द्वारा ऐसे प्रयास किये जा रहे है जिससे लोग पारम्परिक सूफी इस्लाम के रास्ते पर आ जाए तथा अतिवाद को नियंत्रित किया जा सके | चेचन्या में सभी टीवी चैनलों के लिए अनिवार्य किया गया है कि वे इस्लाम को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रम प्रसारित करें (Grrels, 2009) |

CHAPTER - 5

निष्कर्ष

चेचन्या में इस्लाम का प्रवेश अरब सेनाओं के द्वारा हुआ और चेचन्या में इस्लामीकरण की प्रक्रिया एक लम्बे समय तक चलती रही | चेचन्या की नृजातियता की तरह यहाँ का धार्मिक इतिहास भी विविधतापूर्ण रहा है | खाजार साम्राज्य, वैजेनटाइन साम्राज्य, आर्मीनिया, जार्जिया, अरब, गोल्डेन होर्ड, क्रीमियन तातार खानेती, ओटोमन साम्राज्य और अंत में रूसी साम्राज्य का प्रभाव इस क्षेत्र के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा | इस क्षेत्र में इस्लाम को फैलाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान सूफियों ने दिया | यहाँ का इस्लाम स्थानीय रीति-रिवाजों से भी प्रभावित था जिसका पालन चेचेन प्राचीन काल से कर रहे थे | चेचेन अपने जीवन में "अदत" का पालन करते रहे, इस प्रकार इस्लाम भी इनके पारम्परिक जीवन शैली को बदल नहीं पाया | जार इवान चतुर्थ के शासनकाल में उत्तरी काकेशस के प्रतिनिधिमंडल दल ने प्रार्थना की कि वह उन्हें क्रीमियन तातार और ओटोमन साम्राज्य के द्वारा किये जा रहे आक्रमणों से उनकी रक्षा करे | शेख मिर्जा ओकोत्सकी नामक चेचेन राजदूत के द्वारा रूस के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किया गया | जार "इवान द टेरिबल" के द्वारा मुसलमानों के साथ धार्मिक असहिष्णुता की नीति का पालन किया गया | जार ने मस्जिदों को ध्वस्त करवाया और मुस्लिम लोगों को ऑर्थोडॉक्स ईसाइयत में धर्मान्तरित करवाने का प्रयास किया | इस तरह उसके शासनकाल में इस्लाम को दबाने का प्रयास किया गया |

"कैथरीन द ग्रेट" के शासनकाल में मुसलमानों के साथ उदारता का व्यवहार किया गया | 1788 में कैथरीन द ग्रेट के द्वारा "मुस्लिम स्प्रिचुअल असेंबली" आरेनबर्ग में स्थापित की गई | यह असेंबली पूरे रुसी साम्राज्य के तहत आने वाले इस्लामिक मामलों पर अपना निर्णय देती थी | कैथरीन द ग्रेट के समय में मुफ़्ती की नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी किन्तु 1817 में जार अलेक्जेंडर प्रथम के द्वारा यह आदेश जारी किया गया कि मुफ़्ती का चुनाव मुस्लिम समुदाय के साथ-साथ सम्राट की सहमति से किया जा सकता है |

रुसी शासकों ने सावधानीपूर्वक मूल निवासी मुसलमानों के खिलाफ इसाई कोसाक्स का प्रयोग करने लगे | सेंट पीटर्सबर्ग की नीतियाँ यह थी कि चेचेनों को रुसी ऑर्थोडॉक्स इसाईयत में धर्मान्तरित किया जाए | इस तरह चेचन्या में रुसी शासकों के द्वारा राजनीतिक प्रभुत्व के साथ ही साथ सांस्कृतिक और अध्यात्मिक प्रभुत्व स्थापित करने का भी प्रयास किया गया | चेचन्या में रुसी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को चेचेनों ने अपने धर्म के लिए खतरनाक माना |

सूफीवाद में मुरीदवाद एक अध्यात्मिक विषयवस्तु है, मुरीदवाद के तहत शिष्य (मुरीद) अपने गुरु (पीर) के प्रति अपनी निष्ठा को प्रदर्शित करते है, किन्तु जारवादी रूस में इसका राजनीतिक प्रयोग किया गया | मुरीदवाद ने उत्तरी काकेशस में रुसी अतिक्रमण के खिलाफ चले मुस्लिम प्रतिरोध के प्रमुख प्रतीक के रूप में कार्य किया | काकेसिया में मुरीदवाद आन्दोलन के नेताओं ने शरिया और सूफीवाद को एक बनाने का प्रयास किया, वे शरिया और सूफीवाद में कोई भिन्नता नहीं मानते थे |

खालिदी शाखा के नेता खालिदी बगदादी ने काकेशस में अनेक मदरसे स्थापित करवाए जिससे काकेसिया में इस्लामिक एकता स्थापित करने में मदद मिल सके | शेख मंसूर 1784 में इमाम के रूप में चेचन्या आए तो वे चेचन्या में रुसी अधिपत्य से काफी निराश हुए और उन्होंने चेचन्या के लोगों से यह अपील की कि वे अपने पुराने मूर्तिपूजक विश्वासों को छोड़ दें तथा अदत के स्थान पर शरियत का पालन करें | इमाम मंसूर की योजना यह थी कि जारशाही अधिपत्य के विरुद्ध सभी काकेशियाई लोगों को एक समूह में लाया जाए इसीलिए शेख मंसूर के द्वारा धर्म युद्ध घोषित किया गया | शेख मंसूर ने जार की सेनाओं को अनेक युद्धों में पराजित किया किन्तु 1791 में इमाम मंसूर को रुसी सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और सेंट पीटर्सबर्ग भेज दिया गया |

इमाम मंसूर के पश्चात् काजी मुल्ला के द्वारा रुसी प्रतिरोध के खिलाफ चेचेनों का नेतृत्व ग्रहण किया गया | काजी मुल्ला काकेसियन इमामत के पहले इमाम थे | काजी मुल्ला मुरीदवाद के प्रमुख समर्थक थे और इन्होंने काकेशस में धार्मिक और राष्ट्रीय भावना को बढ़ाने के लिए कुरान का प्रयोग किया | काजी मुल्ला के रूसियों के हाथों गिरफ्तार होने के बाद इस आन्दोलन का नेतृत्व शेख शामिल ने किया | शेख शामिल के नेतृत्व में मुरीदवाद आन्दोलन उत्तरी काकेशस के सभी भागों में अपनी मजबूत पकड़ बना चुका था | शामिल ने अपनी इमामत के आरम्भिक वर्षों में रुसी सेना के खिलाफ महान विजयें प्राप्त की, किन्तु रुसी सेना के खिलाफ ये विजयें बाद में जारी न रह सकी इसका मुख्य कारण यह था कि ओटोमन साम्राज्य इन्हें पर्याप्त मात्रा में सहायता नहीं उपलब्ध करा रहा था | 1838 में रूस ने शामिल को गिरफ्तार करने के लिए नई टुकड़ी भेजी | 1859 में शामिल पकडे गए और कलुगा में निर्वासित कर दिए गए, 1859 में ये पकडे

जाने तक इस्लामिक राज्य को साकार करने का प्रयास करते रहे | 1870 में जार की आज्ञा से ये मक्का गए 1871 में इनकी मृत्यु मदीना में हो गई |

नक्श्बंदिया संप्रदाय के कमजोर होने के पश्चात कादरिया शाखा ने अपना प्रभाव स्थापित किया | चेचन्या में कादरिया शाखा को पहचान कुंटा हाजी किशियेव द्वारा मिली | जारशाही अपने पतन के आखरी समय में इस्लाम के प्रति कुछ उदार हो गया | जार ने चेचेनों को अपने संस्कृति बनाये रखने की आज्ञा दे दी | इस तरह चेचन्या में जार के द्वारा अपनी विस्तारवादी नीति को जारी रखा गया तथा जहाँ आवश्यक हुआ वहाँ जार ने इस्लाम का दमन किया | और जब जार को चेचनों के समर्थन की आवश्यकता हुई वहाँ जार ने अपने समर्थक मुस्लिम धार्मिक वर्ग के द्वारा सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया किन्तु जार समर्थक मुस्लिम धार्मिक वर्ग को चेचेन समाज में बहुत कम प्रभाव प्राप्त था |

1917 की रुसी क्रांति ने चेचेनों के सम्मुख विचित्र स्थिति को उत्पन्न कर दिया | बोलशेविकों के विरुद्ध नक्श्बंदिया ने पवित्र युद्ध की घोषणा कर दी जबकि जिन लोगों को चेचन्या से बलात् निकला गया था उन लोगों ने बोलशेविकों का पक्ष लिया | साम्यवाद अपने आप में एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जो अपने आप को नास्तिक घोषित करती है और यही नीति सोवियत संघ के द्वारा अपनायी गयी | सोवियत संघ के संस्थापक लेनिन का मानना था धर्म लोगों के लिए अफीम का काम करती है | यह वाक्य मार्क्स के धर्म पर आधारित सम्पूर्ण विचारधारा की आधारशिला है | 1917 में “पीपल्स कमिसारियत फॉर इनलाईटमेंट” बनाई गई जिसने स्कूलों के पाठ्यक्रम से धार्मिक चीजों को हटाने के आदेश दिए | 1928 में धर्मविरोधी अभियान को व्यापक रूप से संचालित न कर पाने के कारण स्टालिन ने 15वी पार्टी कांग्रेस में पार्टी की आलोचना

की और धर्म विरोधी आन्दोलन को और व्यापक रूप से चलाने का आदेश दिया | परिणामस्वरूप धार्मिक वर्ग के लोगों को या तो जेल भेजा गया या तो श्रमिक कैम्पों में भेजा गया |

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, चेचेनों को नाज़ी जर्मनी का समर्थक मानते हुए स्टॅलिन ने सेंट्रल एशिया और साइबेरिया में चेचेनों को स्थानांतरित करने के लिए एक योजना तैयार की जिसका नाम लेंतिल रखा गया , यह एक गुप्त आपरेशन था, जिसको पीपल्स कमिसारियत फॉर इंटरनल अफेयर्स (ऐन.के.वी.डी.) और लाल सेना के द्वारा चलाया गया | आपरेशन लेंतिल का नेतृत्व ऐन.के.वी.डी. प्रमुख लाव्रेंतीय बेरिया के द्वारा किया गया | इस स्थानान्तरण को चेचेनों ने अपने धर्म और नस्ल पर हमला माना उनको लगा की उनकी संस्कृति समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है | निर्वासन के वर्षों में चेचेनों के बीच सूफी भाईचारे ने उनके अन्दर राष्ट्रीय भावना को विकसित किया | ख्रुश्चेव के द्वारा चेचन निर्वासितो के पुनर्वास की घोषणा की गई | ख्रूश्चेव सरकार के द्वारा लायी गई शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व की नीति के बावजूद भी चेचेन व्यवस्थागत शोषण के शिकार होते रहे, सूफियों को अपराधी की संज्ञा देते हुए गिरफ्तार किया जाता था | गोर्बाचेव के द्वारा ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका की नीतियाँ लायी गई | 1990 तक चेचन्या के लगभग सभी गावों में मस्जिदें पुनः खोली गई या नयी मस्जिदें बनाई गई | मक्का, मदीना सहित सभी मुस्लिम पवित्र स्थानों की यात्रा पर लगाये गए प्रतिबंधों को हटा लिया गया |

सोवियत संघ के विघटन के पश्चात रूस एक संप्रभु राज्य के रूप में अस्तित्व में आया | रूस के संविधान में रूस को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में घोषित किया गया | रूस के संविधान के अनुच्छेद 13 में कहा गया है कि रुसी संघ वैचारिक विविधता को

मान्यता प्रदान करता है | अनुच्छेद 14 में कहा गया है कि रुसी संघ धर्मनिरपेक्ष राज्य है और राज्य के द्वारा कोई धर्म स्थापित नही किया जायेगा और धार्मिक संगठन राज्य से अलग रहेंगे तथा सभी धर्म कानून के समक्ष समान रहेंगे | अनुच्छेद 19 में कहा गया है कि राज्य लिंग, नृजाति, राष्ट्रीयता, भाषा, मूलस्थान, संपत्ति, धर्म और अधिकारिक स्थिति को ध्यान रखे बिना सभी को समान अधिकार और स्वतंत्रता की गारंटी प्रदान करता है | अनुच्छेद 28 में सभी को चेतना और धर्म की स्वतंत्रता प्रदान की गई है इसमें कहा गया है कि लोगों को अधिकार है कि वे किसी भी धर्म को मान सकते है या किसी धर्म को अंगीकार कर सकते है | सोवियत संघ के पतन के पश्चात रूस के मुस्लिम बहुल गणराज्यों जैसे अद्ग्गेया, बश्कोर्तोस्तान, दागिस्तान, तातारस्तान, कबारदिनो-बल्किरिया, उत्तरी ओससेटिया, कराचायेवो-चेरकेस्सिया, चेचन्या और इनगुशेतिया में बड़ी संख्या में मुस्लिम धर्मार्थ संगठन खुले | धर्मार्थ संगठन मुस्लिम सामाजिक और धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है | रूस के ग्रामीण क्षेत्रों में मस्जिदें अनेक आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराती है |

जिस तरह कजाखिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान जैसे देश आजाद हुए उसी तरह चेचन्या भी एक संप्रभु राज्य बनना चाहता था | चेचन्या के लोग आरंभ से ही रुसी अधिपत्य से स्वयं को अलग करना चाहते थे इसलिए उन्होंने इस्लाम को रुसी अधिपत्य के विरोध का प्रतीक बना लिया | चेचन्या के लोग विभिन्न नृजातीय समूहों में विभक्त थे और केवल इस्लाम ही उन्हें एकजुट रख सकता था, इसलिए इमाम मंसूर, काजी मुल्ला, शेख शामिल ने शरिया पर जोर दिया और लोगों को इस्लामिक एकता के नाम पर संगठित किया | लेकिन जार के द्वारा इन आंदोलनों या विद्रोहों को कुचल दिया गया | सोवियत शासन के दौरान भी चेचेनों के द्वारा चेचन्या को स्वतंत्र कराए जाने के

प्रयास किये जाते रहे किन्तु ये प्रयास असफल सिद्ध हुए | सोवियत संघ के विघटन के पश्चात चेचेनों में पुनः रूस से अलग होने की इच्छा बलवती होने लगी और इस कार्य में उन्हें पूर्व सोवियत जनरल दुदायेव का सहयोग मिला | 1991 में चेचन्या में दुदायेव के अध्यक्षता में सरकार बनाई गई और उन्होंने चेचन्या के रूस से अलग होने की घोषणा कर दी | इस अलगाव को इस्लामिक रंग देने का भी प्रयास किया गया जैसे दुदायेव ने शपथ मंच पर कुरान को रखा था और चेचन्या के धार्मिक वर्ग ने चेचन्या के रूस से अलग होने के फैसले को अपना समर्थन दिया | हालाँकि चेचन्या के नए संविधान को धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया | दुदायेव ने 1993 में चेचन्या के संविधान में इस्लामिक कानूनों को लागू करने का प्रयास किया लेकिन इसका वहाँ व्यापक विरोध हुआ |

रूस के दबाव के कारण मुस्लिम देशों के द्वारा चेचन्या की स्वतंत्रता को कभी अधिकारिक मान्यता नहीं दी गई किन्तु प्रथम रूस-चेचेन युद्ध में सऊदी अरब, मिश्र, टर्की, अफगानिस्तान के इस्लामिक योद्धा भी शामिल थे | इस युद्ध में चेचन्या को मध्य-पूर्व के देशों से आर्थिक सहायता भी प्राप्त हुई | इस तरह प्रथम रूस-चेचन युद्ध में बाहरी शक्तियों की रूचि स्पष्ट रूप से नजर आती है और वहाबियों और सलाफियों की भूमिका भी चेचेनों की द्रष्टि में सराहनीय हो गयी | प्रथम रूस-चेचेन युद्ध में राष्ट्रवाद और इस्लाम आपस में मिल गए और इसी कारण चेचेनों ने रूस का प्रभावशाली प्रतिरोध किया |

दुदायेव के बाद कार्यवाहक राष्ट्रपति यांदार्बियेव ने चेचन्या को एक इस्लामिक देश घोषित किया और उन्होंने धर्मनिरपेक्ष अदालतों की जगह शरिया अदालतें स्थापित करने की घोषणा की | इन अदालतों के फैसले मलिकी डाक्ट्रिन पर आधारित होते थे, जबकि चेचेनों के द्वारा पारम्परिक रूप से अल-शफिई डाक्ट्रिन का पालन किया जाता था | इन

धार्मिक अदालतों का प्रमुख काजी सऊदी अरब के रहने वाले अबू अल-सैफ को बनाया गया था, इस व्यक्तव्य से चेचन्या के ऊपर विदेशी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है |

1997 में असलन मास्खादोव लोकतांत्रिक तरीके से चेचन्या के राष्ट्रपति चुने गए | इनके शासनकाल के दौरान 1998 में गुदेर्मेस में मास्खादोव समर्थकों और वहाबियों के बीच संघर्ष ने चेचेन समाज के बीच हुए विभाजन को स्पष्ट रूप प्रदर्शित किया | इस घटना की आलोचना चेचेन सरकार के साथ ही साथ वहाँ के सूफी धार्मिक वर्ग द्वारा भी किया गया | मास्खादोव के शासन की आलोचना चेचन्या के प्रभावशाली युद्धनेताओं के द्वारा किया गया क्योंकि मौजूदा शासन-व्यवस्था उनके हितों के प्रतिकूल थी | मास्खादोव के द्वारा अपने प्रभाव में वृद्धि के लिए चेचन्या की राजनीति के इस्लामीकरण करने का प्रयास किया गया | फरवरी 1998 में मास्खादोव ने शरिया कानून लागू करने की घोषणा कर दी | हालाँकि मास्खादोव के द्वारा चेचन्या में बाहरी देशों के द्वारा चेचन्या में भेजे जा रहे अतिवादी इस्लाम की आलोचना भी की गई |

खत्ताब और शामिल बसायेव ने 1999 में दागिस्तान के एक छोटे से क्षेत्र पर अधिकार करके वहाँ शरिया कानून लागू करने की घोषणा की | इसकी प्रतिक्रियास्वरूप राष्ट्रपति पुतिन ने चेचन्या के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी | इस युद्ध के दौरान पुतिन ने चेचन्या के मुफ़्ती अखमद कादिरोव को अपना समर्थक बना लिया | प्रथम रूस-चेचेन युद्ध से सबक लेते हुए पुतिन ने चेचेन अलगाववादियों के प्रति कोई नरमी नहीं बरती | 9/11 के पहले रूस द्वारा चेचन्या में की जाने वाली घटना को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के द्वारा मानवाधिकार का उल्लंघन, आत्मनिर्णय के अधिकार का उल्लंघन आदि रूपों में देखा जाता था किन्तु 9/11 की घटना के बाद चेचेनों के द्वारा की जाने वाली घटनाओं

को आतंकवाद के रूप में देखा जाने लगा | रूस के इस क्षेत्र में अल-कायदा की भी रूचि रही है | अल-कायदा के नेतृत्व में अरबी लड़ाकों का अंतिम उद्देश्य चेचन्या में शरिया का राज्य और इमामत की स्थापना करना है | अरब लड़ाके चेचन्या को जिहादियों के लिए सुरक्षित स्थान बनाना चाहते है अल-कायदा नेता अल-जवाहिरी के अनुसार तेल से धनी कैस्पियन सागर का यह क्षेत्र जिहादियों का प्रमुख केंद्र बन सकता है | वर्तमान समय में चेचन्या में इस्लामिक अतिवाद फ़ैलाने में इस्लामिक स्टेट एक बड़ा कारक बनकर उभरा है |

द्वीतीय चेचन-रूस युद्ध के पश्चात् भी चेचेन अलगावादियों के द्वारा छद्म युद्ध को जारी रखा गया है | अक्तूबर 2002 में मास्को थियेटर अपहरण कांड को चेचेन अलगाववादियों ने अंजाम दिया | इन अलगावादियों का नेतृत्व मोवसर बरयेव कर रहा था | उनकी मांग यह थी कि रुसी सेना बिना शर्त के चेचन्या को छोड़ दे | इस कांड में 170 रुसी नागरिक मारे गए | अगस्त 2004 में रुसी एयरक्रॉफ्ट बाम्बिंग हुई | मास्को के दोमोदेदोवो इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरे हुए दो हवाई जहाजों वोल्गा-अविया एक्सप्रेस फ्लाइट 1353 और साइबेरिया एयरलाइन्स फ्लाइट 1047 में बम विस्फोर्ट की घटना हुई | सितम्बर 2004 में बेसलान स्कूल अपहरण कांड हुआ | इस घटना को शामिल बसायेव के निर्देश पर अंजाम दिया | काकेसस अमीरात ने जनवरी 2011 में दोमोदेदोवो इन्टरनेशनल एअरपोर्ट पर आत्मघाती बम विस्फोर्ट करवाया | दिसम्बर 2013 को वोल्गोग्राद शहर के वोल्गोग्राद-1 स्टेशन पर काकेसस अमीरात द्वारा बम विस्फोर्ट की घटना को अंजाम दिया गया | इन घटनाओं में “ब्लैक विडो” का भी इस्तेमाल किया गया | वे औरतें जिनके पति रुसी सुरक्षा बलों के द्वारा आतंकवाद निरोध कारवायी या अन्य किसी घटना में मारे गए, उन औरतों को ब्लैक विडो कहा जाता है |

चेचन्या में वहाबी महिलाओं को हिजाब पहनने के लिए और पुरुषों को लम्बी दाढ़ी और अरबी तरीके के कपड़े पहनने के लिए प्रेरित करते हैं | चेचेन मुस्लिम अल्लाह के साथ ही पैगम्बर साहब और अपने सूफी संतो के नाम का उच्चारण करते हैं लेकिन वहाबी इसे गैर इस्लामिक मानते हैं | चेचेन परिवार में पिता को प्रमुख माना जाता है लेकिन वहाबी "मुस्लिम भाईचारा" के विचार को प्रस्तुत करते हुए इसे माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से ज्यादा महत्त्व देने की बात करते हैं | इसके कारण से माता–पिता को परिवार में वह सम्मान नहीं प्राप्त हो पा रहा है जो उन्हें पहले प्राप्त था | वहाबी चेचन्या में इस्लाम के उग्र रूप को प्रदर्शित कर रहे हैं, और जो भी पारम्परिक धार्मिक नेता इनका प्रतिरोध करते हैं ये उनकी हत्या कर देते हैं | | चेचन्या में वहाबी संप्रदाय के लोग अपने लिए अलग से मस्जिदों का निर्माण कर रहे है | वहाबी शुद्ध इस्लाम की बात करते है और यह शुद्ध इस्लाम बेरोजगार, वंचित लोगो के बीच लोकप्रिय हो रहा है |

रुसी राष्ट्रपति पुतिन के द्वारा चेचन्या में इस्लाम को नियंत्रित करने के लिए सहयोग और प्रतिरोध की नीतियाँ अपनायी गई | प्रतिरोध की नीति के तहत रूस ने 2009 तक चेचन्या में सैन्य अभियान जारी रखा और वर्तमान समय में रमजान कादिरोव सरकार को सैन्य समर्थन प्रदान कर रहा है | सहयोग की नीति के तहत रूस चेचन्या में इस्लाम को बढ़ावा देने वाले कार्यों को कर रहा है | चेचन्या में वर्तमान समय में रूस की यह नीति है कि सूफीवाद को समर्थन दिया जाय क्योंकि वहाबी संकट का सामना बिना सूफीवाद के सहयोग के नहीं किया जा सकता | 2003 में रूस ने "आर्गेनाइजेशन ऑफ़ इस्लामिक कांफ्रेंस" में एक पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया | रूस के मुसलमानों ने रूस के इस कदम का स्वागत किया | जुलाई 2006 में रूस ने धार्मिक नेताओं के विश्व सम्मलेन का आयोजन किया, राष्ट्रपति पुतिन ने लोगों से धार्मिक सहनशीलता की अभिवृद्धि के

लिए कार्य करने की अपील की | 2006 तक चेचन्या में 500 से अधिक मस्जिदें थी जिसमें 326 जामा मस्जिदें है तथा यहाँ 21 जिला काजी, 326 इमाम, 31 मदरसे है और एक राज्य इस्लामिक विश्वविद्यालय है जिसका नाम कुंटा हाजी किशेव है | ग्रोज्नी में अकेले 27 मस्जिदें है, इन मस्जिदों में एक ऐसी मस्जिद भी है जो पूरे यूरोप में सबसे बड़ी है जिसे चेचन्या का ह्रदय भी कहा जाता है | दो रूस-चेचन युद्धों के दौरान नष्ट हुए मस्जिदों का पुनर्निर्माण भी किया गया है |

रुसी राष्ट्रपति के द्वारा 2008 में इस्लामिक शिक्षा के लिए दी जाने वाली धनराशि को 400 मिलियन रूबल से बढ़ाकर 800 मिलियन रूबल कर दिया है | अगस्त 2009 में ग्रोज्नी में रुसी इस्लामिक विश्वविद्यालय का निर्माण 19वी शताब्दी के अहिंसा के उपदेशक कुंटा-हाजी की याद में किया गया , इस विश्वविद्यालय का वित्तीय खर्च मास्को द्वारा दिया जाता है | ओरेनबुर्ग मुस्लिम स्प्रिचुअल असेंबली के 225 वी वर्षगाँठ के अवसर पर अक्टूबर 2013 में राष्ट्रपति व्लाद्मिर पुतिन ने कहा इस्लाम ने हमारे समाज के सांस्कृतिक और अध्यात्मिक विकास में अमूल्य योगदान दिया | रुसी सरकार के द्वारा चेचन्या में रमजान कादिरोव को पूरा समर्थन दिया जा रहा है | कादिरोव सरकार के द्वारा परम्परागत सूफी इस्लाम को बढाए जाने के प्रयास किए जा रहे है जिससे चेचन्या में अतिवादी इस्लाम के प्रसार को रोकने में सहायता मिल सके |

References:

*Article 19'S Statement On Proposed Amendments To The Russian Extremism Law, July 2006, Available at: https://www.article19.org/data/files/pdfs/press/russia-extremism-law.pdf, Accessed on: April 4, 2016.

*Federal Law No. 125-Fz Of September 26, 1997 On The Freedom Of Conscience And Religious Associations", Avilable at: http://host.uniroma3.it/progetti/cedir/cedir/Lex-doc/Ru_l_1997.pdf Accessed on: February 1, 2016.

*International Religious Freedom Report 2004, Avilable at: http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2004/, Accessed on January 13, 2016.

*International Religious Freedom Report 2007, Available at: http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2007/90196.htm, Accessed on: March 16, 2016.

*Letter from Connecticut Danbury Baptist Association to Thomas Jefferson Oct. 7, 1801, Available at: https://jeffersonpapers.princeton.edu/selected-documents/danbury-baptist-association, Accessed on 12 January 2016'

*Letter from Thomas Jefferson to Connecticut Danbury Baptist Association Jan.1, 1801", Available at: https://www.loc.gov/loc/lcib/9806/danpre.html, Accessed on 12 January 2016'

*The Constitution Of India, Available at: http://lawmin.nic.in/coi/coiason29july08.pdf, Accessed on: 4 February 4, 2016.

*The Constitution of The Russian Federation, Avilabble at: http://www.constitution.ru/en/10003000-01.htm, Accessed on: February 2, 2016.

ALGAR, H. (1976), "The Naqshbandi Order: A Preliminary Survey of Its History and Significance", *Studia Islamica,* vol (11): 123-152.

ALGAR, H. (1990), "A Brief History of the Naqshbandi Order", in M. Gaboriean and A. Popovic, (ed.), *Naqshbandis,* Paris: Varia Turcica.

Bainton, Roland H. (1966), *Christendom: A Short History of Christianity*, New York: Harper & Row.

Bekkin, Renat (2006), "Islamic Economic Model and the Problems of Its Application in Russia", Lecture delivered on 13 April 2005 at Moscow State Institute (University) of International Relations of the Foreign Ministry of Russia: Moscow.

Bell, Imogen (2002), "Eastern Europe, Russia and Central Asia", *Europa*, vol (7): 12-17.

BENNIGSEN, A. (1985) "Islam in Soviet Union", *METU: Asian African Research Group*, vol 12 (27): 3-17.

Berger, Peter L. (1967), *The Sacred Canopy: Elements of a Sociological Theory of Religion Anchor books Volume 658 of Doubleday Anchor Books*, New York: Douleday.

Borovinkov, Vladimir (2000), "Mythologizing Shari'a Courts in Post-Soviet North Caucasus", *ISIM Newsletter*, 5-2000, p. 25.

Botham, Fay (2009), *Almighty God Created the Races: Christinity, Interracial Marriage, and American Law*, North Carolina: University of North Carolina Press.

Bowle, John (1961), *Western Political Thought*, London: Methuen.

Brain Glyn Williams, "The 'Chechens Arabs': An Introduction to the Real al-Qaeda Terrorists from Chechnya," Terrorism Monitor, (Jamestown Foundation, Washington, DC) Vol. 2, Issue 1, 15 January, 2004.

Broxup, Marie and Abdurakhman Avtorkhanov (1992), *The North Caucasus Barrier: The Russian Advance towards the Muslim World*, London: Hurst.

BUTBAY, M. (1990), *Kafkasya Hatıraları*, Ankara: Türk Tarih Kurumu Yayınları.

Casey Britton. "New decrees of Dokka Umarov on formation of a Council of the Caucasus Emirate and abolition of the Province of Iriston - Caucasus - News: WorldAnalysis.net". worldanalysis.net. Retrieved 19 May 2015.

Choueiri, Youssef (1996), *The Political Discourse of Contemporary Islamist Movements*, Clorado: Westview Press.

Coby, Pretrick J. (1999), *Machiavellti's Romans: Liberty and Greatness in the Siscourses on Livy*, Maryland: Lexington Books.

Companion to the Standing Orders and guide to the Proceedings of the House of Lords". May 2010. Retrieved 1 July 2011 https://www.parliament.uk/documents/publications-records/House-of-Lords-Publications/Rules-guides-for-business/Companion-to-standing-orders/Companion-to-Standing-Order-2015.pdf, Accessed on: feburary 2, 2016.

Curtis, G. E. (2002), "Involvement Of Russian Organized Crime Syndicates, Criminal Elements In The Russian Military, And Regional Terrorist Groups In Narcotics Trafficking In Central Asia, The Caucasus, And Chechnya", Washington, D.C.: Federal Research Division, Library of Congress.

Dannreuther, Ronald and Luck March (2010), *Reviewer: Marat Shterin*, London: Routledge.

Dawkins, Richard (2006), *The God Delusion*, Boston Massachusetts: Houghton Mifflin Harcourt.

DEMİRPOLAT, Anzavur (2007), Socio-Cultural Dynamics of Muridism Movement in Caucasia, [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: http://www.eskieserler.com/dosyalar/mpdf%20(209).pdf

Diarmaid, Macculloch (2001), *The Later Reformation in England, 1547-1603*, New York: Palgrave.

Dunlop, John B. (2007*), Russia Confronts Chechnya: Roots of a Separatist Conflict, Chechnya: The Case for Independence*, New York: Cambridge University Press.

Dunning, William A. (1902), *A History of Political Thiories, from Luther to Montesquieu*, New York: Macmillan.

Esposito, John (2003), *The Oxford Dictionary of Islam*, Oxford: Oxford University Press.

Feldman, Rechird (2005), *Respecting the Evidence, Philosophical Perspectives*, vol (19): 1-21.

Felshtinsky, Yuri and Alexander Litvinenko (2007), *Blowing up Russia: terror from within*, London: Gibson Square.

Finer, S. E. (1997), *The History of Government from the Earliest Times*, Oxford: Oxford University Press.

Fisher, Alec and Michael Scriven (997), *Critical Thinking: Its Definition and Assessment, Center for Research in Critical Thinking UK*, New York: Edge press.

Fitzpatrick, Sheila (1970), *The Commissariat of Enlightenment*, New York: Cambridge University Press.

Gambhir, Harleen (2015), "Isis Declares Governorate In Russia's North Caucasus Region", [Online: web] Accessed 2 May 2016, URL:http://www.understandingwar.org/backgrounder/isis-declares-governorate-russia%E2%80%99s-north-caucasus-region.

GAMMER, M. (1991), "Imam Shamil and Shah Mohammed: Two Unpublished Letters", *Central Asian Survey*, Vol 10 (1/2): 171-179.

Gammer, Moshe (1992), *Muslim Resistance to the Tsar. Shamil and the Conquest of Chechnia and Daghestan*, London: Frank Cass.

Gammer, Moshe (2006), *The Lone Wolf and the Bear, Three Centuries of Chechen Defiance of Russian Rule*, Pittsburgh: University of Pittsburgh Press.

Gettel, R. G. (1932), *History of Political Thought*, New York: Cooper Square Publishers.

Gibbon, Edward (1974), *The History of the Decline and Fall of the Roman Empire:1776-1788*, New Jersey: Princeton University Press.

Goodarzi, Dr. (2009), *Syria and Iran: Diplomatic Alliance and Power Politics in the Middle East*, London: I.B. Tauris.

Grozny Opens 'Europe's Biggest Mosque' Radio free Europe Radio Liberty, Available at: http://www.rferl.org/content/Grozny_To_Open_Europes_Biggest_Mosque/1330690.htm, Accessed on: March 16, 2016.

Grozny Opens 'Europe's Biggest Mosque' *Radio free Europe Radio Liberty*, [Online: web] Accessed 16 February 2016,URL:http://www.rferl.org/content/Grozny_To_Open_Europes_Biggest_Mosque/1330690.html

Gunmen release chilling video", CNN.com/world. Available at: http://edition.cnn.com/2002/WORLD/europe/10/24/moscow.siege.video/ ,Accessed on:May 16,2016

Halbach, Uwe (2001), "Islam in North Caucasus", [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: https://assr.revues.org/18403#quotation.

Hillsdale (2003), *The Spiritist, Fallacy*, New York: Sophia Perennis.

Huntington, Samuel P. (1993), *The Clash of Civilizasion*?", New York: Simon and Schuster.

International Journal of Middle East Studies (2009), *The Saudi Religion Elite(ULAMA) as Participant in the Political System of the Kingdom*, vol 17 (01), Cambridge.

Islam in Russia, Available at: http://www.islamicpopulation.com/Europe/RUSSIA/Islam%20in%20RUSSIA.htm, Accessed on: March 2, 2016

Jeffrey, Burds (2007), *The Soviet War against "Fifth Columnists": The Case of Chechnya*, Boston: Northeastern University Boston.

KABARDINO-BALKARIA CRACKS DOWN ON MUSLIMS", Available at : http://www.jamestown.org/programs/nc/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=31031&tx_ttnews%5BbackPid%5D=187&no_cache=1, Accessed on: May 1, 2016.

Kabardino-Balkariya Cracks Down On Muslms, *The Jamestown Foundation*, [Online: web] Accessed 11 February 2016, URL: http://www.jamestown.org/programs/nc/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=31031&tx_ttnews%5BbackPid%5D=187&no_cache=1

King, Charles (2008), *The Ghost of Freedom: A History of the Caucasus*, New York: Oxford University Press.

Kohlmann, E. (2001), *The Legacy of the Arab-Afghans: A Case Study*, Washington D.C.: Edmund A. Walsh School of Foreign Service.

Kroupenev, A. (2007), "Application of Poliheuristic Methodology to a Sequence of Boris Yeltsin's Decisions During the 1995 Hostage Crisis in Budyonnovsk", [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: http://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=1027054

Kroupenev, Mr. Artem (2009), "Radical Islam in Chechnya", *international institute of counter-terrorism*, vol 10 (7): 1-17.

Kurz, Robert W and Charles K. Bartles, (2007) "Chechen suicide bombers", *Journal of Slavic Military Studies, (*20) 529–547

Lokshina, Tanya, "Virtue Campaign on Women in Chechnya under Ramzan Kadyrov" [Online: web] Accessed 11 April 2016, URL: https://www.hrw.org/news/2012/10/29/virtue-campaign-women-chechnya-under-ramzan-kadyrov

Malashenko, Aleksey (2014), "Window on Eurasia", *The Interpreter*, vol (October): 1-18.

Malashenko, Alexei V. and Aziza Nuritova (2009), "Islam in Russia", *Russia Today*, Vol 76 (1): 321-358

Malek, Dr. Martin (2008), "Russia, Iran, and the Conflict in Chechnya", *Institute for Peace Support and Conflict Management of the National Dcademy in Viena (Austria)*, vol 2 (1): 1-27.

Mansfield, Harvey C. (1979), *Machiavelli's New Modes and Orders: A Study of the Discourses on Livy*, Ithaca: Cornell University Press.

Mansfield, Harvey Claflin (979), *Machiavelli's New Modes and Orders: A Study of the Discourses on Livy*, Ithaca: University of Chicago Press.

Marx, Karl and Friedrich Engels (2012), *On Religion*, North Chelmsford: Courier Corporation.

McGregor, Andrew (2005), "The Jamaat Movement in Kabardino-Balkaria", [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: http://www.jamestown.org/programs/tm/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=30231&tx_ttnews%5BbackPid%5D=180&no_cache=1#.V5FoxNPRVXk.

McIlwain, Charles Howard (1932), *The Growth of Political Thought in the West*, Oxford: Oxford University.

McLeod**,** Hugh **(2007),** ***The Religious Crisis of the 1960s*****,** Oxford: Oxford University.

MORISON, D. (1985), "III. From Soviet Achieves", *Central Asian Survey*, Vol 4 (4): 35-38.

Moshe Gammer, (2005), "The Road Not Taken: Dagestan and Chechen Independence", *Central Asian Survey*, Vol 24 (2): 97-108.

Mueller, Dennis C. (2009), *Reason, Religion, and Democracy*, Vienna: University of Vienna press.

Myers, Steven Lee (2003), "World Briefing Europe: Russia: Putin To Attend Islamic Conference", *The Newyark Times*, [Online: web] Accessed 11 June 2016,

URL:http://www.nytimes.com/2003/10/16/world/world-briefing-europe-russia-putin-to-attend-islamic-conference.html

NART,? (1991), "The Life of Mansur", *Central Asian Survey*, Vol 10 (1/2): 81-92.

Norris, Pippa and Ronald Iglehart (2004), *Religion and Politics Worldwide*, Cambridge: Cambridge University Press.

Nye, Malory (2008), *Religion : the basics*, London ; New York : Routledge.

One year later, Beslan's school tragedy still haunts, The Boston Globe, 2 September 2005 [Online: web] Accessed 26 May 2016, URL:http://archive.boston.com/news/world/europe/articles/2005/09/02/one_year_later_beslans_school_tragedy_still_haunts/

Pennington, Mark (2010), *Robust Political Economy: Classical Liberalism and the Fututre of Public Policy (New Thinking in Political Economy Series)*, Cheltenham Glos: Edward Elgar Publishing Ltd.

Perovic, Jeronim (2014), "Uneasy Alliances Bolshevik Co-optation Policy and the Case of Chechen Sheikh Ali Mitaev", *Russian and East European Studies*, Vol 15 (4):17-39.

Perrie, Maureen, Domnic Lieven and Ronald Grigor Suny (2006), "*The Cambridge History of Russia: Volume 1, 2, 3*, New Delhi: Cambridge University Press.

Peter, Laurence, "Ramzan Kadyrov: Putin's key Chechen ally", [Online: web] Accessed 2 March 2016, URL: http://www.bbc.com/news/world-europe-31794742.

Pospielovsky, Dimitry V. (1988), *A History of Soviet Atheism in Theory, and Practice, and the Believer, vol 2: Soviet Anti-Religious Campaigns and Persecutions*, New York: St. Martin's Press.

Report For the OSCE Meeting, Russian Non-Governmental Organization For Religious Liberty Protection 2012, Available at:http://www.osce.org/odihr/95011?download=true, Accessed on: April 1, 2016.

Reynolds, Michael A. (2013), "THE NORTHERN CAUCASUS", foreign policy research institute, [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: https://www.princeton.edu/nes/people/data/m/mar123/profile/Reynolds-Northern-Caucasus-the-Tsarnaevs-and-Us-(2013).pdf.

Ro'I, Yaacov (2000), *Islam in the Soviet Union: From the Second World War to Gorbachev*, New York: Columbia University Press.

Roy, Olivier (1994), *Failure of Political Islam*, Cambridge MA: Harvard University Press.

Roy, Olivier (2004), *Globalised Islam: the Search for a New Umma*, London: Hurst.

Russian Islamic University opens in Grozny, with Putin's blessingAsianews.it, available at :http://www.asianews.it/index.php?l=en&art=16117&geo=4, Accessed on: May 20, 2016.

Russian News Agency (2013), "Putin, Medvedev Congratulate Russian Muslims With Eid-Ul-Fitr", [Online: web] Accessed 13 April 2016, URL: http://tass.ru/en/society/886419.

Russian news agency-2013, Putin, Medvedev congratulate Russian Muslims with Eid-Ul-Fitr, Available at:http//tass.ru/en/society/886419, Accessed on: March 12, 2016.

Sabine, George Holland (1961), *A History of Political Theory*, Oxford: Oxford University Press.

Sadler, B. (1996), "Chechen siege: Embarrassment or triumph? Retrieved from CNN News", [Online: web] Accessed 5 April 2016, URL: http://www.cnn.com/WORLD/9601/chechen_rebels/01-19/index.html

Schaefer, Robert W. (2010), *The insurgency in Chechnya and the North Caucasus: from gazavat to jihad*, California: Praeger Security International.

Sharma, Prabhu datta (2006), *History of Western Political Thought*,

Smith, Sebastian, (2006), *Allah's Mountains, The Battle for Chechnya*, New York: St. Martin's Press.

Sood, J. P. (), *Western Political Thinkers*,

Souleimanov, Emil (2005), ''Chechnya, Wahhabism and the Invasion of Dagestan'', *Middle East Review of International Affairs*, Vol 9 (4): 7-19.

Souleimanov, Emil (2005), "Chechnya, Wahhabism and the Invasion of Dagestan", *Middle East Review of International Affairs*, Vol 9 (4): 50.

Souleimanov, Emil (2006), "Russian Chechnya Policy: "Chechenization" Turning into "Kadyrovization"?", *The Central Asia and Caucasus Analyst*, vol 8 (11): 3-5.

Sullivan, Winnifred Fallers (2007), *Impossibility of Religious Freedom*, New Jersey: Princeton University Press.

Svanberg, Ingvar and David Westerlund (1970), *Islam Outside the Arab World*, New Delhi: Routledge.

Taylor, Charles (1957), *A Secular Age*, in Andy Blunden (eds.) *Marx and Engels On Religion, New Delhi:* Progress Publishers.

Three Moscow metro bombing 'organisers' killed, available at: http://news.bbc.co.uk/2/hi/europe/8680074.stm, Accessed on: May 20, 2016.

Vachagaev, Mayrbek (2005), "Evolution of the Chechen Jammat", *Chechnya Weekly*, Vol 6 (14): 1-16.

Vakhit, Akaev, (2012), "The Russian State :Deliberations On Putin's Article", *Central Asia And The Caucasus,* Vol 13 (3): 13-21

Vatchagaev, M. (2005), "The role of Sufism in the Chechen Resistance", *North Caucasus Weekly*, Vol 6 (16): [Online: web] Accessed 23 March 2016, URL: http://www.jamestown.org/publications_details.php?volume_id=409&issue_id=3315&article_id=2369676.

Vatchagaev, Mairbek (2014), "Statement by New Leader of Caucasus Emirate Creates Rift Among Chechen Groups Operating in Syria", *Eurasia Daily Monitor* Vol 11 (121), [Online: web] Accessed 12 April 2016, URL: http://www.jamestown.org/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=42587#.V5J8Z_l95D8

Vatchagaev, Mairbek (2014), "The politicization of Sufism in Chechnya", *Caucasus Survey*, vol 1 (2): 25-35.

Vidino, Lorenzo (2004), "How Chechnya Became a Breeding ground for terror?", *Middle East Quarterly*, vol 12(3): 57-66.

Volgograd railway station blast. Available at: https://www.rt.com/news/volgograd-suicide-bombing-updates-940, Access on: june 29, 2016.

Weber, Max (2010), *The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism*, Stephen Kalberg: Oxford University Press.

Wilhelmsen, Julie (2005), "Between a Rock and a Hard Peace: The Islamisation of the Chechen Separatist Movement", *Europe-Asia Studies*, vol 57 (1): 35-59.

Williams, Brain Glyn (2004), "The 'Chechens Arabs': An Introduction to the Real al-Qaeda Terrorists from Chechnya", *Terrorism Monitor*, Vol 2 (1):6-19.

Yilmaz, Selman (2006), *State, Politics, and Religion: Effects of Political and Social Change on the Relationship Between State and Religion in Turky*, Pittsburgh: University of Pittsburgh.

Zelkina, Anna (1996), "Islam and Society in Chechnia: From the Late Eighteenth to the Mid-Nineteenth Century", *Journal of Islamic Studies*, Vol 7 (2): 242-246.